ओ३म्

# प्रार्थना-प्रकाश

लेखक

परमहंस
स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली-६

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रकाशक :
**गोविन्दराम हासानन्द**
नई सड़क, दिल्ली-११०००६

© गोविन्दराम हासानन्द

द्वितीय संस्करण, १९८०

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई

मूल्य : ४.००

मुद्रक :
**अजय प्रिंटर्स**
नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

CamScanner से स्कैन किया गया

# भूमिका

महर्षि दयानन्द ने यज्ञ से पूर्व स्तुति-प्रार्थना-उपासना के आठ मन्त्रों का संकलन किया है। ये मन्त्र दैनिक जीवन में अत्यन्त उपयोगी हैं। इनके भाव अति सुन्दर और मानव-जीवन को उन्नति की ओर ले जानेवाले हैं। इन मन्त्रों की विभिन्न विद्वानों द्वारा कई व्याख्याएँ निकलीं, परन्तु उन में महर्षि दयानन्द के अर्थों की झलक कम थी। मैंने सन् १९५९ में 'वेद-सप्ताह' के अवसर पर इन मन्त्रों की व्याख्या की। व्याख्या से पूर्व मैंने इन्हें लिख भी लिया था परन्तु यह ग्रन्थ शीघ्र प्रकाशित न हो सका। पिछले दिनों इन मन्त्रों की व्याख्या क्रमशः 'वेद प्रकाश' में प्रकाशित की गई। पाठकों ने उसे बहुत पसन्द किया, अतः इसे पुस्तकाकार प्रकाशित किया जा रहा है।

इस पुस्तक के लेखन में हमने इससे पूर्व प्रकाशित अनेक पुस्तकों का अवलोकन किया है और जहाँ कहीं से कोई उत्तम वस्तु मिली उसका समावेश भी इसमें कर दिया है। यदि पाठकों को यह रुचिकर प्रतीत हुई तो हमारा विचार स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, प्रातःकालीन और सायंकालीन मन्त्रों की भी इसी प्रकार की व्याख्या देने का है।

जगदीश्वरानन्द

CamScanner से स्कैन किया गया

# स्तुति, प्रार्थना और उपासना

'स्तुति' का अर्थ है गुण-कथन। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'स्तुति' की परिभाषा इस प्रकार की है—

"जो ईश्वर वा किसी दूसरे पदार्थ के गुण-ज्ञान कथन, श्रवण और सत्यभाषण करना है वह स्तुति कहाती है।"

—आर्योद्देश्यरत्नमाला

स्तुति से प्रभु के गुण, कर्म, स्वभाव ज्ञात होकर प्रभु में सच्चे प्रेम और प्रीति का भाव उत्पन्न हो जाता है। "स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण, कर्म, स्वभाव का सुधारना"—स्तुति का फल है। स्तुति का दूसरा नाम 'नाम-स्मरण' भी है। इस विषय में ऋषिवर लिखते हैं—

"जैसे ब्रह्म सबसे बड़ा, परमेश्वर ईश्वरों-का-ईश्वर, ईश्वर सामर्थ्ययुक्त, न्यायकारी कभी अन्याय नहीं करता, दयालु सब पर कृपादृष्टि रखता, सर्वशक्तिमान् अपने सामर्थ्य से ही सब जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करता, सहाय किसी का नहीं लेता, ब्रह्मा विविध जगत् के पदार्थों का बनानेहारा, विष्णु सब में व्यापक होकर रक्षा करता, महादेव सब देवों-का-देव, रुद्र प्रलय करनेहारा आदि नाम के अर्थों को अपने में धारण करे अर्थात् बड़े कामों से बड़ा हो, समर्थों में समर्थ हो, सामर्थ्यों को बढ़ाता जाए, अधर्म कभी न करे, सब पर दया रक्खे, सब प्रकार के साधनों को समर्थ करे, शिल्पविद्या से नाना प्रकार के पदार्थों को बनावे, सब संसार में अपने आत्मा के तुल्य दुःख-सुख समझे, सब की रक्षा करे, विद्वानों में विद्वान् होवे, दुष्टकर्म और दुष्टकर्म करनेवालों को प्रयत्न से दण्ड और सज्जनों की रक्षा करे, इस

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रकार परमेश्वर के नामों का अर्थ जानकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव (के अनुकूल अपने गुण-कर्म-स्वभाव) को करते जाना ही परमेश्वर का नाम स्मरण है।"

—स० प्र०, एकादश समुल्लास

परमेश्वर के गुणों का चिन्तन करने से मन शुद्ध, पवित्र और निर्मल होकर मोम की भाँति नरम हो जाता है। भक्त प्रेम के आँसू बहाता हुआ अपनी दुर्बलताओं को जीतने के लिए तथा विघ्न-बाधाओं को परे हटाने के लिए ईश्वर की ओर प्रवृत्त होता है। अब उसके हृदय में प्रार्थना करने की इच्छा प्रकट होती है।

'प्रार्थना' क्या है ? महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रार्थना की परिभाषा इस प्रकार की है—

अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर वा किसी सामर्थ्यवाले मनुष्य के सहाय लेने को 'प्रार्थना' कहते हैं।

प्रार्थना वह कुञ्जी है जिसके द्वारा स्वर्ग=सुख-विशेष के द्वार खुल जाते हैं। प्रार्थना से जीवन में निरभिमानता आती है, उत्साह उत्पन्न होता है और सहायता की प्राप्ति होती है।

जिस बात के लिए प्रार्थना की जाए उसके लिए पूर्ण पुरुषार्थ करना चाहिए। हाथ-पर-हाथ रखकर निकम्मे और निठल्ले बैठने से कोई लाभ नहीं होता। निम्न उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाएगी।

एक बार दो लड़कों को स्कूल जाने में कुछ देर हो गई, स्कूल पर्याप्त दूर था तथा स्कूल पहुँचने का समय बहुत निकट आ गया था। ये दोनों लड़के प्रार्थना करने के अभ्यस्त थे और प्रार्थना पर बहुत विश्वास रखते थे। इनमें से एक ने कहा, "समय बहुत थोड़ा रह गया है, स्कूल दूर है, हम क्या करें कि समय पर स्कूल पहुँच जाए।" दूसरे ने उत्तर दिया कि, "हम और कुछ नहीं कर

CamScanner से स्कैन किया गया

सकते, आओ, हम दोनों बैठकर प्रार्थना करें कि स्कूल पहुँचने में देरी न हो।" पहले ने कहा, "यह ठीक नहीं, आओ, हम प्रार्थना भी करें और स्कूल की ओर दौड़ते भी जाएँ।" यह बात दोनों को पसन्द आई। दोनों ने पूरे वेग से स्कूल की ओर दौड़ना आरम्भ किया और साथ ही प्रार्थना भी करते रहे। परिणाम यह हुआ कि वे ठीक समय पर स्कूल पहुँच गये। यदि वे चलना छोड़कर प्रार्थना करने बैठ जाते तो यह ठीक नहीं था। अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त ही प्रार्थना करनी चाहिए।

प्रार्थना शुभ होनी चाहिए, अपने और दूसरे के कल्याण के लिए होनी चाहिए, ऐसी प्रार्थना कभी नहीं करनी चाहिए— "हे परमेश्वर ! आप मेरे शत्रुओं का नाश, मुझको सबसे बड़ा, मेरी ही प्रतिष्ठा और मेरे अधीन सब हो जाएँ···ऐसी मूर्खता की प्रार्थना करते-करते कोई ऐसी भी प्रार्थना करेगा हे परमेश्वर! आप हमको रोटी बनाकर खिलाइए, मेरे मकान में झाड़ू लगाइए, वस्त्र धो दीजिए और खेती-बाड़ी भी कीजिए। इस प्रकार जो परमेश्वर के भरोसे आलसी होकर बैठे रहते हैं वे महामूर्ख हैं, क्योंकि जो परमेश्वर के पुरुषार्थ करने की आज्ञा हैं उसको जो कोई तोड़ेगा वह सुख कभी नहीं पावेगा।

**—सत्यार्थप्रकाश, सप्तम समुल्लास**

प्रार्थना से मन के विकार दूर हो जाते हैं। शुभसंकल्प मन में इस प्रकार प्रविष्ट होने लगते हैं जिस प्रकार चुम्बक पत्थर में लोहा। प्रार्थना के पश्चात् साधक उपासना की ओर अग्रसर होता है।

'उपासना' का शब्दार्थ है उप=समीप, आसना=बैठना, उपस्थित होना, अर्थात् परमात्मा के निकट बैठना। उपासना से पूर्व तैयारी करनी होती है। ऋषि दयानन्द लिखते हैं जो उपासना करना चाहे, "वह किसी से वैर न रक्खे, सर्वदा सबसे प्रीति करे, सत्य बोले, मिथ्या कभी न बोले, चोरी न करे, सत्य व्यवहार

CamScanner से स्कैन किया गया

करे, जितेन्द्रिय हो, लम्पट न हो और निरभिमानी हो, अभिमान कभी न करे···राग द्वेष छोड़ भीतर और जलादि से बाहर पवित्र रहे। धर्म से पुरुषार्थ करने से लाभ में न प्रसन्नता और हानि में न अप्रसन्नता करे, प्रसन्न होकर, आलस्य छोड़ सदा पुरुषार्थ किया करे, सदा दुःख-सुखों का सहन और धर्म ही का अनुष्ठान करे अधर्म का नहीं। सर्वदा सत्यशास्त्रों को पढ़े, पढ़ावे, सत्पुरुषों का संग करे और 'ओम्' इस एक परमात्मा के नाम का अर्थ विचार कर नित्य प्रति जप किया करे···जब उपासना करना चाहे तब एकान्त, शुद्धदेश में जाकर, आसन लगा, प्राणायाम कर बाह्य-विषयों से इन्द्रियों को रोक, मन को नाभि प्रदेश में वा हृदय, कण्ठ, नेत्र, शिखा अथवा पीठ के मध्य हाड़ में किसी स्थान पर स्थिर कर अपने आत्मा और परमात्मा का विवेचन करके परमात्मा में मग्न हो जाने से संयमी होवें। जब इन साधनों को करता है तब उसका आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। नित्य-प्रति ज्ञान-विज्ञान बढ़ाकर मुक्ति तक पहुँच जाता है। जो आठ प्रहर में एक घड़ी भी इस प्रकार ध्यान करता है वह सदा उन्नति को प्राप्त होता जाता है।

**प्रार्थना का फल**—जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए। इससे···आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबरावेगा।

**सत्यार्थप्रकाश, सप्तम समुल्लास**

CamScanner से स्कैन किया गया

: १ :

# दुर्गुण-त्याग

**ओ३म् । विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।**
**यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ १ ॥**

—यजु० अ० ३० । मन्त्र ३

(देव) हे दिव्यगुणयुक्त सब सुखों के दाता परमेश्वर ! (सवितः) हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता समग्र ऐश्वर्ययुक्त ! आप कृपा करके हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को (परा+सुव) दूर कर दीजिए और (यत्) जो (भद्रम्) कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है (तत्) वह (नः) हमारे लिए (आ+सुव) प्राप्त कराइए ।

## देव-सवितः

परमात्मा के गुण, कर्म और स्वभाव अनन्त हैं, अतः उसके नाम भी अनन्त हैं । इस मन्त्र में ईश्वर के दो नाम आये हैं— देव और सवितः । इस मन्त्र में ये नाम विशेष अभिप्राय से रक्खे गये हैं । जब कोई व्यक्ति किसी के पास माँगने के लिए जाता है तब वह दो बातें सोचकर जाता है । एक तो यह कि मैं जिस व्यक्ति से जो वस्तु माँगने चला हूँ वह उसके पास है अथवा नहीं । उदाहरण के रूप में पंसारी की दुकान में जाकर कोई भी व्यक्ति जूते या चप्पल नहीं माँगता और न 'बाटा' की दुकान पर जाकर कोई व्यक्ति चूर्ण, चटनी अथवा औषध माँगता है । माँगने-वाला दूसरी बात यह सोचता है कि वस्तु तो दाता के पास है परन्तु माँगने पर वह मुझे देगा या नहीं । दृष्टान्त के रूप में कोई

भिखारी किसी करोड़पति के पास जाकर यह नहीं कहता कि मुझे दस लाख रुपये दे दो। यद्यपि सेठ के पास धन है परन्तु वह देगा नहीं, अतः भिखारी इतना माँगता भी नहीं। इसी प्रकार प्रभु से प्रार्थना करनेवाला भक्त भी इन दोनों बातों को ध्यान में रखता हुआ ही प्रार्थना करता है।

निरुक्त ७। १५। १ के अनुसार **'देवो दानाद्वा'** निरन्तर देनेवाले को देव कहते हैं। देव शब्द यह बतलाता है कि प्रभु के पास सब कुछ है, यह बात अलग है कि वह दे या न दे।

'सवितः' पद दूसरी बात पर प्रकाश डालता है कि प्रार्थना करने पर प्रभु देगा या नहीं। पहले तो भक्त माँगते हुए झिझकता है, क्योंकि—

**दुआ मैं क्या करूँ तुझसे दुआ से शर्म आती है।**
**कभी मैंने कहा तेरा किया हो तो कहूँ तुझ से॥**

परन्तु और कोई मार्ग न देख भक्त माँगने के लिए तैयार होता है और साथ ही वह सोचता है कि मैं परमेश्वर से इस प्रकार माँगूँ कि वह मना न कर सके। सोचते-सोचते उसे ध्यान आता है कि प्रभु से यह कहकर माँगूंगा कि "प्रभो! मैं बड़ा तपस्वी और ज्ञानवान् हूँ।" परन्तु दूसरे ही क्षण विचार आता है कि परमात्मा तो सर्वान्तिर्यामी है। वह तो घट-घट वासी है। वह सबको जानता है कि किसमें कितना तप और किसमें कितना ज्ञान है। फिर सोचता है, मैं यह कहकर प्रार्थना करूंगा कि "नाथ! मैं बड़ा विद्वान् और धर्मात्मा हूँ।" परन्तु फिर वही विचार आता है कि परमात्मा जानता है कि मैं कितना विद्वान् और धर्मात्मा हूँ। इस प्रकार भक्त को अपने जीवन में कोई भी गुण अथवा योग्यता दृष्टिगोचर नहीं होती। बहुत सोच-विचार के पश्चात् उसे प्रभु से माँगने के लिए अपने में एक गुण दिखाई देता है और उसी आधार पर वह प्रभु से कहता है कि भगवन्!

CamScanner से स्कैन किया गया

मुझ में चाहे और कोई गुण हो या न हो परन्तु एक नाते से तो मैं आप से माँग ही सकता हूँ और वह यह कि तुम मेरे पिता हो और मैं तुम्हारा पुत्र हूँ—

**त्वमस्माकं तव स्मसि ।** —ऋ० ८ । ९२ । ३२

भले हैं अथवा बुरे हैं तू हमारा है, हम तेरे हैं । क्या अयोग्य होने से कोई पुत्र नहीं रहता ? पिता से माँगने में किसी को संकोच नहीं होता, इसी अभिप्राय से मन्त्र में 'सवितः' पद आया है जिसका अर्थ है 'उत्पत्तिकर्ता पिता ।'

## विश्वानि दुरितानि परासुव

मन्त्र के इन शब्दों द्वारा भक्त भगवान् से प्रार्थना करता है—"देव ! मेरे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए ।" यहाँ यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या इस प्रकार प्रार्थना करने मात्र से हमारी बुराइयाँ दूर हो जाएंगी । यदि यह कहा जाए कि प्रार्थना से दुर्गुण और दुर्व्यसन दूर हो जाते हैं तो यह ठीक नहीं, क्योंकि अनेक व्यक्ति दिन-रात प्रार्थना किया करते हैं परन्तु उनके दुर्गुण दूर नहीं होते । यदि प्रार्थना से बुराइयाँ दूर नहीं होतीं तो प्रार्थना करना व्यर्थ है ।

इस शंका के समाधान के लिए हमें प्रार्थना के प्रकार पर ध्यान देना होगा । महर्षि दयानन्द ने 'आर्योद्देश्यरत्नमाला' में प्रार्थना की परिभाषा इस प्रकार की है—

"अपने पूर्ण सामर्थ्य के उपरान्त, उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर अथवा किसी सामर्थ्यवाले मनुष्य के सहाय लेने को प्रार्थना कहते हैं ।"

भक्त पूर्ण पुरुषार्थ के पश्चात् प्रार्थना का पात्र बनता है । वस्तुतः मनुष्य को अपनी बुराइयों को दूर करने के लिए स्वयं प्रयत्न और पुरुषार्थ करना चाहिए । जब मनुष्य पहाड़ों को लाँघ

CamScanner से स्कैन किया गया

सकता है, समुद्रों को चीर सकता है तो क्या अपनी बुराइयों को दूर नहीं कर सकता ? प्रभु से प्रार्थना करो परन्तु उससे पूर्व स्वयं भी पुरुषार्थ करो। जब आपके मन में कुभावनाएँ और बुरे विचार उठने लगें तो उन्हें ललकार कर कह दो—

**परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि ।**
**परेहि न त्वां कामये वृक्षान् वनानि संचर गृहेषु गोषु मे मनः ॥**

—अथर्व० ६।४५।१

ऐ मेरे मन के पाप ! दूर हट, परे भाग क्यों मुझे बुरी बातें सिखाता है। दूर हट, मैं तुझे नहीं चाहता। वृक्षों और वनों में जा। मेरा मन तो गृह और गौ के कार्यों में लगा हुआ है।

इस प्रकार अपनी पूर्ण शक्ति का सदुपयोग करके भी यदि अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिलती तब ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। बस यही प्रार्थना की वास्तविक स्थिति है और ऐसी स्थिति में की गई प्रार्थना अवश्य सफल होगी तथा भक्त पर प्रभु कृपाओं की वृष्टि होगी।

'दुरितानि' पद दुरित (बुराई) का बहुवचन है। इस मन्त्र में बुराइयों से छूटने की प्रार्थना की गई है। वे बुराइयाँ क्या हैं ? महर्षि मनु ने १८ बुराइयाँ गिनाई हैं। सभी दुर्गुण और दुर्व्यसनों का इनमें समावेश हो जाता है। वे अठारह दुर्गुण ये हैं—

**मृगयाऽक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः ।**
**तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः ॥**

—मनु० ७।४७

शिकार खेलना, जुआ खेलना, दिन में सोना, दूसरों के दोषों का वर्णन, स्त्रियों का सहवास, शराब का सेवन, नाचना, गाना, बजाना और व्यर्थ इधर-उधर घूमना—ये काम से उत्पन्न दस व्यसन हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

**पैशुन्यं साहसं द्रोह ईर्ष्यासूयार्थदूषणम् ।**
**वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः ।।**

—मनु० ७ । ४८

चुग़ली करना, बिना विचारे कर्म करना, बिना कारण वैर रखना, ईर्ष्या, दूसरे के गुणों में दोष लगाना, बुरे कार्यों में धन लगाना, कठोर वाणी बोलना, बिना विचारे पक्षपात से किसीको दण्ड देना—ये आठ क्रोध से उत्पन्न होनेवाले दोष हैं ।

मनुस्मृति में आगे चलकर इन व्यसनों की निन्दा इस प्रकार की गई है—

**व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते ।**
**व्यसन्यधोऽधो व्रजति स्वर्यात्यव्यसनी मृतः ।।**

—मनु० ७ । ५३

मृत्यु और व्यसन में व्यसन को ही विशेष कष्ट कहा है, क्योंकि व्यसनी बराबर नीचे-ही-नीचे गिरता है और अव्यसनी मरने पर स्वर्ग (सुख-विशेष) को प्राप्त होता है ।

पूर्ण उन्नति के लिए सब बुराइयों को छोड़ना होगा । यदि जीवन में एक भी बुराई शेष रही तो अन्य बुराइयों के आ जाने की आशंका है, क्योंकि एक दुर्गुण दूसरे दुर्गुण को जन्म देता है—

**लोभात् क्रोधः प्रभवति क्रोधाद् द्रोहः प्रवर्तते ।**
**द्रोहेण नरकं याति शास्त्रज्ञोऽपि विचक्षणः ।।**

लोभ से क्रोध उत्पन्न होता है और क्रोध से द्रोह का जन्म होता है । द्रोह करनेवाला शास्त्रज्ञ विद्वान् भी नरक (दुःख-विशेष) में गिरता है ।

यदि किसी पात्र में छिद्र हो जाए तो उसका सारा पानी निकल जाता है । इसी प्रकार किसी भी इन्द्रिय में दोष होने पर पतन का भय है । मनुजी ने कहा है—

CamScanner से स्कैन किया गया

**इन्द्रियाणां तु सर्वेषां यद्येकं क्षरतीन्द्रियम् ।**
**तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृतेः पात्रादिवोदकम् ।।**

—मनु० २ । ९९

सब इन्द्रियों में से यदि एक इन्द्रिय भी पथभ्रष्ट हो जाए तो उस से तत्त्वज्ञानी की बुद्धि ऐसे नष्ट हो जाती है जैसे मशक अथवा फूटे पात्र से पानी बूंद-बूंद करके टपक जाता है । इसलिए वेद में प्रार्थना की गई—

**यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे**
**तद्दधातु । शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ।।** —यजु० ३६।२

मेरी आँख का, मेरे हृदय का अथवा मेरे मन का जो बहुत बड़ा छिद्र है, सर्वरक्षक भगवन् ! मेरे उस छिद्र को पूर्ण कर दो । संसार के पालक और स्वामिन् ! हमारे लिए कल्याणकारी होओ ।

प्रत्येक व्यक्ति को एकान्त में बैठकर अपने दोषों का चिन्तन करके उन्हें हटाने का प्रयत्न करना चाहिए। परन्तु आज तो अवस्था यह है—

**दोष पराया देखकर चलत हसन्त हसन्त ।**
**अपना याद न आवई जाको आदि न अन्त ।।**

मनुष्य अपने दोषों को भूलकर किस प्रकार दूसरों के दोषों को देखता है इस विषय में श्री 'अज्ञेयजी' की कहानी 'सेब और देव' बहुत बोधप्रद है ।

एक प्रोफेसर थे जिनका नाम था गजानन्द । वे यूनिवर्सिटी के पुरातत्व विभाग में कार्य करते थे । एक बार अवकाश में वे कश्मीर घूमने गये । एक दिन प्रकृति के सौन्दर्य को देखते हुए वे काफी दूर निकल गये । मार्ग में उन्होंने सेबों का एक बाग़ देखा । वृक्ष सेबों से लदे हुए थे परन्तु वहाँ कोई माली नहीं था । प्रो० महोदय को पहाड़ियों की ईमानदारी पर बड़ा आश्चर्य और

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रसन्नता हुई। वे कुछ सोच ही रहे थे कि उन्होंने एक लड़के को एक सेब के वृक्ष से उतरते देखा। उसकी जेबों में टूटे हुए सेब थे। प्रो० महोदय को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने यह कहते हुए कि तुम्हीं लोग इन पहाड़ियों को बदनाम करते हो, उस लड़के के दो तमाँचे लगाये और सेबों को उद्यान की घास पर फेंक दिया। फिर वे कश्मीर के प्राचीन मन्दिरों को देखने के लिए आगे बढ़े। गाँववालों से पूछकर वे मन्दिर में पहुँचे। प्रो० महोदय जूते उतारकर अन्दर प्रविष्ट हुए। वहाँ उन्होंने देखा कि और सारी मूर्तियाँ तो लुढ़की पड़ी हैं तथा टूट-फूट गई हैं परन्तु एक मूर्ति ठीक है। प्रो० महोदय को मूर्ति बहुत ही सुन्दर लगी। उन्होंने सोचा कि इस स्थान पर तो यह मूर्ति व्यर्थ है। यह मन्दिर बन्द पड़ा रहता है, अतः इस मूर्ति को यहाँ से ले जाकर पुरातत्त्व विभाग में रखना चाहिए। प्रो० महोदय ने इधर-उधर देखा, और मूर्ति को अन्दर की जेब में रखा तथा ऊपर से ओवरकोट पहनकर जल्दी-जल्दी वहाँ से चले। मार्ग में फिर वही बाग आया। उन्होंने देखा कि उस लड़के ने पुनः सेब तोड़े हैं। उन्हें बड़ा क्रोध आया। उन्होंने लड़के की गर्दन पकड़ उसे आगे को खेंचकर धक्का दिया तो लड़के का सिर मूर्ति में लगा। लड़के के तो सिर में ही चोट लगी परन्तु प्रो० महोदय की छाती पर चोट लगने के साथ ही मन पर भी चोट लगी। वे सोचने लगे कि इस लड़के ने तो सेब की ही चोरी की परन्तु तू तो मन्दिर से तथा-कथित देव ही उठा लाया है। उन्हें अत्यन्त आत्मग्लानि हुई, क्योंकि—

**न थी अपनी बुराई पै जब कि नजर,**
**तो नजर में बुरा था हर इक बशर।**
**पड़ी अपनी बुराई पै जब से नजर,**
**तो नजर में कोई बुरा न रहा॥**

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रो० महोदय वापस लौटे और उस मूर्ति को मन्दिर में ही रख दिया।

दूसरों के दोष न देखकर अपने दोष देखो। सज्जन पुरुष अपने दोषों को देखता है परन्तु दुष्ट मनुष्य दूसरों के दुर्गुणों को देखता है। कहा है—

खलः सर्षपमात्राणि परछिद्राणि पश्यति।
आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति॥

दुष्ट व्यक्ति दूसरों के तो सरसों के बराबर दोषों को भी देखता है परन्तु अपने बेल (एक फल) के बराबर बड़े दोषों को देखता हुआ भी नहीं देखता।

महात्मा बुद्ध ने भी बहुत सुन्दर कहा है—

सुदर्शं वद्यमन्येषां आत्मनः पुनर्दुर्दशम्।
परेषां हि स वद्यानि अवपुणाति यथा तुषम्।
आत्मनः पुनः छादयति कलिमिव कितवात् शठः॥

—धम्मपद १८।१८

दूसरों का दोष देखना सरल है परन्तु अपना दोष देखना कठिन है। मनुष्य दूसरों के दोषों को भुस की भाँति उड़ाता फिरता है परन्तु अपने दोषों को ऐसे ढाँपता है जैसे एक बेईमान जुआरी अपनी हार पर अपने पाशों को छिपाता है।

दूसरों के दोष देखने के स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बुराइयों, दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को दूर करते हुए प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए—

यथा वातश्च्यावयति भूम्या रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम्।
एवा मत् सर्वं दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तमपायति॥

—अथर्व० १०।१।१३

हे प्रभो! जिस प्रकार बहती हुई वायु भूमि पर से धूल को और आकाश में से बादलों को उड़ा ले जाती है उसी प्रकार



CamScanner से स्कैन किया गया

ज्ञान के द्वारा धकेली जाकर मेरी सब बुराइयाँ मुझसे दूर हो जाएँ।

## यत् भद्रं तत् नः आसुव

जो श्रेष्ठ है, भला है, कल्याणकारक है, उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है वह हमें प्राप्त कराइए। प्रार्थना का यह क्रम बड़ा ही युक्तियुक्त और वैज्ञानिक है। जब तक बुराइयाँ दूर नहीं होंगी तब तक भलाई आ ही नहीं सकती।

कहते हैं एक बार कालिदास महाराज भोज को कुछ समझा रहे थे। महाराज ने सुना तो सब कुछ परन्तु उनकी समझ में नहीं आया। दूसरे दिन कालिदास ने सिर घुटवा कर संन्यासी का वेश धारण किया और महाराज के महल पर ही अलख जगाया "भिक्षां देहि।" महाराज ने अपने नौकर को भिक्षा देने के लिए भेजा। नौकर भिक्षा डालने के लिए आया तो संन्यासी-जी ने भिक्षा का पात्र आगे कर दिया जिसमें मांस पड़ा हुआ था। नौकर ने कहा, "इस मांस को फेंक दो तभी मैं भिक्षा दूंगा।" संन्यासी ने कहा, "ऐसा नहीं हो सकता।" उन दोनों का वाद-विवाद सुनकर राजा भी वहाँ आ गया। फिर उन दोनों में इस प्रकार वार्तालाप हुआ—

**भिक्षो! मांसनिषेवणं प्रकुरुषे? किं तेन मद्यं विना?**
**मद्यञ्चापि तव प्रियम्? प्रियमहो वाराङ्गनाभिः सह॥**
**वेश्याप्यर्थरुचिः कुतस्तव धनम्? द्यूतेन चौर्येण वा।**
**चौर्यद्यूतपरिग्रहोऽपि भवतो? नष्टस्य काऽन्या गतिः॥**

राजा—भिक्षुक! आप मांस भी खाते हैं?

संन्यासी—हाँ, हाँ, परन्तु बिना शराब के उसमें क्या आनन्द?

राजा—छिः, छिः, तो आप शराब भी पीते हैं?

CamScanner से स्कैन किया गया

संन्यासी—क्यों नहीं ? परन्तु वेश्याओं के विना उसमें भी आनन्द नहीं आता।

राजा—परन्तु वेश्याएँ तो धन की भूखी होती हैं, आपके पास धन कहाँ ?

संन्यासी—अजी ! जुए या चोरी से मिल जाता है।

राजा—अरे बाप रे ! तो तुम जुआ खेलते हो और चोरी भी करते हो ?

संन्यासी—बच्चे ! जिसे नष्ट ही होना हो उसके लिए और मार्ग ही क्या है ?

महाराज समझ गये कि यह कालिदास है। उन्होंने कालिदास के चरण पकड़ लिये। जो बात पहले दिन महाराज की समझ में नहीं आई थी आज समझ में आ गई। बात है भी ठीक। जिसके पात्र में मांस जैसा पदार्थ पड़ा हो उसमें कोई खीर कैसे डाल सकता है ? यदि हमारे मनरूपी पात्र में भी दुरित, दुर्गुण, दोष और बुराइयाँ भरी हुई हैं तो उसमें भलाई आ नहीं सकती, अतः बुराइयों को दूर करने के पश्चात् भलाई की याचना उचित ही है।

जैसे मैले कपड़े पर रङ्ग नहीं चढ़ता, जैसे गीली लकड़ी को लाख प्रयत्न करने पर भी आग नहीं लगती उसी प्रकार दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और बुराइयों के दूर हुए बिना भलाई का रङ्ग चढ़ना कठिन है और आत्मानन्द की अग्नि प्रज्वलित होना असम्भव है।

'भद्रम्' यह एक वचन है। भक्त ने सारी बुराइयों को दूर करने की प्रार्थना की परन्तु सारी अच्छाइयाँ नहीं माँगीं, क्योंकि सारी भलाइयाँ तो केवल प्रभु में ही हो सकती हैं। भक्त को तो यह भी पता नहीं कि हमारे लिए बुरा क्या है और अच्छा क्या है, अतः वह तो प्रभु से ही प्रार्थना करता है—

CamScanner से स्कैन किया गया

**प्रभु आपकी मैं हूँ शरण निज चरण सेवक कीजिए।**
**मैं कुछ नहीं हूँ माँगता जो आप चाहें दीजिए॥**

अथवा वह इन शब्दों में पुकार उठता है—

**तुझ से माँगू मैं तुझ ही को कि सब कुछ मिल जाए।**
**सौ सवालों से फ़क़त इक सवाल अच्छा है॥**

'भद्र' तो एक ही है और वह है ईश्वर। अतः भक्त भगवान् से भगवान् को प्राप्त करने की प्रार्थना करता है। वेद के शब्दों में वह कहता है—

**सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा।**
**मर्य इव स्व ओक्ये॥** —ऋ० १।६१।१३

खाने योग्य उत्तम घासों में जैसे गौएँ प्रसन्न होती हैं, और मनुष्य जैसे अपने घर में प्रसन्न होता है उसी प्रकार हे शान्ति-दायक सोम! परमेश्वर! तू हमारे हृदय मन्दिरों में रम जा, प्रकाशित हो जा।

परन्तु ईश्वर हमारे हृदय मन्दिरों में कब प्रकाशित होगा? प्रभु उस समय प्रकाशित होगा जब हम अपने जीवनों से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार आदि दुर्गुणों को दूर कर अपने हृदय-मन्दिरों को शुद्ध और पवित्र बनाएँगे। जब तक हमारे हृदय शुद्ध नहीं होंगे तब तक ईश्वर-दर्शन भी असम्भव है। यदि ईश्वर हमारे हृदय-मन्दिर में आया भी तो हमारे हृदय-मन्दिर की गन्दगी देखकर लौट जाएगा। एक कवि ने इस स्थिति का बड़ा सुन्दर चित्रण किया है—

**आये वो और झाँककर ही लौटकर जाने लगे।**
**दामन पकड़ मैंने कहा क्यों लौटकर जाने लगे।**
**जोहती थी बाट कब से आपके शुभागमन की।**
**आओ प्रियतम! विराजो शोभा बढ़ाओ सदन की।**

CamScanner से स्कैन किया गया

दामन झटककर चल दिये और यूं कहते हुए।
बैठें कहाँ तेरे सदन में ग़ैर हैं बैठे हुए॥

उस ईश्वर के दर्शन के लिए अपने हृदय-मन्दिर को शुद्ध करना होगा।

एक बार एक सेठजी अपने नगर के राजा के यहाँ गये और उन्हें अपने घर पर भोजन करने का निमन्त्रण दिया। राजा ने स्वीकार कर लिया। सेठ अपने घर आया और अपने भवन को ठीक कराना आरम्भ कर दिया, जहाँ से ऊँचा-नीचा था वहाँ से उसे बराबर करा दिया। मकड़ी के जालों को साफ करा दिया। जहाँ मकान टूट रहा था वहाँ उसकी मरम्मत कराई। फिर सारे मकान पर सफेदी कराई। तत्पश्चात् अनेक प्रकार के बेल-बूटों से उसे सजाया। जब एक सेठ एक लौकिक राजा के बुलाने के लिए इतनी शुद्धि करता है तब जो राजाओं के राजा महा-राजाधिराज, ब्रह्माण्डपति परमेश्वर को बुलाना चाहते है उन्हें तो अपने हृदय-मन्दिर को और भी अधिक शुद्ध और पवित्र बनाना होगा। महर्षि वेदव्यास कहते हैं—

यदाऽसौ सर्वभूतानां न द्रुह्यति न कांक्षति।
कर्मणा मनसा वाचा ब्रह्म सम्पद्यते तदा॥

—महा० शान्ति० २१।५

जब मनुष्य किसी भी प्राणी के साथ मन, वचन और कर्म से द्वेष नहीं करता तब ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

बाइबल में भी एक सुन्दर बात कही है—

Blessed are the pure in heart for they shall see God.

—St. Matthew 5/8

CamScanner से स्कैन किया गया

जिनके हृदय शुद्ध और पवित्र हैं वे सौभाग्यशाली हैं क्योंकि वे ही ईश्वर के दर्शन कर सकते हैं।

हृदय पवित्र तभी होगा जब हम बुराइयों को दूर करेंगे। आओ, हम अपने दुर्गुणों को दूर करते हुए प्रभु से प्रार्थना करें कि हे देव! हमारे दुर्गुणों को दूरकर जो भद्र एवं कल्याणकारक है वह हमें प्राप्त कराइए।

CamScanner से स्कैन किया गया

# प्रभु की झाँकी

**हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।**
**स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥**

—यजु० अ० १३। मं० ४

(हिरण्यगर्भः) वह स्वप्रकाशस्वरूप और सूर्यादि प्रकाशमान पदार्थों का धारक (अग्रे) सृष्टि रचना से पूर्व (सम्+अवर्त्तत) वर्तमान था। वह (भूतस्य) उत्पन्न हुए संसार का (जातः) प्रसिद्ध (एकः) एक और अद्वितीय (पतिः) स्वामी है। (सः) वह परमात्मा (इमाम्) इस पृथिवी को (उत) और (द्याम्) सूर्य आदि प्रकाशमय लोकों को (दाधार) धारण करता है। हम लोग उस (कस्मै) आनन्दस्वरूप (देवाय) परमात्मा के लिए (हविषा) योगाभ्यास और अति प्रेम से (विधेम) विशेष भक्ति किया करें।

## हिरण्यगर्भः

प्रभु क्या है? इसका उत्तर हम इन्हीं शब्दों में दे सकते हैं—

**हिरण्यमयो गर्भोऽस्य।** —निरुक्त १०।२३

हिरण्य-ही-हिरण्य है जिसके गर्भ में। विश्वब्रह्माण्ड में सूर्यादि जितने भी चमकीले पदार्थ हैं वे सब-के-सब प्रभु के गर्भ में हैं। परमेश्वर इस सारे ब्रह्माण्ड में किस प्रकार व्याप्त है इसकी कुछ झलक अथर्ववेद में है—

**यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम्।**
**दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥**

CamScanner से स्कैन किया गया

**यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः ।**
**अग्निं यश्चक्र आस्यं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ।।**
**यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरङ्गिरसोऽभवन् ।**
**दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ।।**

—अथर्व० १०।७।३२-३४

जिस जगदीश्वर ने भूमि को अपना पादस्थानी बनाया है, अन्तरिक्ष को उदर के समान तथा द्युलोक को सिर बनाया है, उस सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म को नमस्कार है।

सूर्य और बार-बार नवीनरूप में उत्पन्न होनेवाला चन्द्रमा जिसकी दो आँखों के समान हैं तथा जिसने अग्नि को अपने मुख के तुल्य बनाया है, उस ज्येष्ठ ब्रह्म को नमस्कार है।

वायु जिसके प्राण और अपानरूप हैं, तेजस्वी पदार्थ जिसकी आँखों के समान हैं और जिसने दिशाओं को प्रकृष्ट ज्ञान देनेवाली पताकाओं के समान बनाया है, उस परब्रह्म परमेश्वर के लिए नमस्कार है।

ईश्वर सर्वव्यापक है, अतः निराकार भी है। कुछ लोग यह प्रश्न किया करते हैं कि ईश्वर बिना हाथ-पैर आदि की सहायता के सृष्टि की रचना कैसे कर सकता है? 'हिरण्यगर्भः' पद इस शङ्का का समाधान करता है। यह समस्त ब्रह्माण्ड ईश्वर में है, ईश्वर सबमें रमा हुआ है—

**स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु ।।** —यजु० ३२।८

वह महादेव सब प्रजाओं में कपड़े में ताने और बाने के समान ओत-प्रोत है। एक अन्य स्थान पर भी कहा है—

**तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ।**

—यजु० ४०।५

वह परमात्मा सब के भीतर और बाहर विद्यमान है।

जो कार्य शरीर की सीमा से बाहर किये जाएँ उनके करने

CamScanner से स्कैन किया गया

में हाथ आदि का प्रयोग करना पड़ता है। पुस्तक हमारे बाहर की वस्तु है उसे उठाने के लिए हमें हाथ की आवश्यकता पड़ती है परन्तु यदि हमें अपना हाथ या पैर उठाना हो तो हम बिना हाथ की सहायता के उठा लेते हैं, क्योंकि हाथ या पैर उठाने की क्रिया शरीर के भीतर हो रही है। जिस प्रकार जीवात्मा को अपने भीतर क्रिया करने के लिए किसी हाथ-पैरादि की आवश्यकता नहीं उसी प्रकार ईश्वर को भी अपने गर्भ में स्थित विशाल ब्रह्माण्ड की रचना के लिए हाथ या पैरों की आवश्यकता नहीं।

इस बात को आप यूँ समझें कि जब एक कुम्हारी मिट्टी का खिलौना बनाती है तो उसे हाथ से मिट्टी आदि उठानी पड़ती हैं परन्तु उसके गर्भ में जो बच्चा बनता है उसे वह हाथ से नहीं बनाती वह तो बिना हाथों के ही बन जाता है। ठीक इसी प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड ईश्वर में स्थित है, अतः ईश्वर को इसके निर्माण के लिए हाथ-पैर आदि किसी बाह्य-इन्द्रिय की आवश्यकता नहीं नहीं पड़ती।

'हिरण्यगर्भः' पद यह भी बता रहा है कि सूर्य आदि चमकीले पदार्थ उस प्रभु में गर्भ के समान रहते हैं, अतः प्रभु स्वरूप में जीव और प्रकृति से अत्यन्त महान् है। परमेश्वर सचमुच महान् है। यजुर्वेद ३१।१ में कहा है—

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिँ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्॥

वह पुरुष=परमेश्वर सहस्रों सिरों से युक्त है। उसकी सहस्रों आँखें हैं और हजारों पैर हैं अर्थात् वह अनन्त शक्तियों से युक्त है। वह समस्त ब्रह्माण्ड को व्याप्त करके भी हृदय में विराजमान है। सचमुच कितना अद्भुत और महान् है वह!

CamScanner से स्कैन किया गया

## समवर्त्तताग्रे

'सम्+अवर्त्तत+अग्रे' ये पद बताते हैं कि काल की दृष्टि से भी वह प्रभु जीवों से बड़ा है। वह प्रभु अग्रे=हमारे शरीर धारण करने से पूर्व, सृष्टि के बनने से पहले भी विद्यमान था। सृष्टि के आदि से ही उसकी सत्ता है। वह कभी बना नहीं। वह अखण्ड और एकरस है तथा सदा से स्वयं चला आ रहा है। वेद के शब्दों में वह स्वयम्भू है और उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग करूँ तो वह खुद आया हुआ ख़ुदा है। जहाँ-जहाँ मनुष्य पहुँच सकता है वहाँ-वहाँ वह पहले से ही विद्यमान है। संसार में प्रकाश की गति सबसे अधिक है। प्रकाश की गति १,८६,००० मील प्रति सैकिण्ड है। परन्तु मन की गति इससे भी तीव्र है। सूर्य की किरणों को भूमि पर आने में आठ मिनट से अधिक समय लगता है परन्तु मन वहाँ सोचते ही पहुँच जाता है परन्तु परमात्मा तो प्रत्येक स्थान पर पहले से ही विद्यमान है, जैसा कि वेद में कहा है :—

**अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत् ॥**

—यजु० ४०।४

वह ईश्वर अचल, एकरस एवं अद्वितीय है। मन से भी वेगवान् है। इन्द्रियाँ उसे प्राप्त नहीं कर सकतीं, क्योंकि वह तो प्रत्येक स्थान पर पहले से ही विद्यमान है।

ईश्वर काल की दृष्टि से जीवों से बड़ा है, इसका एक और कारण भी है। महर्षि पतञ्जलि के शब्दों में—

**स एषः पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात् ।**

—यो० द० १।२६

वह प्रभु सृष्टि-आरम्भ के गुरुओं का भी गुरु है। सभी गुरु मृत्यु के मुख में प्रविष्ट हो जाते हैं परन्तु परमेश्वर कालातीत है। वह तो काल का भी काल है।

CamScanner से स्कैन किया गया

'समवर्त्तताग्रे' का एक भाव यह भी है कि वह परमात्मा अपने गुणों में सबसे अग्रणी है। सृष्टिरचना का ज्ञान केवल परमात्मा को ही है। यह सूर्य कैसे बना, इस चन्द्रमा की रचना कैसे हुई, इसमें काला धब्बा क्यों है ? ये ग्रह और नक्षत्र कैसे बने ? यह पृथिवी इस रूप में कैसे आई ? इन सब बातों का पूर्णज्ञान हम अल्पज्ञ जीवों को होना असम्भव है।

## भूतस्य जातः

मन्त्र के 'भूतस्य जातः' पद यह प्रकट करते हैं कि ईश्वर कार्य-कारण की दृष्टि से भी जीवों से बड़ा है। कभी न बनने तथा सदा इसी प्रकार एकरस, अखण्ड और निर्विकार रहने के कारण ईश्वर 'जातः' है। 'जातः' का एक अर्थ विकसित होना भी है। वह परमात्मा अधिक-से-अधिक विकसित है। प्रत्येक गुण की उसमें चरम सीमा है। कोई और उससे अधिक उत्कृष्ट न है और न हो सकता है। उस सर्वोत्कृष्ट परमेश्वर ने प्राणिमात्र के हित के लिए प्रकृति की सहायता से सम्पूर्ण लोकलोकान्तरों का निर्माण किया है। किसी उर्दू के कवि ने कहा है—

**लगाकर पेड़ फूलों के किये तक़सीम गुलशन में।**
**जमाया चाँद सूरज को सजाये क्या सितारे हैं॥**

उसी परमेश्वर ने सृष्टि में सब जीवों को उनके कर्मानुसार अधिक-से-अधिक हितकर और उपयुक्त शरीर प्रदान किये हैं। हमें उत्पन्न करने के कारण वह हमारा पिता और हम उसके पुत्र हैं। हमें यह शरीर प्रभु की कृपा से ही प्राप्त हुआ है, अतः ईश्वर में कारणकृत बड़प्पन भी विद्यमान है।

## पतिरेक आसीत्

जगत् का स्वामी होने के कारण प्रभु में अधिकारकृत बड़प्पन का भाव 'पतिरेक आसीत्' शब्दों द्वारा प्रकट हो रहा है। यह

CamScanner से स्कैन किया गया

ग्रखिल ब्रह्माण्ड उस प्रभु के शासन एवं नियम में चल रहा है। उसकी इच्छा के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। इसी बात को स्पष्ट करते हुए उपनिषद् ने कहा—

भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यः।
भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः॥

—कठ० ६।३

प्रभु के नियम ग्रटल हैं, उसका शासन प्रबल है। ईश्वर के भय=नियम से ग्रग्नि जलती है, उसके नियम से सूर्योदय होता है, उसी की इच्छा से वृष्टि होती है, वायु गति करती है ग्रौर मृत्यु दौड़ती है।

पति का ग्रर्थ होता है पालक एवं रक्षक। वह प्रभु समस्त संसार का पालन, पोषण ग्रौर रक्षण करता है। वह सब को देखता है, सब की सुनता है—

किसी स्थान पर एक ग्रफसर था। वह ग्रत्यन्त क्रूर था। वह फ़क़ीरों को कष्ट देकर तथा उन्हें तंग करके जलाने की लड़कियाँ लिया करता था ग्रौर उन्हें ग्रच्छे मूल्य पर मालदारों के हाथ बेच दिया करता था। एक बार एक फ़क़ीर ने उससे कहा, "क्या तू साँप है कि जिसको पाता है उसी को डसता है, ग्रथवा उल्लू है कि जहाँ बैठता है उसी स्थान को उजाड़ बनाना चाहता है! ग्रो निर्दयी! तेरी शक्ति हम जैसों पर ही चलती है परन्तु स्मरण रख प्रभु पर तेरा ज़ोर नहीं चलेगा। हम लोगों को न सता नहीं तो हमारी ग्राह प्रभु तक पहुँचेगी ग्रौर उसका फल तुझे भोगना पड़ेगा।" ग्रफसर पर साधु के उपदेश का कोई प्रभाव नहीं हुग्रा ग्रौर उसने फ़क़ीर की शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया। एक दिन उसकी रसोई की ग्रग्नि लकड़ियों के टाल में जा लगी ग्रौर उसकी सारी सम्पत्ति को जलाकर उसे दर-दर का भिखारी बना दिया। ग्रकस्मात् वही फ़क़ीर उधर ग्रा

CamScanner से स्कैन किया गया

निकला। उसने सुना, अफसर अपने मित्र से कह रहा था "पता नहीं यह अग्नि कहाँ से मेरे मकान में आ गिरी।" यह सुन उस फ़क़ीर ने कहा, "मैंने तो तुझसे पहले ही कहा था—

**अरे ज़ालिम ग़रीब को मत सता ग़रीब रो देगा।**
**सुनेगा उसका मालिक तो दोनों जहाँ से खो देगा॥**

फ़क़ीर ने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा, "ओ मूर्ख! यह अग्नि फ़क़ीरों की आहों से लगी है।"

एक और दृष्टान्त सुनिए। एक भिखारी प्रातःकाल किसी घर पर माँगने के लिए पहुँचा और कहा, "माता! भूखा हूँ कुछ खाने को दे दो।" घर की मालकिन ऊपर बैठी हुई थी। भिखारी की आवाज सुनकर उसे बड़ा क्रोध आया और कहने लगी—"कम्बख्त प्रातःकाल आकर मत्थे लगा है।" भिखारी ने कहा, "माता! कई दिन से भूखा हूँ कुछ रूखा-सूखा दे दो।" बस मालकिन का क्रोध पूरे १०४ डिगरी पर पहुँच गया, बोली—"ले तेरे को दूँ।" भिखारी ने प्रसन्न होकर हाथ फैलाया तो स्त्री ने थूक दिया और कहा—"अब तो ठीक है।" भिखारी ने बड़ी दीनता से कहा,—"माता! आपको नहीं देना था तो न देतीं परन्तु यह कार्य तो आपने अच्छा नहीं किया।" स्त्री का पारा और गर्म हुआ। वह पास बैठे अपने पति से बोली, "यह मूर्ख मेरा सिर खा रहा है और तुम बैठे हुए सुन रहे हो परन्तु कान पर जूँ तक नहीं रेंगती।" पति था कामी और मूर्ख। पत्नी के शब्द सुनते ही क्रोध में भरा हुआ नीचे आया और भिखारी को दो-चार थप्पड़ लगा दिये। ऊपर बैठी पत्नी हँसने लगी और कहने लगी, "बहुत भगवान्-भगवान् की रट लगा रक्खी थी, अब कहाँ है तेरा भगवान्।" पत्नी को प्रसन्न देख पति भिखारी को खरी-खोटी सुनाता हुआ छत पर चढ़ा। एक तो धन का मद, दूसरे शक्ति का गर्व, तीसरे भिखारी पर विजय का नशा—नशे में

CamScanner से स्कैन किया गया

चूर जब वह ऊपर की सीढ़ी पर पहुँचा तो लुढ़कता हुआ नीचे आ गिरा। सिर में भयंकर चोट आई और टाँग टूट गई। पत्नी ने आवाज सुनी तो दौड़कर नीचे आई। अब उसे भी भगवान् की याद आई। मन में सोचने लगी, 'यह फ़क़ीर की आह है।' अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए भिखारी ने जो कुछ कहा उसका चित्र एक पंजाबी कवि ने यूँ खींचा है—

अन्न मंगिया सी बूहे आन तेरे।
तुसी थुकिया-सी ए वी इनायत कीती॥
जदूँ कहया सी थुकना नहीं चङ्गा।
तुसी अपने खसम नूं शिकायत कीती॥
तेरी मेरी बहस दे विच आके।
तेरे खसम ने तेरी रियायत कीती॥
पर मैं वी नहीं सी खसम बाजू।
मेरे खसम ने मेरी हिमायत कीती॥

वस्तुतः प्रभु पति है, सबका पालन करता है, सबकी देखभाल करता है, सबको भोजन देता है, सबके लिए सुख-सुविधाएँ जुटाता है।

## स दाधार पृथिवीं द्याम् उत इमाम्

मन्त्र का यह भाग ईश्वर के योग्यताकृत बड़प्पन पर प्रकाश डालता है। प्रभु ऐसे ही इस संसार का स्वामी नहीं बन गया है, अपितु उसने सबको धारण किया हुआ है। पृथिवी को किसने धारण किया हुआ है, इस विषय में लोगों में कुछ भ्रान्त धाराणाएँ भी फैली हुई हैं। कुछ लोग कहते हैं कि यह पृथिवी बैल के सींग पर स्थित है। कुछ लोगों का विचार है कि पृथिवी सहस्र फण-वाले शेषनाग के सिर पर है। महर्षि दयानन्द के शब्दों में इनसे पूछना चाहिए कि, "सर्प और बैल के माँ-बाप के जन्म समय

CamScanner से स्कैन किया गया

किस पर थी तथा सर्प और बैल आदि किसपर हैं ? बैलवाले मुसलमान चुप हो कर जाएँगे परन्तु सर्पवाले कहेंगे कि सर्प कूर्म पर, कूर्म जल पर, जल अग्नि पर, अग्नि वायु पर और वायु आकाश में ठहरता है। उनसे पूछना चाहिए कि सब किस पर हैं ? तो अवश्य कहेंगे परमेश्वर पर। जब उनसे कोई पूछेगा कि शेष और बैल किसका बच्चा है, कहेंगे कश्यप कद्रू और बैल गाय का। कश्यप मरीची, मरीची मनु, मनु विराट् और विराट् ब्रह्मा का पुत्र, ब्रह्मा आदि सृष्टि का था। जब शेष का जन्म न हुआ था उसके पहले पाँच पीढ़ी हो चुकी हैं, तब किसने धारणा की थी अर्थात् कश्यप के जन्म समय में पृथिवी किस पर थी ? तो "तेरी चुप मेरी भी चुप।" और लड़ने लग जाएँगे। इसका अभिप्राय यह है कि जो "बाक़ी" रहता है उसको शेष कहते हैं, सो किसी कवि ने **"शेषाधारा पृथिवीत्युक्तम्"** ऐसा कहा कि शेष के आधार पृथिवी है। दूसरे ने उसके अभिप्राय को न समझ कर सर्प की मिथ्या कल्पना कर ली। परन्तु जिस लिए परमेश्वर उत्पत्ति और प्रलय से "बाक़ी" अर्थात् पृथक् रहता है, इसी से उसको "शेष" कहते हैं और उसी के आधार पृथिवी है।"

**सत्यार्थप्रकाश, अष्टम समुल्लास**

जैसे प्रत्येक वृक्ष का आधार उसका मूल होता है, उसी प्रकार समस्त संसार का आधार परमेश्वर है। उपनिषद् ने भी एक बहुत ही सुन्दर बात कही है—

**को ह्येवान्यात्कः प्राण्यात्। यदेष आकाश आनन्दो न स्यात्॥**

—तैत्तिरीयोपनिषद्, ब्रह्मवल्ली ७।६

यदि आकाशवत् व्यापक आनन्दस्वरूप परमात्मा न हो तो कौन गति कर सकता है और कौन प्राण धारण कर सकता है ?

परमेश्वर ही समस्त ब्रह्माण्ड का सञ्चालक है, वही सम्पूर्ण विश्वब्रह्माण्डों का आधार है। इस विषय में छान्दोग्योपनिषद्

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रथम प्रपाठक, खण्ड आठ-नौ में एक बड़ा ही सुन्दर और रोचक संवाद है। पाठकों की ज्ञानवृद्धि के लिए हम उसे यहाँ उद्धृत करते हैं—

प्रश्न—'का साम्नो गतिः' अर्थात् सामगान का आश्रय क्या है ?

उत्तर—'स्वरः' गान और वार्तालाप में जो अन्तर है वह स्वर के ही कारण है। गानविद्या स्वर पर आधारित है, सिंह की दहाड़, घोड़े की हिनहिनाहट, कोयल की कूक, पपीहा की पी-पी और कौवे की काँय-काँय—ये स्वर के ही कारण पहचाने जाते हैं।

प्रश्न—'स्वरस्य का गतिः' अर्थात् स्वर का आश्रय, आधार क्या है ?

उत्तर—'प्राणः।' एक मनुष्य दौड़ रहा हो अथवा पहाड़ पर चढ़ रहा हो तो उसका श्वास तीव्र गति से चलने लग जाएगा और ऐसी अवस्था में वह गा नहीं सकेगा, क्योंकि गान के लिए प्राण का सम होना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रश्न—'प्राणस्य का गतिः' अर्थात् प्राण का आश्रय क्या है ?

उत्तर—'अन्नम्।' अन्न, भोजन ही प्राण का आधार है। यदि मनुष्य को दस दिन अन्न न मिले तो अधमरा हो जाता है, न उठ सकता है, न बैठ सकता है, न चल फिर सकता है, न कोई कार्य कर सकता है। यहाँ तक कि बोलना भी कठिन हो जाता है। स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है, अतः यह सत्य ही है कि प्राण की गति अन्न है।

प्रश्न—'अन्नस्य का गतिः' अर्थात् अन्न का आधार क्या है ?

उत्तर—'आपः' अर्थात् जल। अन्न जल से उत्पन्न होता है। पानी न मिले तो पौधे मुरझा जाते हैं, खेती सूख जाती है और कुछ भी उत्पन्न नहीं होता। अकाल पड़ जाता है।

प्रश्न—'अपां का गतिः' जल का आश्रय क्या है ?

CamScanner से स्कैन किया गया

उत्तर—'असौ लोकः' अर्थात् यह सारा वायुमण्डल। समुद्र का पानी बाष्प बनकर वायु में मिलता है। बादल बनते हैं, वर्षा होती है। नदी-नालों में पानी आता है और पुनः समुद्र में पहुँच जाता है। फिर वही क्रम चलता है। यदि यह क्रम टूट जाए तो प्राणियों का जीवन ही असम्भव हो जाए।

प्रश्न—'अमुष्य लोकस्य का गतिः' इस वायुमण्डल का आश्रय क्या है?

उत्तर—'अयं लोकः' यह पृथिवी। वायुमण्डल का आश्रय है पृथिवी। वायुमण्डल पृथिवी की आकर्षणशक्ति से ठहरा हुआ है।

प्रश्न—'अस्य लोकस्य का गतिः' अर्थात् इस पृथिवीलोक का आधार क्या है?

उत्तर—'आकाशः' इस पृथिवीलोक का आधार है सबका प्रकाशक, सर्वत्र व्यापक परमेश्वर। यह पृथिवी और छोटे-बड़े नक्षत्र—इन सबका धारण और सञ्चालन ईश्वर से ही होता है।

इस सारे संवाद का निचोड़ यह है कि अखिल विश्वब्रह्माण्ड का आश्रय, आधार ईश्वर है। वही सबका प्राणदाता और सुख-दाता है।

परमेश्वर इस सारे संसार को किस प्रकार धारण कर रहा है, इसे स्पष्ट करते हुए वेद में कहा है—

**महद् यक्षं भुवनस्य मध्ये तपसि क्रान्तं सलिलस्य पृष्ठे।**
**तस्मिञ्छ्रयन्ते य उ के च देवा वृक्षस्य स्कन्धः परित इव शाखाः॥**

—अथर्व० १०।७।३८

इस सारे विश्व में एक बड़ी भारी शक्ति विराजमान है, जिसका ज्ञान अनन्त है, जो इस समस्त प्रकृति का अधिष्ठाता है। सूर्य-चन्द्रमा आदि सब दिव्य शक्तियाँ उसी शक्ति के आश्रित हैं जैसे वृक्ष के तने के आश्रित उसकी शाखाएँ होती हैं।



CamScanner से स्कैन किया गया

# कस्मै देवाय हविषा विधेम

प्रभु की व्यापकता, महानता एवं बड़प्पन को जानकर अब भक्त प्रभु की उपासना करना चाहता है। संसार का प्रत्येक मानव सुख, शान्ति, आनन्द और कल्याण चाहता है। ये परमात्मा की पूजा, आराधना और भक्ति से प्राप्त हो सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर आनन्दस्वरूप है।

भक्त प्रभु की पूजा करना चाहता है परन्तु सोचता है क्या भेंट धरूँ। मेरे पास अपना तो कुछ है ही नहीं। जो कुछ है वह तो प्रभु का दिया हुआ ही है। एक कवि के शब्द में वह पुकार उठता है—

**अजब हैरान हूँ भगवन्! तुम्हें क्योंकर रिझाऊँ मैं।**
**नहीं वस्तु कोई ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं॥**
**तुम्हीं हो मूर्ति में भी तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।**
**भला भगवान् को भगवान् पर कैसे चढ़ाऊँ मैं॥**
**लगाना भोग कुछ तुम को यह इक अपमान करना है।**
**खिलाता है जो सब जग को उसे कैसे खिलाऊँ मैं॥**
**तुम्हारी ज्योति से रोशन हैं सूरज चाँद और तारे।**
**महा अन्धेर है तुम को अगर दीपक दिखाऊँ मैं॥**

भक्त सोचता है भगवान् को कोई ऐसी वस्तु समर्पित करनी चाहिए जो अपनी हो। बहुत सोचने के पश्चात् उसे ध्यान आता है कि मेरी अपनी वस्तु है मेरे हृदय की श्रद्धा, अतः अपनी श्रद्धा की भेंट, अपने प्रेम का उपहार प्रभु को अर्पित करते हुए भक्त कहता है—प्रभो! श्रद्धा और प्रेम से, योगाभ्यास से हम आनन्दस्वरूप, दिव्यगुणयुक्त आपकी विशेष भक्ति किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।

CamScanner से स्कैन किया गया

# मृत्यु को तरने का उपाय

**य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।**
**यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।**

—यजु० अ० २५ । मं० १३

(यः) जो (आत्मदाः) आत्मज्ञान का दाता (बलदाः) शारीरिक आत्मिक एवं सामाजिक बल प्रदाता (यस्य) जिसकी (विश्वे) सब (उपासते) उपासना करते हैं, (देवाः) विद्वान् लोग (यस्य) जिसके (प्रशिषम्) उत्तम शासन और श्रेष्ठ शिक्षा को मानते हैं, (यस्य) जिसका (छाया) आश्रय (अमृतम्) मोक्ष-सुखदायक हैं, (यस्य) जिसका न मानना, भक्ति न करना (मृत्युः) मृत्यु आदि दुःख का कारण है, (कस्मै) उस आनन्दघन, (देवाय) दिव्य सुखदाता के लिए (हविषा) अपनी सकल उत्तम सामग्री से (विधेम) हम विशेष पूजा, भक्ति करें ।

### आत्मदाः

आत्मदा शब्द का अर्थ है आत्मा को देनेवाला । परन्तु आत्मा तो अनादि है । यह तो सदा विद्यमान रहता है, न यह कभी उत्पन्न होता है और न कभी इसका नाश होता है । आनन्दकन्द योगेश्वर कृष्णचन्द्र ने भी कहा है—

**न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।**
**अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।।**

—गीता० २ । २०

यह आत्मा न कभी जन्मता है, न मरता है । यह आत्मा

CamScanner से स्कैन किया गया

कभी होकर फिर कभी नहीं होगा ऐसा भी नहीं है। यह आत्मा तो अजन्मा, सदा रहनेवाला, स्थिर और अनादि है। शरीर के नष्ट होने पर भी इसका नाश नहीं होता।

आत्मा अजन्मा है, सनातन है, अतः महर्षि ने आत्मदा का अर्थ किया आत्मज्ञान का दाता। जीवात्मा यद्यपि चेतन है परन्तु अपने स्वरूप को भूला हुआ है। प्रभु जीव को नैमित्तिक ज्ञान प्रदान कर जीवात्मा को उसके स्वरूप का बोध कराता है, अतः प्रभु आत्मदा है।

आत्मदा का एक और भी अर्थ है, 'आत्मनं ददातीत्यात्मदाः।' प्रभु ने अपने आप को संसार के उपकार के लिए दिया हुआ है। ईश्वर अपने लिए कुछ नहीं करता वह तो आप्तकाम है। उसकी प्रत्येक क्रिया प्राणिहित के लिए है। वह जीवों के कल्याण के लिए सृष्टि की रचना करता है, उसकी पालना करता है और जीवों को विश्राम देने के लिए प्रलयरूपी रात्रि को लाता है। आत्मा को भोग के साधन शरीर, मन और इन्द्रियाँ प्रदान करता है, अतः वह प्रभु आत्मदा है।

## बलदाः

आत्मज्ञान का दाता होने के साथ-साथ परमात्मा बलप्रदाता भी है। वह जीव को बल प्राप्त कराता है, उसमें शक्ति का संचार कर उसे ऊपर उठने, आगे बढ़ने और उन्नति करने के योग्य बनाता है। बलदा शब्द सहायता के आदर्श की ओर भी संकेत करता है। एक विद्यार्थी को अपने हाथ से प्रश्न निकाल कर देने की अपेक्षा उसे वे नियम समझा देने अधिक उपयुक्त हैं जिनसे उसी प्रकार के अन्य प्रश्नों को वह स्वयं निकाल सके। परमात्मा भी शक्ति का विकास करने के लिए बल देता है।

ऋषि दयानन्द ने बलदा का अर्थ किया है 'शरीर, आत्मा

CamScanner से स्कैन किया गया

और समाज के बल का देनेहारा।' यह अर्थ अत्यन्त युक्तियुक्त है। कारण यह कि ये तीनों बल मिलकर ही वास्तविक बल कहलाते हैं। यदि तीनों में से किसी भी प्रकार के बल की न्यूनता है तो उस बल को पूर्ण नहीं कहा जा सकता। उदाहरण के रूप में एक मनुष्य शरीर से बड़ा हट्टा-कट्टा है। रबड़ी और मलाई खिला-खिलाकर उसने अपने शरीर को पुष्ट किया हुआ है परन्तु उसमें आत्मिक बल नहीं तो वह डरपोक और कायर होगा। इसी प्रकार किसी व्यक्ति में आत्मिक बल तो है परन्तु शारीरिक बल नहीं है तो ऐसे सैकड़ों व्यक्तियों को एक दुष्ट पुरुष कँपा सकता है। शारीरिक बल से हीन व्यक्ति विद्याध्ययन और योगाभ्यास आदि भी नहीं कर सकता। मनुष्य में शारीरिक और आत्मिक बल होते हुए भी सामाजिक बल के अभाव में वह कोई भी कार्य नहीं कर सकता। यदि इस प्रकार की राज्य-व्यवस्था बन जाए कि कोई भी व्यक्ति सन्ध्या और अग्निहोत्र नहीं कर सकता, धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय नहीं कर सकता तो शारीरिक और आत्मिक बल के होते हुए भी वास्तविक उन्नति नहीं हो सकती। निष्कर्ष यह कि तीनों बल मिलकर ही वस्तुतः बल की कोटि में आते हैं।

## यस्य विश्व उपासते

सारा विश्व उस प्रभु की उपासना, भक्ति करता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ईश्वर की पूजा करते थे। विश्वामित्रजी राक्षसों का वध करने के लिए श्रीराम और लक्ष्मणजी को लेकर जा रहे थे। सरयू नदी के किनारे प्रथम रात्रि सुखपूर्वक व्यतीत कर जब विश्वामित्रजी उठे तो श्रीराम को जगाते हुए कहते हैं—

**कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वा सन्ध्या प्रवर्तते।**
**उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम्॥**

—वा० रा० बा० २३।२

CamScanner से स्कैन किया गया

हे कौसल्यानन्दन राम ! प्रातः होने को है अब उठो और 'प्रातः कृत्य करो। तब—

**तस्यर्षेः परमोदारं वचः श्रुत्वा नृपात्मजौ।**
**स्नात्वा कृत्वोदकौ वीरौ जेपतुः परमं जपम् ।।**

—वही २३।३

उन परम-उदार महर्षि के वचन सुनकर दोनों राजकुमार उठे और स्नान आदि के पश्चात् परम-मन्त्र गायत्री का जाप करने लगे।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी श्रीराम-लक्ष्मण के सन्ध्या करने का समर्थन किया है—

**बिगत दिवस मुनि आयसु पाई।**
**सन्ध्या करन चले दोऊ भाई ।।** —रामचरितमानस

इसी प्रकार श्रीकृष्णजी भी प्रतिदिन ईश्वर की उपासना किया करते थे। जब श्रीकृष्ण पाण्डवों की ओर से सन्धि का प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर की ओर जा रहे थे और मार्ग में सूर्यास्त हो गया तब श्रीकृष्ण की सन्ध्या का वर्णन महर्षि व्यासजी ने इस प्रकार किया है—

**अवतीर्य रथात् तूर्णं कृत्वा शौचं यथाविधि।**
**रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश ह ।।**

—महा० उद्यो० ८४।२१

श्रीकृष्ण ने रथ से उतरकर सारथि को रथ खोलने की आज्ञा दी और विधिपूर्वक शौच और स्नान आदि करके सन्ध्योपासन करने लगे।

श्रीकृष्ण हस्तिनापुर पहुँच गये। कौरव सभा में जाने से पूर्व उनके सन्ध्या और यज्ञ करने का वर्णन अवलोकन कीजिए—

**कृतोदकानुजप्यः स हुताग्निः समलंकृतः।**

—महा० उद्यो० ९४।६

CamScanner से स्कैन किया गया

श्रीकृष्ण स्नान, जप श्रौर अग्निहोत्र कर तथा अलंकृत होकर कौरव सभा को चले।

जब सभी उसकी उपासना करते हैं तो भक्त! तू भी उसी की उपासना कर। संसार के प्रलोभनों में फँसकर ईश्वर को मत छोड़ो, उसे मत बेचो। वेदमाता के शब्दों में घोषणापूर्वक कहो—

**महेचन त्वामद्रिवः पराशुल्काय देयाम्।**
**न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ॥**

—ऋ० ८।१।५

हे परमपिता परमात्मन्! मैं तुझे बहुत बड़े शुल्क के लिए भी न छोड़ूँ। मैं सौ की तो बात ही क्या सहस्र श्रौर दस सहस्र किसी भी बड़ी-से-बड़ी राशि के बदले तेरा त्याग न करूँ।

सन्त रैदास ने भी एक सुन्दर बात कही है—

**हरि-सा हीरा छोड़के करे ग्रान की ग्रास।**
**ते नर जमपुर जाएँगे सत भाषे रैदास॥**

## प्रशिषं यस्य देवाः

विद्वान् लोग प्रभु के शासन में चलते हैं, उसके नियमों का पालन करते हैं। जिस प्रकार सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र ग्रादि जड़ देवता प्रभु के नियमों में चलते हैं उसी प्रकार विद्वान् लोग भी प्रभु की मर्यादाओं को तोड़कर नहीं चलते, प्रभु के नियमों का उल्लंघन नहीं करते; क्योंकि वे जानते हैं कि प्रभु के नियमों को तोड़कर वे सुख प्राप्त नहीं कर सकते। प्रभु की शिक्षाओं, आदेशों और नियमों का भण्डार हैं वेद, अतः विद्वान् लोग वेद की शिक्षाओं के आधार पर चलते हैं। वे तो—

**मन्त्रः श्रुत्यं चरामसि।** —ऋ० १०।१३४।७

CamScanner से स्कैन किया गया

मन्त्र के उपदेश के अनुसार आचरण करते हैं। वेद प्रतिपादित विधि और निषेध की आज्ञाओं को जीवन में धारण करते हैं।

## यस्य छायाऽमृतम्

जिस प्रभु की सब उपासना करते हैं हे भक्त! तू भी उसी का आश्रय ले, क्योंकि वह मोक्षसुख का दाता है। उसी को जानो। उपनिषद् ने कहा—

**तमेवैकं जानथ आत्मानमन्यो वाचो**
**विमुञ्चथ अमृतस्यैष सेतुः॥** —मुण्डक २।२।५

उस एक अन्तर्यामी प्रभु को जानो और बातों को, व्यर्थ की वाणियों को छोड़ दो। उस प्रभु को ही जानो, क्योंकि वह अमृत का सेतु—पुल है। बात है भी ठीक—

**बस परमातम ज्ञान है अमृत रस की खान।**
**और बात बक-बक वचन झक-झक मरना जान॥**

उस प्रभु को जानो। मानव देह पाकर भी उस प्रभु को न जाना तो हमारी मानवता किस काम की? किसी ने क्या सुन्दर कहा है—

**कीड़ा जरा-सा कि जो पत्थर में घर करे।**
**इन्सान वह क्या जो न दिले दिलबर में घर करे॥**

आओ, हम सब मिलकर उसकी उपासना करें, क्योंकि—

**जो नर प्रभु नाम लौ नाहीं।**
**सो नर खर कूकर शूकर सम वृथा जिएं जग माहीं॥**

यह मानव शरीर बड़ा दुर्लभ है। इसे प्राप्त करके प्रभु की शरण में जाओ। प्रभु की भक्ति बिना सुख नहीं। सन्त तुलसी-दासजी ने कहा है—

**बड़े भाग मानुष तन पावा।**
**सुर दुर्लभ सब ग्रन्थहिं गावा॥**

CamScanner से स्कैन किया गया

**नर तन पाय विषय मन देहीं ।**
**पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं ।।**
**भगति हीन गुण सब सुख ऐसे ।**
**लवण बिना बहु व्यंजन जैसे ।।**

किसी अन्य कवि ने भी बहुत सुन्दर कहा—

**वह मनुष किस काम का वह जिंदगी किस काम की ।**
**जिसने न लौ लगाई प्रभु के प्यारे नाम की ।।**

गुरु नानकदेवजी ने कहा है—

**अति कुलीन ग्यानी गुणी पंडित और धनवन्त ।**
**मृतक कहिए नानका जो प्रीति नहीं भगवन्त ।।**

हे संसार के लोगो ! यदि संसार-सागर से पार उतरना चाहते हो तो उस प्रभु की शरण में जाओ । उस प्रभु की शरण में जाने पर मनुष्य अमृत हो जाता है, उसे किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता । प्रभु की शरण में जाकर मनुष्य कैसे निर्भय हो जाता है, सुनिए—

कबीरदासजी घूमने जाया करते थे । एक दिन मार्ग में एक चक्की चलती देखी तो रोने लगे । रोते-रोते काफी देर हो गई । दैवयोग से उनका पुत्र भी उसी ओर आ निकला । पिता को रोते हुए देखकर उसने पूछा, "पिताजी ! क्या बात है ? आप रो क्यों रहे हैं ?" कबीरदास ने उत्तर दिया—

**चलती चक्की देख के दिया कबीरा रोय ।**
**दो पाटों के बीच में बाकी रहा न कोय ।।**

उनके पुत्र कमाल ने जब यह बात सुनी तो वह कबीरजी को उस चक्की के पास ले गया और उसमें ध्यान से देखने को कहा । कबीर ने देखा कि जो दाने मानी से दूर हो जाते हैं वे ही पिसते हैं परन्तु जो दाने मानी के पास रहते हैं वे सुरक्षित रहते हैं । यह दृश्य दिखाकर कमाल ने कहा—

CamScanner से स्कैन किया गया

**चलती चक्की देखके कमाल रहा ठठाय।**
**मानो पासे जो रहे वाकी पिसे बलाय॥**

सचमुच ईश्वर की छाया अमृत है। उसको न मानना, उसकी भक्ति न करना ही दुःख का हेतु है। जो सर्वश्रेष्ठ मानव देह पाकर भी प्रभु की भक्ति नहीं करता वह कृतघ्न भी है और कृतघ्न की क्या दशा होती है यह एक दृष्टान्त से समझिए—

एक दरिद्र ब्राह्मण अपनी भूख मिटाने के लिए जंगल में गया। वहाँ एक पक्षी ने उसे दुःखी देखकर उसकी अवस्था पूछी तो उसने धन की भूख बताई। पक्षी ने उसे कुछ फल आदि खिलाकर अपने एक दैत्य मित्र का पता बता दिया और कहा कि वहाँ जाकर मेरा नाम लेना तुझे बहुत-सा धन मिल जाएगा। ब्राह्मण ने वहाँ पहुँचकर सब हाल कह सुनाया। दैत्य ने उसे पर्याप्त धन देकर विदा किया। जब ब्राह्मण लौटकर उसी वन में आया तो मार्ग के भोजन के लिए उसी पक्षी को मारकर ले चला। जब दैत्य को ब्राह्मण के इस कुकृत्य का पता चला तो उसने उसे पकड़वा मँगवाया और अपने सेवक दैत्यों को आज्ञा दी कि इसे खा जाओ। दैत्यों ने कहा, "हम इस कृतघ्न को नहीं खाएँगे।" तब दैत्य ने उसे मरवा डाला और गीधों से कहा कि इसे खा जाओ। गीधों ने भी कहा कि हम इस कृतघ्न का मांस कदापि नहीं खाएँगे। तदनन्तर ब्रह्मादि ने वहाँ आकर और उस पक्षी को परोपकारी जानकर उसे जीवित कर दिया। तब पक्षी बोला, "महाराज! इस ब्राह्मण के बाल-बच्चे भूखे होंगे इसे भी जीवित कर दीजिए। इस प्रकार आग्रह करके पक्षी ने ब्राह्मण को भी जीवित करा दिया और धन दिलाकर विदा करा दिया। कुछ समय पश्चात् जब पक्षी मरा तो स्वर्ग में गया और कृतघ्नी ब्राह्मण मरकर नरक में गया।

कहानी के सत्यासत्य के विवाद में न पड़कर हमें इससे मिलनेवाली शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। यद्यपि कहानी पूर्ण रूपेण गप्प

CamScanner से स्कैन किया गया

है परन्तु तथ्य से भरपूर है। इस कथा से यह शिक्षा मिलती है कि जब एक पक्षी के साथ कृतघ्नता करने से यह गति होती है तो जो ईश्वर के साथ कृतघ्नता करते हैं पता नहीं उनकी क्या गति होती होगी ?

कुछ लोग समय की शिकायत करते हैं। प्रभु की उपासना के लिए उन्हें समय नहीं मिलता परन्तु समय की शिकायत व्यर्थ है। संसार के कार्य तो कभी समाप्त होंगे नहीं। सांसारिक कार्यों में रत रहते हुए ही प्रभु की उपासना करो। किसी कवि ने कहा है—

**आगे धन्धा पीछे धन्धा धन्धे ऊपर धन्धा।**
**धन्धे में जो प्रभु स्मर ले सो साहब का बन्दा॥**

नौजवान सोचते हैं अभी तो खेलने और खाने के दिन हैं जब बूढ़े होंगे तब भक्ति कर लेंगे परन्तु यह भयंकर भूल है। जब इन्द्रियों में शक्ति नहीं रहेगी तब कुछ भी नहीं हो सकेगा, अतः अभी से साधना आरम्भ कर दो। उर्दू के किसी कवि ने क्या खूब कहा है—

**जवानी में अदम के वास्ते सामान कर ग़ाफिल।**
**मुसाफ़िर शब से उठते हैं जो जाना दूर होता है॥**

आज से ही आरम्भ कर दो। देर मत करो। वेदमाता लोरी देते हुए कहती है—

**न नूनमस्ति नो श्वः कस्तद्वेद यद्भुतम्।**
**अन्यस्य चित्तमभि संचरेण्यमुताधीतं वि नश्यति॥**

—ऋ० १।१७०।१

सचमुच आज नहीं है, कल का भी ढंग दिखाई नहीं देता। हमपर पहले क्या बीती इसे कौन जानता है? चित्त अत्यन्त चंचल है। सोच-विचारकर विपरीत कर डालता है।

CamScanner से स्कैन किया गया

सदा स्मरण रखो—"अभी नहीं तो फिर कभी नहीं।' विघ्न और बाधाओं से घबराओ नहीं उन्हें पार करते हुए आगे बढ़ते चलो—

पत्थर हैं ऊँचे टीले हैं, प्रेमी बढ़ते जाते हैं।
पर्वत हो या नदी सामने धुन में चढ़ते जाते हैं॥

उस ईश्वर को ढूंढ़ने के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं अपितु—

ढूँढ़िए चित्त की गुफा में ध्यान का दीपक जगा।
रस सने की देर है फिर मूक मुँह हो जाएगा॥

प्रभु की शरण में जाओ, उसकी उपासना करो। भवसागर से तरने का, पार उतरने का बस यही एकमात्र मार्ग है, जैसा कि वेद ने घोषणापूर्वक कहा है—

**तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।**

—यजु० ३१।१८

उस प्रभु को जानकर लोग मृत्यु को लाँघ जाते हैं, पार कर जाते हैं, उसको जानने के अतिरिक्त मृत्यु से बचने का और कोई मार्ग नहीं है।

हे मानव! यदि तू मृत्यु से डरता है तो परमात्मा की शरण में जा। फिर मृत्यु भी अमृत बन जाएगी। उसकी शरण में जाने पर मृत्यु का भय रहेगा ही नहीं। प्रभुभक्त तो महर्षि दयानन्द की भाँति 'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की' यह कहते हुए मृत्यु का आलिङ्गन करेगा।

## यस्य मृत्युः

जिन्होंने प्रभु को अपनाया वे तर गये, भवसागर से पार उतर गये, मृत्यु उन से डर कर भाग गई। वे चिर-जीवन के

CamScanner से स्कैन किया गया

अधिकारी बन गये। परन्तु जो ईश्वर से विमुख रहते हैं उनकी अवस्था तो श्रीशङ्कराचार्यजी के शब्दों में ऐसी होती है—

**पुनरपि जननं पुनरपि मरणं, पुनरपि जननिजठरे शयनम्।**

वे बार-बार जन्म लेते हैं, बार-बार मरते हैं और बार-बार गर्भ की यातनाएँ सहते हैं। प्रभु के आश्रय के बिना सुख कहाँ?

**यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः।**
**तदा देवमविज्ञाय दुःखस्यान्तो भविष्यति॥**

—श्वेता० ६।२०

जब मनुष्य आकाश को सिर पर त्वचा की भाँति लपेटने में समर्थ हो जाएँगे तब ईश्वर को जाने बिना उनके दुःखों का अन्त होना सम्भव है। अर्थात् जैसे आकाश का शरीर पर लपेटना असम्भव है उसी प्रकार ईश्वर को जाने बिना सुख प्राप्ति असम्भव है। प्रभु से विमुख होकर मनुष्य स्वप्न में भी सुख नहीं पा सकता। गोस्वामी तुलसीदासजी ने ठीक ही कहा है—

**फूलहिं नभ बरु बहु विधि फूला।**
**जीव न लह सुख हरि प्रतिकूला॥**
**तृषा जाय बरु मृग जल पाना।**
**बरु जामहिं सस सीस विषाना॥**
**अन्धकार बरु रबिहि नसावे।**
**प्रभु विमुख न जीव सुख पावे॥**

अर्थात् चाहे आकाश में भाँति-भाँति के पुष्प विकसित हो जाएँ, चाहे मरुस्थल में रेत के कणों में दिखाई देनेवाले जल से प्यास बुझ जाए, चाहे खरगोश के सिर पर सींग उग आएँ और चाहे अन्धकार सूर्य को दूर भगा दे परन्तु प्रभु से विमुख व्यक्ति सुख नहीं पा सकता। जो लोग ईश्वर की भक्ति नहीं करते वे तो जीते जी ही मृतक के समान हैं—

CamScanner से स्कैन किया गया

जिन्ह प्रभु भक्ति हृदय नहि आनी।
जीवित सव सम तेहि ते प्रानी॥

प्रभु को भूलकर और विषयों में फँसकर मनुष्य नाना प्रकार के दुःख उठाता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

**क्या-क्या दुःख न सहे तुझसे ग़ाफ़िल होकर।**
**पाप क्या-क्या न किये विषयों में दाख़िल होकर॥**

प्रभु के प्रेम के बिना, उसकी आराधना और भक्ति के बिना यह जीवन व्यर्थ है। श्रीनानकदेवजी ने कहा है—

**देह नैन बिन रैन चन्द बिन नारी पुरुष बिना।**
**जैसे पण्डित वेद विहीना वैसे मन प्रभु नाम बिना॥**
**कूप नीर बिन, धेनु क्षीर बिन, मन्दिर दीप बिना।**
**जैसे तरुवर फूल विहीना, वैसे मन हरि नाम बिना॥**

इसी स्वर-में-स्वर मिलाकर उर्दू-भाषा के कवि ने भी ठीक ही कहा है—

**जो है इस संसार में भगवान् को भूला हुआ।**
**वह अगर सरदार आलम भी हुआ तो क्या हुआ॥**

यदि प्रभु से प्यार नहीं, उसके लिए अनुराग और तड़प नहीं तो जीवन के सारे ऐश्वर्य व्यर्थ हैं। सन्त तुलसीदासजी ने कहा है—

**झूमत द्वार मतङ्ग अनेक जंजीर भरे मद अम्बु चुचाते।**
**ताते तुरङ्ग मनो गति चंचल पौन के गौनहू ते बढ़ि जाते॥**
**भीतर चन्द्रमुखी अवलोकति, बाहर भूप खड़े न समाते।**
**ऐसे भये तो कहा तुलसी जो पै सच्चिदानन्द के रंग न राते॥**

अर्थात् द्वार पर अनेक हाथी झूमते हैं जिनसे मद चूता है। मन के वेग के समान चञ्चल और चपल घोड़े हैं। महलों में अनेक सुन्दर नारियाँ और दास तथा दासियाँ हैं एवं बाहर अनेक

CamScanner से स्कैन किया गया

राजा और महाराजा हाथ जोड़े खड़े हैं—यह सब कुछ होते हुए भी यदि हृदय में प्रभु के लिए प्रेम नहीं, प्रभु की भक्ति और आराधना नहीं, उसकी उपासना नहीं तो ये सब व्यर्थ हैं। हे मानव ! सावधान होकर सुन, ये हाथी और घोड़े, यह ऐश्वर्य और वैभव तुझे मृत्यु से बचा न सकेंगे।

## कस्मै देवाय हविषा विधेम

यदि तू मृत्यु से त्राण चाहता है, यदि मोक्ष की अभिलाषा है तो समर्पण कर दे, अपनी सकल उत्तम सामग्री को हवि बनाकर उसे त्याग दे, कह दे—

**मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।**
**तेरा तुझ को सौंपते क्या लागत है मोर ॥**

अपने सम्पूर्ण वैभव की, सभी विचारों और व्यवहारों की हवि चढ़ाकर पूर्ण समर्पण कर दे। इसी में कल्याण है, सुख, शान्ति और आनन्द है।

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई
सम्पर्क : ९०२९४२१७१८

CamScanner से स्कैन किया गया

# ईश्वर की सच्ची पूजा

**यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।**
**य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥**

—यजु० अ० २३ । मन्त्र ३

(यः) जो (प्राणतः) प्राणवाले, चेतन और (निमिषतः) अप्राणिरूप, जड़ (जगतः) जगत् का (महित्वा) अपनी अनन्त महिमा से (एक, इत्) अकेला ही (राजा) राजा (बभूव) था, है और आगे भी होगा, (यः) जो (अस्य) इस (द्विपदः) दो पैरवाले मनुष्यादि और (चतुष्पदः) चौपायों, गौ आदि पशुओं के शरीर की (ईशे) रचना करता है उस (कस्मै) आनन्दस्वरूप (देवाय) दिव्य-गुणयुक्त प्रभु के लिए (हविषा) पूर्ण सामर्थ्य से (विधेम) भक्ति करें अर्थात् उसी की आज्ञापालन में तत्पर रहें।

## यः प्राणतः निमिषतः जगतः

यह प्राणसहित और प्राणरहित, चर और अचर, जङ्गम और स्थावर जगत् प्रभु की महिमा का पता दे रहा है। प्रभु की अद्भुत, वैज्ञानिक कलाकौशल एवं कारीगरी को देखकर मनुष्य आश्चर्य-चकित रह जाता है। संसार की जनसंख्या लगभग तीन अरब है। सब मनुष्यों के हाथ-पाँव, आँख, नाक आदि एक जैसे होते हैं परन्तु उनमें एक ऐसा सूक्ष्म अन्तर होता है कि प्रत्येक व्यक्ति के मुखमण्डल की बनावट, उसका स्वर, उसकी चाल-ढाल, एक-दूसरे से भिन्न होती है। यही कारण है कि किसी भी व्यक्ति को लाखों मनुष्यों में पहचाना जा सकता है। किसी उर्दू के कवि ने

CamScanner से स्कैन किया गया

क्या सुन्दर कहा है—

**तेरी कुदरत ने दिखाई है अजब नीरंगी।**
**सब किये तू ने जुदा शकल में इन्साँ पैदा॥**

तनिक मनुष्य के मस्तिष्क को देखिए। छोटे-से डिब्बे में पाँच-दस नहीं सैकड़ों विद्याएँ समा जाती हैं। वेद, दर्शन, उपनिषद्, व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त, कल्प, शिक्षा, इतिहास, राजनीति, भूगोल, खगोल, गणित, विज्ञान, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र और न जाने कौन-कौनसी विद्याएँ इस छोटे-से मस्तिष्क में आ जाती हैं। एक व्यक्ति पचासों भाषाओं को सीखकर उन्हें अपने मस्तिष्क में धारण कर लेता है। अनेक डाक्टरों और वैद्यों ने इस मस्तिष्क को चीरा-फाड़ा परन्तु इसके रहस्य को न जान पाए।

मनुष्य के शरीर की रचना कैसी विचित्र और अद्भुत है इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' से एक उद्धरण देना अप्रासंगिक न होगा—

"देखो! शरीर में किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान् लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफड़ा, पंखाकला का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरोरूप मूलरचन, लोम, नख आदि का स्थापन, आँख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिए स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभागकरण, कला, कौशल-स्थापन आदि अद्भुत सृष्टि को बिना ईश्वर के कौन कर सकता है?"

**—सत्यार्थप्रकाश, अष्टम समुल्लास**

पशुओं को देखें तो वहाँ भी प्रभु की सुन्दर लीला दृष्टिगोचर होती है। हाथी के मस्तक के साथ लम्बी सूंड लगा दी जिससे वह नीचे और ऊपर दोनों स्थानों के पदार्थों को ले सकता है।



CamScanner से स्कैन किया गया

ऊँट भी तो ऊँचा प्राणी था उसे सूँड जैसी लम्बी गर्दन दे दी। गाय और भैंस को अपनी रक्षा के लिए सींग दिये तो घोड़े और गधे को दुलत्ती मारने की शक्ति प्रदान कर दी।

पक्षी जगत् में देखें तो हंस को श्वेत बनाया, तोते को हरा कर दिया और मोर को कैसे गोल-गोल पंख प्रदान किये हैं। मुर्गा के सिर पर मुकुट धारण कर दिया। सभी को दो पंख लगा दिये जिससे दोनों ओर अपने भार को तोलकर वे सरलता और सफलतापूर्वक उड़ सकें। यह सब ईश्वर की ही तो कला है।

अब तनिक जड़ जगत् का अवलोकन कीजिए। जड़ जगत् में सूर्य का निश्चित समय पर उदय और अस्त होना, चन्द्रमा का एक नियमित क्रम से घटना और बढ़ना, ऋतुओं का ठीक समय पर आना, ऋतुओं के अनुसार नाना प्रकार के फल-फूल, अन्न और वनस्पतियों का पकना, जल का ढलान की ओर ही बहना— ये सारी बातें ईश्वर की महिमा की ओर संकेत कर रही हैं। संसार का कोई भी व्यक्ति उसके नियमों में परिवर्तन नहीं कर सकता। ईश्वर की आज्ञा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। पत्ता तो दूर की बात है एक परमाणु भी गति नहीं कर सकता। मनुष्य में तो इतनी शक्ति भी नहीं कि एक मक्खी की टाँग तो बना दे। टांग बनाने की बात तो दूर रही उसमें तो यह भी सामर्थ्य नहीं कि अपने शरीर से एक बाल उखाड़कर फिर उसी स्थान पर चिपका दे। ब्रह्माण्ड के रचने की शक्ति केवल ईश्वर में है। वही सबका स्रष्टा और संहारक है अन्य कोई नहीं—

कोई है दूसरा जो खाक़ के पुतले में जी डाले।
यह क़ुदरत[1] भी किसी को है कि सब मख़लूक़[2] को पाले॥
कोई इन्साँ दो साअत[3] तो अपनी नब्ज ठहरा ले।
इनाने तोसने[4] उम्रे गुज़िश्ता[5] फिर तो पलटा ले॥

१. शक्ति, २. प्राणी, ३. घड़ी, ४. यौवना अवस्था, ५. बीती हुई।

**अदम[1] से ला नहीं सकता है इन्सां एक जर्रा भी।**
**बना सकता नहीं कोई बशर[2] छोटी सी चिड़िया भी ॥**

इस सारे चेतन और जड़ संसार का नियामक प्रभु ही है। एक बच्चे के पास एक गेंद है। वह उसे फेंकता है और फिर पकड़ लेता है अतः वह बच्चा उस गेंद का नियामक है। इसी प्रकार परमात्मा भी सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र आदि सभी ग्रहों और उपग्रहों का नियामक है। करोड़ों सौर मण्डल, ग्रह और नक्षत्र आकाश में चक्कर लगा रहे हैं यदि ये अपने मार्ग से तनिक-सा भी इधर-उधर हट जाएँ तो उसी समय प्रलय उपस्थित हो जाए परन्तु उस नियन्ता के नियन्त्रण में ये तनिक भी इधर-से-उधर नहीं होते। नास्तिक कह सकते हैं कि ये तो एक-दूसरे के आकर्षण से ठहरे हुए हैं। यदि 'वादीतोष-न्याय' वश ऐसा मान लिया जाए तो प्रश्न उत्पन्न होता है कि इनमें वह आकर्षण शक्ति आई कहाँ से ? निस्सन्देह परमात्मा से। माण्डूक्योपनिषद् के ऋषि ने ठीक ही कहा है—

**एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनिः सर्वस्य प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम्।** —माण्डू० ६

वह परमात्मा ही सब का अधिपति है, वह ही सर्वज्ञ और सर्वान्तर्यामी है। वह परमेश्वर ही सब चराचर सृष्टि की उत्पत्ति और लय का कारण है।

महर्षि व्यास लिखते हैं—

**जन्माद्यस्य यतः।** —वे० द० १।१।२

परमेश्वर स्रष्टा, पालक और संहर्ता है।

उर्दू के एक कवि ने भी कहा है—

**नसीम[3] मस्ताना चल रही है, चमन में फिर रुत[4] बदल रही है।**
**सदा[5] यह दिल से निकल रही है वही है ये गुल खिलाने वाला ॥**

---

१. परलोक, २. मनुष्य, ३. वायु, ४. ऋतु, ५. ध्वनि।

CamScanner से स्कैन किया गया

## महित्वा

यहाँ शंका उत्पन्न होती है कि अकेला ईश्वर इस समस्त ब्रह्माण्ड को कैसे नियम में रखता होगा ? इस शंका का समाधान करने के लिए मन्त्र में 'महित्वा' पद का प्रयोग हुआ है। परमात्मा की महिमा अनन्त है, वह सर्वद्रष्टा एवं सर्वव्यापक है और जीव तथा प्रकृति दोनों से अधिक योग्य है। अपनी इस योग्यता के कारण ही वह सब का शासन कर रहा है। वेद में कहा है—

**देवो देवान् परिभूर्ऋतेन।**

—ऋ० १०।१२।२

परमात्मा अन्य देवों को ऋत के कारण दबाकर रखता है। ऋत-पालन से देवत्व मिलता है। परमात्मा में ऋत-पालन चरम कोटि तक पहुँचा हुआ है, अतः वह सब देवों से बड़ा है। यही उसके महत्त्व का हेतु है।

'महित्वा' पद ईश्वर के अवतार धारण का भी खण्डन कर रहा है। जब लोग कहते हैं कि ईश्वर अवतार लेता है तो आश्चर्य होता है और जब लोग यह मान लेते हैं कि ईश्वर अवतार लेता है तो और भी अधिक आश्चर्य होता है। जब यह पूछा जाता है कि परमात्मा को अवतार लेने की क्या आवश्यकता पड़ी तो लोग कहते हैं कि रावण और कंस आदि दुराचारियों को मारने के लिए श्रीराम और श्रीकृष्ण आदि ने जन्म लिया। यदि 'दुर्जनतोष-न्यायवश इस बात को ठीक मान लिया जाए तब भी अवतारवाद की सिद्धि नहीं होती। कारण स्पष्ट है, किसी भी वस्तु का निर्माण बहुत कठिन होता है परन्तु उसका तोड़ना अति सरल होता है। जो ईश्वर बिना अवतार ग्रहण किये रावण और कंस आदि को बना सकता है उसे उन्हें मारने के लिए अवतार लेने की क्या आवश्यकता ? जो परमात्मा अवतार धारण करे वह संसार

CamScanner से स्कैन किया गया

का तो क्या अपने मन का भी स्वामी नहीं रहता तथा मनुष्य शरीर में आते ही उसकी महिमा भी समाप्त हो जाती है।

## एक इत राजा बभूव

इस अखिल ब्रह्माण्ड का वह परमात्मा एक ही स्वामी है। एकेश्वरवाद के समर्थन में अथर्ववेद में बहुत ही सुन्दर वर्णन आता है। वहाँ कहा है—

**न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।**
**न पञ्चमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते।**
**नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते।**
**तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव॥**

—अथर्व० १३।४।१६-१८, २०

परमात्मा एक ही है, उससे भिन्न न कोई दूसरा, न तीसरा और न चौथा परमेश्वर है। न पाँचवाँ, न छठा, न कोई सातवाँ ईश्वर है। न आठवाँ, न नवाँ, और न कोई दसवाँ ईश्वर है। ये सारे बल उसी के हैं अर्थात् बल से पूर्ण समस्त संसार उसी के आश्रित है। वह एक है, अद्वितीय है, और निश्चय ही वह एक ही है।

एकेश्वरवाद का प्रचार करते हुए कबीरजी ने भी कहा है—

**साहब मेरा एक है, दूजा कहा न जाय।**
**दूजा साहब जो कहूँ, साहब खरा रिसाय॥**

मि० डब्ल्यू० डी० ब्राउन (W. D. Brown) नामक पाश्चात्य विद्वान् ने भी बहुत ही सुन्दर कहा है—

It (Vedic Religion) recognises but one God.

—The Superiority of Vedic Religion.

अर्थात् वैदिक धर्म केवल एक ईश्वर का प्रतिपादन करता है।

CamScanner से स्कैन किया गया

ईश्वर समस्त संसार का शासक है, अतः हमें समस्त संसार को परमात्मा का समझना चाहिए। यदि यह भावना हमारे जीवनों में आ जाए तो फिर हम किसीके साथ धोखा नहीं कर सकते, किसी की हिंसा नहीं कर सकते, किसी को कष्ट और क्लेश नहीं दे सकते।

एक व्यक्ति था बालकराम। एक दिन वह लगान का दो सहस्र रुपया एकत्र कर घर आ रहा था। मार्ग में एक पठान मिला। बालकराम से बोला, "जो कुछ है यहाँ रख दे और मरने के लिए तैयार हो जा।"

बालकराम ने रुपयों की थैली पठान के आगे रख दी और दो मिनट का अवकाश माँगकर गायत्री-मन्त्र का जप किया। पठान ने बालकराम को मारने से पूर्व पूछा, "तुम्हारा कोई संदेश हो तो बता दो पहुँचा दूँगा।" बालकराम ने कहा, "दो संदेश हैं।" पठान ने पूछा, "किसको देने हैं?" बालकराम ने कहा, "एक तो मेरे भाई देशराज सिविल सर्जन को देना है।" देशराज का नाम सुनते ही पठान ने बन्दूक फेंक दी और कहने लगा, "आज बहुत बड़े पाप से बच गया। आपके भाई ने चिकित्सा करके मेरा हाथ ठीक किया था। इन हाथों से उसके भाई को कैसे मार सकता हूँ?" यह है मनुष्य के प्रति कृतज्ञता। इसी प्रकार यदि हम सोचें कि यह सारा संसार परमात्मा का है, वही सब का राजा है। उसने ही यह सब कुछ हमें दिया हुआ है तो हमारा अज्ञान अन्धकार, ईर्ष्या-द्वेष, वैमनस्य आदि दूर होकर संसार में प्रेम की गंगा बहने लगे। पाप, ताप और राग-द्वेष दूर होकर जीवन शुद्ध, पवित्र और निर्मल बन जाए।

**यः ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः**

**स्वतन्त्रः कर्ता** (अष्टा० १।४।५४) मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र

CamScanner से स्कैन किया गया

है परन्तु जब मनुष्य अपनी स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करता है तब परमात्मा उसकी स्वतन्त्रता को छीन लेता है। जो मनुष्य बुद्धि और ज्ञानपूर्वक कर्म नहीं करता ईश्वर उसे पशु-जगत् में भेज देता है। यदिमनुष्य बहुत ही बुरे कर्म करता है, पुण्य की अपेक्षा पाप बहुत अधिक होते हैं तो उसे वृक्ष आदि की योनि में भेज देता है। इस प्रकार यह चक्र चलता है। मनुष्य वृक्ष के समान है। गीता के शब्दों में—

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थम्। —गीता १५।१

मनुष्यरूपी वृक्ष ऊर्ध्वमूलवाला है। मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियाँ ऊपर हैं और शाखाएँ नीचे की ओर हैं। इसे अश्वत्थ कहते हैं, क्योंकि यह आज है और कल नहीं रहेगा।

मनुष्य और वृक्षों के मध्य में एक और योनि है जिसे पशु योनि कहते हैं। मनुष्ययोनि सर्वश्रेष्ठ है। वृक्षयोनि अति निकृष्ट है। इन दोनों के मध्य में है पशुयोनि। मनुष्य का मूल (जड़) ऊपर की ओर है और वृक्षों की जड़ नीचे की ओर। पशुओं की न नीचे की ओर न ऊपर की ओर अपितु बिल्कुल मध्य में है। यदि मनुष्य उत्तम कर्म न करे तो ईश्वर बराबर कर देता है—पशुयोनि में भेज देता है। यदि वह बहुत ही हीन और निकृष्ट कर्म करता है तो प्रभु उसका मुख नीचे की ओर कर देता है, उसे वृक्ष योनि में भेज देता है।

ये सारी योनियाँ भी मानव कल्याण के लिए हैं। इन योनियों में ले जाकर ईश्वर जीवात्माओं को किसी वस्तु के भुलाने का प्रयत्न करता है। मनुष्यों को पशु और वृक्ष योनियों में डालकर वह परमात्मा उनकी बुराइयों को भुलाकर उन्हें सन्मार्ग पर लाना चाहता है। वास्तव में ये योनियाँ जीवात्मा के कर्मों की शुद्धि के लिए रची गई हैं।

मनुष्य किसी भी योनि में चला जाए वह ईश्वर के शासन

CamScanner से स्कैन किया गया

से बाहर नहीं जा सकता, अतः जब उसे ईश्वर के शासन में रहना ही है तो—

## कस्मै देवाय हविषा विधेम

उस आनन्दस्वरूप प्रभु की अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य से भक्ति अर्थात् उसकी आज्ञाओं का पालन कर। ईश्वर की भक्ति क्या है? उसकी आज्ञाओं का पालन करना। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर की स्तुति के सम्बन्ध में लिखा है—

"जैसे वह न्यायकारी है तो आप भी न्यायकारी होवे और जो केवल भांड के समान परमेश्वर के गुण-कीर्तन करता जाता और अपने चरित्र नहीं सुधारता उसका स्तुति करना व्यर्थ है।"

—सत्यार्थप्रकाश, सप्तम समुल्लास

ईश्वर की सच्ची भक्ति है उसके गुणों को जीवन में धारण करना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना। इस विषय को स्पष्ट करने के लिए एक दृष्टान्त प्रस्तुत है—

एक सेठजी थे, जिनका नाम था मोतीलाल। सेठजी के दो पत्नियाँ थीं, एक बड़ी दूसरी छोटी। छोटी पत्नी ने सोचा कि बड़ी सेठानी की सेवा में अवश्य ही किसी प्रकार की कमी रही होगी। यदि वह पतिदेव का ठीक प्रकार से मनोरंजन करती, उनकी सेवा में कोई त्रुटि न होने देती तो सेठजी मेरे साथ विवाह क्यों करते? अतएव मुझे ऐसा प्रयत्न करना चाहिए जिससे सेठजी को तीसरा विवाह करने की आवश्यकता न पड़े। छोटी पत्नी ने घर के कार्यों को देखभाल आरम्भ की। उसने देखा कि बड़ी सेठानी एक मोटी सी गद्दी पर बैठकर और हाथ में माला लेकर 'सेठ मोतीलाल, सेठ मोतीलाल' कहकर अपने पति के नाम की माला जपती है। यह देखकर छोटी सेठानी ने सोचा यदि इस प्रकार पतिदेव का मनोरंजन हो जाता तो मेरे आने का

CamScanner से स्कैन किया गया

अवसर ही क्यों आता ? उसने दूसरा मार्ग अपनाया। वह सेठजी के कार्य को अपना कार्य समझने लगी। सेठजी के सुख-को-सुख और दुःख-को-दुःख मानती। उनकी प्रत्येक आज्ञा को शिरोधार्य करती। उनका काम पहले ही कर देती जिससे पति के अप्रसन्न होने का अवसर ही न आये।

एक दिन सेठ मोतीलालजी किसी आवश्यक कार्य से घर आये और द्वार के निकट पहुँचते ही उन्होंने पानी लाने के लिए आवाज लगाई। उनकी आवाज सुनकर बड़ी सेठानी कहने लगी, "पता नहीं इनकी समझ भी कैसी है ? मैं इन्हीं के नाम की तो माला फेर रही हूँ और ये उसी में विघ्न डाल रहे हैं। इनसे यह भी नहीं होता कि दो पग आगे बढ़कर स्वयं पानी भरकर पी लें। भला मैं अपने जप को कैसे खण्डित करूँ ?" यह बड़बड़ाकर बड़ी सेठानीजी अपनी माला सरकाती रहीं।

छोटी सेठानी पतिदेव की आवाज सुनते ही दौड़ी और पानी लेकर उपस्थित हो गई। सेठजी पानी पीकर अन्दर प्रविष्ट हुए तो देखा कि बड़ी सेठानी बैठी-बैठी उन्हींके नाम की माला जप रही है। सेठानी ने सेठजी को आते देखा तो अपना स्वर और ऊँचा कर दिया।

इस दृष्टान्त में दोनों स्त्रियाँ अपने पति को नहीं भूलतीं परन्तु इन दोनों में से पति को प्रिय कौन-सी होगी ? निःसंदेह पति की आज्ञाओं को पालन करनेवाली। ईश्वर की भक्ति के सम्बन्ध में भी यही बात है। जो ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करेगा प्रभु उससे ही प्रसन्न होंगे, भाँडों की भाँति कीर्तन करनेवालों से नहीं।

प्रश्न उपस्थित होता है प्रभु की आज्ञाएँ क्या हैं ? उत्तर बहुत सरल एवं स्पष्ट है। जब ईश्वर ने संसार का निर्माण किया तब उसके साथ ही इस संसार के सञ्चालन के लिए अपना

CamScanner से स्कैन किया गया

विधान भी दिया। वह विधान है वेद। वेद में प्रभु की आज्ञाएँ भरी हुई हैं। यहाँ दिग्दर्शन के रूप में कुछ का उल्लेख किया जाता है—

**मनुर्भव।** —ऋ० १०।५३।६

मनुष्य बन। आज मनुष्यता का नाम भी नहीं है। आज तो यह अवस्था है—

**ख़ुदा तो मिलता है इन्सान नहीं मिलता।**
**यह वह चीज है कि देखी कहीं-कहीं मैंने॥**

यदि मनुष्य में मानवता नहीं तो वह मनुष्य नहीं कहला सकता, क्योंकि—

**आदमी को आदमियत चाहिए।**
**बू नहीं सन्दल में तब वह चोब है॥**

**अन्यो अन्यमभि हर्यत।** —अथर्व० ३।३०।१

परस्पर एक-दूसरे के साथ प्रेम का व्यवहार करो।

**वाचं वदतु शन्तिवाम्।** —अथर्व० ३।३०।२

शान्ति देनेवाली वाणी बोलो।

**मा स्रेधत।** —ऋ० ७।३२।९

हिंसा मत करो।

**तेन त्यक्ते न भुञ्जीथाः।** —यजु० ४०।१

त्यागपूर्वक संसार के पदार्थों का उपभोग करो। संसार में रहो परन्तु इसमें लिप्त मत हो जाओ। इस प्रकार रहो—

**आदमी को चाहिए दुनिया में रहना इस तरह।**
**तालाब के पानी में जैसे रहता है कमल॥**

**मा गृधः।** —यजु० ४०।१

दूसरे के धन का लालच मत करो।

**ऋतस्य पथा प्रेत।** —यजु० ७।४५

सत्य के मार्ग पर चलो।

CamScanner से स्कैन किया गया

**वि द्वेषांसि इनुहि ।** —ऋ० ६।१०।७

द्वेष का परित्याग कर दो ।

**अक्षैर्मा दीव्यः ।** —ऋ० १०।३४।१३

जुआ मत खेलो ।

**मा पुरा जरसो मृथाः ।** —अथर्व० ५।३०।१७

बुढ़ापे से पूर्व मत मर ।

**सखायः क्रतुमिच्छत ।** —ऋ० ८।७०।१३

मित्रो ! कर्म करने की इच्छा करो ।

ये और इसी प्रकार की अन्य आज्ञाओं को अपने जीवन में धारण करने का नाम ही भक्ति है । इन आज्ञाओं को जीवन में धारण करते हुए ईश्वर के सच्चे भक्त बनो ।

CamScanner से स्कैन किया गया

: ५ :

# महान् देव की भक्ति

**येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः ।**
**यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥**

—यजु० अ० ३२ । मं० ६

(येन) जिस परमात्मा ने (उग्रा) उग्र प्रकाशयुक्त (द्यौः) सूर्य आदि को (च) और (पृथिवी) पृथिवीलोक को (दृढ़ा) दृढ़ किया है, (येन) जिस परमात्मा ने (स्वः) सांसारिक सुख को (स्तभितम्) थाम रक्खा है और (येन) जिस देवाधिदेव ने (नाकः) दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, (यः) जो परमेश्वर (अन्तरिक्षे) आकाश में (रजसः) अनेक लोक-लोकान्तरों को (विमानः) विशेष रीति से निर्माण करता और आकाश में भ्रमण कराता है (कस्मै) उस आनन्ददायक (देवाय) कामना करने योग्य प्रभु के लिए (हविषा) अपने सब सामर्थ्य से (विधेम) विशेष भक्ति करें।

## येन द्यौः उग्रा

परमात्मा ने उग्र स्वभाववाले सूर्य आदि को धारण किया हुआ है। द्युलोक उग्र है। क्यों? हमारे सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र, मङ्गल, बुध, बृहस्पति और शनि को मिलाकर एक सौरमण्डल बनता है। इनकी उग्रता का पता लगाना हो तो यूँ समझिए कि सूर्य पृथिवी से साढ़े तेरह लाख गुणा बड़ा है। पृथिवी का भार ६ के आगे २१ बिन्दु रक्खे जाएँ (६०००००००००००००००००००००) इतने टन बनता है। हमारी संख्या महाशंख पर समाप्त हो जाती है। मानव-बुद्धि पृथिवी के भार की गणना

CamScanner से स्कैन किया गया

करने में असमर्थ है फिर सूर्य के भार की तो कल्पना भी असम्भव है। यह समस्त सौरमण्डल हमारी पृथिवी से करोड़ों गुणा बड़ा एवं भारी है। इस सौरमण्डल की भाँति और भी बहुत-से सौर-मण्डल हैं। इस सूर्य की भाँति और भी अनेक सूर्य हैं। वेद में कहा है—

**सप्तदिशो नानासूर्याः। —ऋ० ६।११४।३**

दिग्दिगान्तरों में अनेक सूर्य हैं। वैज्ञानिक अब तक दो अरब सौरमण्डलों का पता लगा चुके हैं। वैज्ञानिकों की बनाई हुई दृढ़-से-दृढ़ और शक्तिशाली दूरवीक्षण (दूरबीन) जिस दूर-से-दूर के नक्षत्र को देख सकी है वहाँ से प्रकाश के पृथिवी पर पहुंचने में एक सहस्र वर्ष लगते हैं और कुछ सूर्य तो हमारी पृथिवी से इतने दूर हैं कि जिनका प्रकाश सृष्टि के आरम्भ से लेकर अब तक पृथिवी पर नहीं पहुंचा है। स्मरण रहे कि प्रकाश की गति एक लाख छियासी सहस्र मील प्रति सैकिण्ड है। क्या इस प्रकार के ग्रह-नक्षत्र, तारे और सितारे उग्र नहीं हैं ?

वैज्ञानिकों के अनुसार हमारी पृथिवी के कुछ ग्रहों की दूरी इस प्रकार है—

| | | |
|---|---|---|
| पृथिवी से चन्द्रमा कम-से-कम | २,२१,६१० | मील दूर है। |
| पृथिवी से शुक्र कम-से-कम | २,३२,७१,००० | मील दूर है। |
| पृथिवी से मंगल कम-से-कम | २,३६,१६,००० | मील दूर है। |
| पृथिवी से बुध कम-से-कम | ४,८०,२०,००० | मील दूर है। |
| पृथिवी से सूर्य कम-से-कम | ६,१४,०६,००० | मील दूर है। |
| पृथिवी से बृहस्पति कम-से-कम | ३६,५८,१६,००० | ,, ,, |
| पृथिवी से शनि कम-से-कम | ७४,२६,४६,००० | ,, ,, |
| पृथिवी से यूरेनस कम-से-कम | १,६०,६१,८३,००० | ,, ,, |
| पृथिवी से नेपच्यून कम-से-कम | २,६७,४३,५७००० | ,, ,, |

CamScanner से स्कैन किया गया

यदि हम सौ मील प्रति घण्टा की गति से चलनेवाली ट्रेन द्वारा बिना रुके लगातार यात्रा करते रहें तो चन्द्रमा तक पहुँचने में ६० दिन, शुक्र में पहुँचने में २७ वर्ष, मङ्गल में पहुँचने में ३६ वर्ष, बुध तक जाने में ५४ वर्ष, सूर्य में जाने के लिए १०५ वर्ष, बृहस्पति की यात्रा करने में ४१७ वर्ष, शनि तक पहुँचने में ८५८ वर्ष, यूरेनस की यात्रा में १८३३ वर्ष और नेपच्यून तक पहुँचने में ३२१३ वर्ष लगेंगे। यह तो एक सौरमण्डल की बात हुई। पता नहीं ऐसे कितने सौरमण्डल हैं। इन सौरमण्डलों की विशालता पर विचार करते हुए बुद्धि आश्चर्यचकित हो जाती है। इन सौरमण्डलों की विशालता और व्यापकता के सम्बन्ध में श्री जगदीशचन्द्रजी वसु ने ठीक ही कहा था—

"हो सकता है मनुष्य समुद्र के बिन्दुओं की गणना कर ले, यह भी सम्भव है कि वह रेगिस्तान (मरुस्थल) के कणों की भी गणना कर डाले परन्तु द्युलोक के ग्रह और नक्षत्र, चाँद और सितारों तथा सूर्यों की गणना करना असम्भव है।"

यदि ऐसा प्रकाशमान एवं ज्योतिर्मान् द्युलोक उग्र नहीं तो और क्या है? निश्चितरूपेण यह द्युलोक अत्यन्त उग्र है।

रात्रि के समय हमें आकाश में जो ज्योति का एक पुञ्ज-सा फैला हुआ दिखाई देता है, उसे आकाश-गङ्गा (Milky way) कहते हैं। इसमें ४० अरब ऐसे सूर्य हैं जिनका अपना अलग-अलग मण्डल है। अब तक ऐसी दो करोड़ आकाश-गङ्गाओं का पता लगाया जा चुका है। पता नहीं ऐसी और कितनी आकाश-गङ्गाएँ हैं। एक-एक आकाश-गङ्गा में अरबों सूर्य, एक-एक सूर्य की परिधि में घूमनेवाले कई ग्रह-उपग्रह और आकाश-गङ्गा के अतिरिक्त अनेक नक्षत्र। महान् देव की इस महान् रचना को देखकर मनुष्य आश्चर्यचकित रह जाता है।

इन उग्र और तेजस्वी पिण्डों को किसने सँभाला हुआ है?

CamScanner से स्कैन किया गया

इन सबका धारण करनेवाला अद्वितीय ईश्वर ही है। इनमें उसी की ज्योति और प्रकाश है। उपनिषद् के ऋषि ने ठीक ही कहा है—

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं,
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनु भाति सर्वम्,
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

—कठ० ५।१५

उस प्रभु के प्रकाश के बिना न सूर्य चमक सकता है और न चन्द्रमा प्रकाशित हो सकता है, न बिजली ही चमक सकती है, फिर इस साधारण अग्नि की तो बात ही क्या है? उसी के तेज से, उसी के प्रकाश से, उसी की ज्योति से यह सारा संसार चमक रहा है, उसी की ज्योति से ज्योतिमान् हो रहा है। उसी के प्रकाशित होने पर यह सारा जगत् प्रकाशित होता है।

ईश्वर की सत्ता को न माननेवाले भौतिकवादी कहते हैं कि यह सब चांस (Chance) है, आकस्मिक है, अपने आप हो रहा है। ऐसे लोगों की बुद्धि पर हँसी आती है और आश्चर्य भी होता है। एक छोटी-सी सुई बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति किसी लुहार की आवश्यकता अनुभव करता है, एक साधारण से दीपक को जलाने के लिए किसी व्यक्ति की आवश्यकता प्रत्येक को अनुभव होती है, एक छोटे-से घर को सुव्यवस्थित रखने के लिए किसी गृहिणी की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति अनुभव करता है परन्तु इस इतने विशाल और सुव्यवस्थित ब्रह्माण्ड की रचना के लिए किसी चेतनशक्ति को न माना जाए इससे अधिक विडम्बना और क्या हो सकती है? यह बुद्धिवाद का दिवाला नहीं तो और क्या है?

अधिक-से-अधिक १३० गज लम्बे और १०० गज चौड़े

CamScanner से स्कैन किया गया

फुटबाल के मैदान में दोनों ओर से बाईस खिलाड़ी एकत्र होते हैं। वे सभी अपनी ओर से पूर्ण प्रयत्न करते हैं कि फुटबाल आउट न हो जाए। परन्तु फिर भी वह आउट हो जाती है, खेल के क्षेत्र से बाहर चली जाती है परन्तु इस अनन्त आकाश में वह परमात्मा अकेला होते हुए भी एक नहीं अपितु अरबों और खरबों गोल-गोल बालों को इस प्रकार व्यवस्था में चलाता है कि कोई भी बाल अपने स्थान से इधर-उधर नहीं होने पाती। समस्त ग्रह-उपग्रह और नक्षत्र नियमित गति और अपने-अपने क्षेत्र में सुव्यवस्थित रूप में चलते हैं। ये सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र अपनी परिधि और गति में अकस्मात् नहीं चल रहे अपितु इन सबको परमात्मा चला रहा है।

## पृथिवी च दृढा

जिस ईश्वर ने उग्र द्युलोक की रचना की है उसी ने पृथिवी को दृढ़ बनाया है। पाठकों को यहाँ शङ्का होगी कि पृथिवी तो घूमती है, वह तो सूर्य के गिर्द चक्कर लगाती है, फिर यह निरन्तर गमनशील पृथिवी दृढ़ कैसे हो सकती है? निःसन्देह पृथिवी घूमती है। यह स्थिर नहीं है परन्तु स्थिर-सी प्रतीत होती है। इसीलिए कहा गया है कि जगदीश्वर ने पथिवी को दृढ़ बनाया है। वेद में अन्यत्र कहा है—

**यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्।**
**यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः॥**

—ऋ० २।१२।२

जिसने घूमती हुई पृथिवी को दृढ़, स्थिर कर रक्खा है, जिसने क्रुद्ध हुए-से पहाड़ों को रमणीय बना रक्खा है, जिसने विस्तृत एवं विशाल आकाश का निर्माण किया है, जिसने सूर्य को थाम रक्खा है, हे मनुष्यो! वह परमैश्वर्यशाली भगवान ही है।

CamScanner से स्कैन किया गया

सचमुच यह पृथिवी दृढ़ है। इस पृथिवी ने असंख्य प्राणियों के भार को धारण किया हुआ है इसीलिए इसे 'धरणी' कहते हैं। मेघों से गिरती हुई बूंदों और आकाश से गिरते हुए ओलों को यह सहन करती है। लोग इस पर मल-मूत्र का त्यागन करते हैं, अनेक स्थानों पर इसे खोद डालते हैं, यह पृथिवी इन सभी बातों को सहन करती है इसीलिए संस्कृत-साहित्य में पृथिवी को 'क्ष्मा' भी कहते हैं।

सहस्रों और लाखों नहीं अरबों और खरबों मनुष्य इस पृथिवी पर आये और चले गये। अनेक राजा और महाराजाओं ने इसके ऊपर शासन किया। वे सब-के-सब काल के गाल में पहुँच गये। किसी उर्दू के कवि कहा है—

**मिले मिट्टी में वो पामाले आशोबे खिज़ां[1] होकर।**
**चमन ने नाज[2] से पाला था जिन फूलों को दामन में॥**

राजा और रङ्क, योगी, यती और तपस्वी, सेठ और साहूकार, उपदेशक और अध्यापक, धनी और निर्धन आये और चले गये परन्तु यह पृथिवी अपने स्थान पर अचल और दृढ़ है।

कहते हैं सिकन्दर के मरने पर सिकन्दर की माता को बड़ा दुःख हुआ। एक दिन वह क़बरिस्तान में पहुँची और वहाँ जाकर पृथिवी माता से पूछा, "मेरा सिकन्दर कहाँ है ?" पृथिवी ने कहा, "कौनसा सिकन्दर ?" माता ने कहा, "क्या सिकन्दर भी दस-बीस हैं ? जिस सिकन्दर ने ईरान और अफ़ग़ानिस्तान को जीता था मैं उस सिकन्दर की बात पूछ रही हूँ।" पृथिवी माता हँस पड़ी और कहने लगी, "तू एक सिकन्दर की बात करती है यहाँ तो सारे ही सिकन्दर हैं।" सिकन्दर आया और गया परन्तु पृथिवी ज्यों-की-त्यों है।

---

१. पतझड़ की हलचल में दुर्दशाग्रस्त, २. गर्व।



CamScanner से स्कैन किया गया

एक राजा ने महमूद ग़ज़नवी को, जिसे मरे हुए सौ वर्ष हो गये थे, स्वप्न में देखा। उसने देखा कि उसके हाथ, पाँव, धड़ और सारा शरीर मिट्टी में मिल चुका है, यहाँ तक कि उसकी हड्डियाँ भी गल चुकी हैं। कुछ भी शेष नहीं था परन्तु उसकी दोनों आँखें चमक रही थी। प्रातःकाल राजा ने अपने दरबारियों से इस स्वप्न का रहस्य पूछा। एक फकीर ने बताया कि ग़ज़नवी अपनी आँखों से यह देख रहा है कि उसका राज्य दूसरे के अधिकार में है और वह विवश है।

सिकन्दर और ग़ज़नवी ही क्या संसार में कितने ही ग़ोरी, चंगेज़, तैमूर और नादिरशाह आये और चले गये। कितने ही विजेताओं का तो नाम भी इतिहास के पन्नों में नहीं है परन्तु पृथ्वी अपने स्थान पर दृढ़ है। अनेक बार एटम-बम और हाइडरोजन-बम्ब भी गिरे परन्तु पृथिवी फिर भी अपने स्थान पर ध्रुव है।

## येन स्वः स्तभितम्

संसार का प्रत्येक मनुष्य, नहीं, नहीं, प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है, शान्ति और आनन्द की खोज में है। सुख-प्राप्ति के लिए मनुष्य नाना प्रकार के प्रयत्न करता है, अनेक प्रकार के उपाय सोचता है। कोई मिनस्टरी के लिए भागता है तो कोई संसार का नेता बनना चाहता है परन्तु इन सबमें सुख कहाँ? बहुत-से व्यक्ति प्रकृति में सुख ढूँढते हैं, प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ को देखते हैं परन्तु प्रकृति में भी सुख नहीं मिलता। प्रकृति का गुण सुख है ही नहीं तो उससे सुख मिल कैसे सकता है? हाँ, मनुष्य की अपनी अज्ञानता के कारण उसे प्रकृति में सुख का आभास अवश्य होता है। संसार के पदार्थ बड़े मनमोहक, आकर्षक और सुखदायी प्रतीत होते हैं परन्तु इन में सच्चा सुख है नहीं, तभी तो किसी ने कहा—

CamScanner से स्कैन किया गया

**देखकर मत रीझना इस बाहर की सफाई पर।**
**यह वर्क सोने का मँढा है गोबर की मिठाई पर॥**

एक कुत्ता कहींसे एक हड्डी का टुकड़ा ढूंढकर उसे चबाता शुरू करता है, हड्डी तो सूखी हुई है, उसमें न कोई रस है, न स्वाद परन्तु उसे बार-बार चबाने पर कुत्ते के मसूड़ों से रक्त निकलने लगता है और वह समझता है कि यह रस, यह आनन्द हड्डी से प्राप्त हो रहा है। ठीक यही बात सांसारिक पदार्थों के सम्बन्ध में है। इन पदार्थों में सुख कहाँ है? इन पदार्थों में सुख की जो अनुभूति होती है वह तो हमारे चित्त की एकाग्रता के कारण है। सच्चा सुख और आनन्द तो प्रभु के आश्रित है। वह आनन्दस्वरूप है। उसी ने सुख को धारण किया हुआ है। वही सुख का वर्षक है।

स्वः का एक अर्थ प्रकाश भी होता है। जब ईश्वर ने सूर्य-चन्द्रमा आदि महान् तेजस्वी पिण्डों को धारण किया हुआ है तो प्रकाश का धारक तो वह स्वतः ही हो जाता है।

## येन नाकः

जिस ईश्वर ने सांसारिक सुख को धारण किया हुआ है, उसी ईश्वर ने दुःखरहित मोक्ष को भी धारण किया हुआ है। वैदिक धर्म में तीन पदार्थों को अनादि माना गया है। वे हैं ईश्वर, जीव और प्रकृति। वेद में कहा है—

**द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।**
**तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥**

—ऋ० १।१६४।२०

दो पक्षी हैं, वे परस्पर प्रेम से मिले हुए घनिष्ठ मित्र हैं और दोनों एक ही समान वृक्ष को आलिंगन किये हुए हैं। उनमें एक जीवात्मा प्रकृतिरूपी वृक्ष के स्वादु फलों को खाता है और दूसरा

CamScanner से स्कैन किया गया

परमात्मा न खाता हुआ साक्षीरूप में केवल देखता है। उपमा-अलंकार द्वारा यहाँ तीन सत्ताओं का स्पष्ट वर्णन है। इनमें प्रकृति केवल सत् है, जीव में दो गुण हैं सत् और चित् तथा परमात्मा है सत, चित्, आनन्द=सच्चिदानन्द। ईश्वर आनन्दस्वरूप है, अतः दुःखरहित मोक्ष को उसी ने धारण किया हुआ है। उसी की शरण में जाने से दुःखरहित मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है, क्योंकि जिसके पास जो पदार्थ है वही उसे दे सकता है। एक व्यक्ति जो स्वयं दीन-हीन, अशान्त है, दूसरे को क्या शान्ति प्रदान कर सकता है ? जीव में दो गुण हैं सत् और चित्। प्रकृति में केवल एक गुण है सत्। यदि मनुष्य प्रकृति की ओर जाएगा, प्रकृति की उपासना करेगा तो उसकी अधोगति होगी, उसका अपना विवेक भी समाप्त हो जाएगा। यदि वह परमात्मा की ओर बढ़ेगा तो उसे आनन्द की प्राप्ति होगी, उसकी उन्नति होगी। मोक्ष को प्रभु ने ही धारण किया हुआ है, अतः उसकी प्राप्ति के लिए ईश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

## यः अन्तरिक्षे रजसः विमानः

द्युलोक और पृथिवीलोक के निर्माण के अतिरिक्त उस ईश्वर ने इन दोनों लोकों के मध्यभाग अन्तरिक्ष में लोक-लोकान्तरों को विशेष रीति से बनाया है। उसकी रचना सर्वथा पूर्ण एवं अत्यन्त वैज्ञानिक है। इस रचना में किसी प्रकार की त्रुटि या न्यूनता नहीं हैं। आओ, तनिक इस रचना पर विचार करें।

सूर्य को देखिए। यह अग्नि का एक विशाल गोला है। प्रभु ने इसे कितनी कारीगरी से रचा है। यह पृथिवी से नौ करोड़ मील से भी दूर है। एक व्यक्ति दक्षिण को ओर चलता है, दूसरा उत्तर की ओर, एक पूर्व की ओर यात्रा करता है तो एक पश्चिम की ओर और ये चारों व्यक्ति ऐसा अनुभव करते हैं कि सूर्य

CamScanner से स्कैन किया गया

हमारे साथ-साथ ही चल रहा है। इसके निर्माता ने इसे कैसी कारीगरी से कितने उपयुक्त स्थान पर रक्खा है! और विचार कीजिए—यदि सूर्य अपनी वर्तमान अवस्था से एक करोड़ मील दूर होता तो इस का ताप हम तक ठीक मात्रा में न पहुँच सकता, फिर हमारे अन्न और वनस्पतियाँ ठीक प्रकार न पक पातीं। सर्दी भी भयंकर होती। इसके विपरीत यदि सूर्य नौ करोड़ मील की दूरी की बजाय पाँच करोड़ मील की दूरी पर होता तो प्राणियों का जीवन ही असम्भव हो जाता। उस दशा में सूर्य की गर्मी इतनी तीव्र होती कि अन्न, ओषधि, वनस्पतियाँ, मनुष्य और पशु-पक्षी सब-के-सब इसकी गर्मी से जलकर भस्म हो जाते। यदि यह सूर्य जितना बड़ा और भारी है इतना बड़ा न होकर आकार में छोटा होता, पृथिवी के बराबर का होता तब भी यह हमारे लिए उपयोगी नहीं रहता।

इसी प्रकार चन्द्रमा को देखिए। चन्द्रमा पृथिवी से कम-से-कम २,२१,६०० मील की दूरी पर है। यदि यह चन्द्रमा भी सूर्य की भाँति अग्नि का पिण्ड होता तब क्या होता? दिन में सूर्य तपता और रात्रि में चन्द्रमा अग्नि बरसाता। तब क्या इस पृथिवी पर जीवन सम्भव था? यदि चन्द्रमा चार लाख मील ऊपर होता तो अन्न और ओषधि आदि में चन्द्रमा का जो सोम टपकता है वह इतनी मात्रा में नहीं आ पाता जितनी मात्रा में अब आता है, फलतः वे अधिक पौष्टिक और बलवर्धक न बन पाते। यदि चन्द्रमा एक लाख मील की दूरी पर होता तब क्या होता? तब समुद्र में दिन में दो बार ऐसे भयंकर ज्वार-भाटे आते कि एक दिन में दो बार सारे संसार की प्रलय हो जाया करती। उस कुशल स्रष्टा ने इस का निर्माण इस ढंग से किया है कि यह अधिक-से-अधिक लाभप्रद सिद्ध हो सके।

सूर्य और चन्द्रमा ही क्या जितने भी लोक और लोकान्तर

CamScanner से स्कैन किया गया

अन्तरिक्ष में घूम रहे हैं उन सबका निर्माता और विधाता वह ईश्वर ही है और इन सबका निर्माण उसने ऐसी चतुरता से किया है कि कोई भी ग्रह अथवा नक्षत्र अपनी परिधि और मर्यादा से तनिक भी इधर-उधर नहीं हो सकता।

## कस्मै देवाय हविषा विधेम

ईश्वर तीव्र प्रकाशयुक्त सूर्य आदि अग्नि-पिण्डों का रचयिता है और प्रकाशरहित पृथिवी आदि का भी वही निर्माता है। सांसारिक सुख और मोक्ष भी उसी के अधीन है। समस्त लोक-लोकान्तरों का धारक भी वही है।

जीव परमात्मा के समक्ष तुच्छ है, नगण्य है। परमात्मा और जीवात्मा की कोई समानता नहीं। परन्तु हे मानव! यदि तू सुख, शान्ति और आनन्द चाहता है तो अपनी शक्ति का स्मरण कर निराश और हताश मत हो। पूर्ण बल लगाकर पुरुषार्थ कर। तेरे पुरुषार्थ को देखकर ही प्रभु तेरी सहायता करेंगे। पुरुषार्थी के ही सब सहायक होते हैं पुरुषार्थहीन की कोई भी सहायता नहीं करता।

एक था कृषक = किसान। अपनी गाड़ी में अन्न लादकर उसे बेचने के लिए मण्डी ले जा रहा था। मार्ग में गाड़ी का एक पहिया निकलकर अलग हो गया। किसान ने बैल खोल दिये और स्वयं एक वृक्ष के नीचे लेट गया। मार्ग में जो भी निकलता उसी से कहता, "भाई! यह पहिया गाड़ी में लगा दे।" परन्तु किसी ने भी उसकी बात नहीं सुनी। जब कई घण्टे इस प्रकार व्यतीत हो गये तब किसान उठा और अपने परिश्रम से उस पहिये को गाड़ी में लगाने लगा। वह पूर्णरूपेण प्रयत्न कर रहा था। पहिया धुरे के पास पहुँचता था परन्तु पहिया चढ़ने में तनिक-सी कसर रह जाती थी। कई बार असफल होकर भी

CamScanner से स्कैन किया गया

उसने पुरुषार्थ नहीं छोड़ा। जब वह अन्तिम बार उद्योग कर रहा था तब एक व्यक्ति उधर से निकला। किसान ने उससे प्रार्थना की। किसान के पुरुषार्थ को देखकर उसे भी किसान पर दया आई। उसने किसान की सहायता की। फलस्वरूप पहिया गाड़ी में चढ़ गया। ठीक इसी प्रकार जब मनुष्य अपना पुरुषार्थ करके थक जाता है तब वह महान् देव उसकी सहायता करता है।

आनन्द के अभिलाषियो ! मोक्ष सुख के इच्छुको ! संकल्प और विकल्पों को छोड़ कर अपने पूर्ण सामर्थ्य से उस प्रभु की, सुखस्वरूप, आनन्दघन परमात्मा की उपासना करो फिर वह ईश्वर आपका मार्गदर्शक बनेगा और आपको शीघ्र ही आनन्द और दुःखरहित-मोक्ष की प्राप्ति होगी। आ, अपने पूर्ण सामर्थ्य से उसकी भक्ति में लीन हो जा।

CamScanner से स्कैन किया गया

: ६ :

# हम ऐश्वर्यों के स्वामी हों

**प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।**
**यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥**

—ऋ० मं० १०। सू० १२१। मं० १०

(प्रजापते) हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मन् ! (त्वत्) तुझसे (अन्य:) भिन्न, दूसरा कोई (ता) उन और (एतानि) इन (विश्वा) सब (जातानि) उत्पन्न हुए जड़, चेतन आदिकों का (न, परिबभूव) रक्षा करनेवाला नहीं है। (यत्कामा:) जिस-जिस अभिलाषावाले होकर हम (ते) तेरा (जुहुम:) आश्रय लेवें (न:) हमारी (तत्) वह-वह कामना (अस्तु) सिद्ध हो, पूर्ण हो। हमारी कामना क्या है ? (वयम्) हम लोग (रयीणाम्) धनैश्वर्यों के (पतय:) स्वामी (स्याम) होवें।

## प्रजापते

वस्तुत: तो प्रभु ही प्रजापति कहलाने का अधिकारी है। वह इस अखिल ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करता है फिर इसका पालन और पोषण भी करता है तब उसके बिना इसका स्वामी और कौन हो सकता है ? मनुष्य, पशु, पक्षी, सबके शरीरों का निर्माण वही करते हैं, सबके लिए जीवन-सामग्री भी तो वही प्रदान करते हैं। चेतन जीव को मोक्ष प्राप्ति और मोक्ष लाभ के लिए उसे जड़ प्रकृति से भी तो ईश्वर ही मिलाता है। सब जड़ और चेतन उसी के अधीन हैं। अपनी विधान शक्ति से वह सृष्टि की रचना करता है और जीव जैसे अच्छे या बुरे कर्म करता है उसी प्रकार

CamScanner से स्कैन किया गया

की सामग्री वह उसे उपस्थित कर देता है। वह सब का पालन करता है। कीट, पतंग, पशु, पक्षी और मनुष्य सब उसी के आश्रय में पल रहे हैं। किसी ने कहा है—

**तू है अजसाम[1] का ख़ालिक़[2] मुरब्बी[3] तू है जानों का।**
**तेरे ख्वानेकरम[4] पर जमघटा है महमानों का॥**

वह ईश्वर तो पत्थर में बैठे हुए कीड़े तक का भी ध्यान रखता है—

**राज़िक़[5] की इनायत[6] में हुआ शक जो किसी को।**
**इक़रार किया कीड़े ने पत्थर से निकलकर॥**

बच्चे के उत्पन्न होने से पूर्व ही उसके लिए भोजन का प्रबन्ध हो जाता है। उसका भोजन उसकी माँ के स्तनों में दूध के रूप में पहले ही तैयार हो जाता है। जो बच्चा कई मास तक किसी भी वस्तु का ज्ञान नहीं रखता वह अपने भोजन के ज्ञान से सम्पन्न होकर उत्पन्न होता है, अतः मानना पड़ता है कि वही सच्चा स्वामी और पालक है।

## न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव

हे सबके स्वामिन्! आपसे भिन्न दूसरा कोई इस ब्रह्माण्ड में उत्पन्न हुए प्राणियों का पालन करनेवाला नहीं है। आप ही इन सब की ठीक-ठीक देख-भाल (परिभू) करनेवाले हैं।

मन्त्र का यह भाग बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। संसार में जितने भी नाते-रिश्तेदार एवं सगे-सम्बन्धी हमारे रक्षक हैं उनका थोड़ा बहुत स्वार्थ अवश्य ही रहता है। माता-पिता बच्चे की जो देख-भाल करते हैं उसमें उनका स्वार्थ निहित है। बचपन में वे उसकी बाल-लीलाओं और चेष्टाओं को देखकर अपना मन बहलाते हैं।

---

१. शरीरों, २. निर्माता, ३. पालनेवाला, ४. दानशीलता का थाल, ५. अन्नदाता, ६. कृपा।

CamScanner से स्कैन किया गया

भविष्य में वृद्ध होने पर उन्हें यह आशा रहती है कि वे बच्चे उनकी सेवा करेंगे, स्वयं कमाएँगे और उन्हें खिलाएँगे।

एक अध्यापक विद्यार्थी के हित का ध्यान इसलिए करता है कि उसे धन और यश की प्राप्ति होगी। यदि धन की प्राप्ति न हो तो वह उसका हितचिन्तन नहीं करता।

कहते हैं एक व्यक्ति ने अपने पुत्र को पढ़ाने के लिए एक अध्यापक रक्खा। अध्यापक ने २०) मासिक माँगे परन्तु पिता ने १०) मासिक देना स्वीकार किया। अध्यापक ने पढ़ाना आरम्भ किया Girl गिरल माने लड़की। एक दिन पिताजी ने पाठ सुना। उन्होंने कहा, "मास्टरजी ! आप तो अशुद्ध पढ़ाते हैं।" अध्यापक महोदय ने कहा, "दस रुपया मासिक में तो ऐसा ही पढ़ाया जाएगा, यदि आप बीस रुपया मासिक दें तो मैं Girl गर्ल माने लड़की भी पढ़ा सकता हूँ।" कहने का तात्पर्य यह कि अध्यापक धन के कारण हितचिन्तन करता है।

बन्धु और रिश्तेदारों का साथ सामयिक होता है। उनका साथ अधिक-से-अधिक श्मशान भूमि तक हो सकता है। मित्र और यहाँ तक कि पत्नी का प्रेम भी श्मशान तक ही होता है। परन्तु ईश्वर तो सदा प्राणियों के साथ रहता है। वह तो जन्म-जन्मातरों में भी रक्षा करता है। प्रभु की इस रक्षा-शक्ति के कारण ही तो महर्षि दयानन्द अकेले और निस्सहाय जङ्गलों और पर्वतों में घूमते रहे। शेर और चीते उन्हें भयभीत न कर सके। वे शत्रुओं के बीच से निर्भय होकर निकल जाते थे परन्तु किसी को 'ओ' तक कहने का साहस नहीं होता था।

ज्ञान की कमी के कारण अन्य रक्षक प्रभु के समान ठीक रक्षा नहीं कर सकते। कभी-कभी तो ऐसे रक्षक भलाई के स्थान पर बुराई कर बैठते हैं। उनके अज्ञान के कारण लाभ के बदले में हानि हो जाती है। उनकी दया क्रूरता के रूप में परिणत हो

CamScanner से स्कैन किया गया

जाती है। ईश्वर ज्ञानस्वरूप है। उसका ज्ञान पूर्ण है, अतः प्राणियों की रक्षा भी वह पूरी तरह करता है।

## यत्कामाः ते जुहुमः

प्रभो ! हमें विश्वास हो गया है कि आप ही हमारे स्वामी हो, अतः अपनी कामनापूर्ति के लिए हम आपकी शरण में आये हैं। सारा संसार तेरे द्वार का भिखारी है, इसलिए हमने भी तेरा द्वार खटखटाया है। भक्त जो कुछ आपसे माँगते हैं आप वह सब कुछ प्रदान करते हैं। आप तो सभी कामनाओं को पूर्ण करनेवाले हैं—

मा त्वायतो जरितुः काममूनयीः।

—अथर्व० २०।२१।३

आप भक्त की कामनाओं को अपूर्ण नहीं रहने देते। हाँ, कामना शुद्ध और पवित्र अवश्य होनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कामना की थी सच्चे शिव के दर्शन करने की और मृत्यु पर विजय प्राप्त करके मृत्युञ्जय बनने की। संसार इस बात का साक्षी है कि उनकी दोनों कामनाएँ पूर्ण हुईं।

अपने पिता की एक तुच्छ-सी इच्छा को पूर्ण करने के लिए कुमार देवव्रत ने आजीवन ब्रह्मचारी रहने की भीष्म प्रतिज्ञा की थी। इस भीष्म प्रतिज्ञा के कारण ही वे भीष्म पितामह कहलाए। उनके प्रतिज्ञा-पालन में अनेक बाधाएँ आईं। स्वयं उनकी माता ने, जिसके कारण उन्होंने प्रतिज्ञा की थी, उनसे प्रतिज्ञा तोड़ने की प्रार्थना की परन्तु वे अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे। उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा—

त्यजेच्च पृथिवी गन्धमापश्च रसमात्मनः।
ज्योतिस्तथा त्यजेद् रूपं वायुः स्पर्शगुणं त्यजेत्॥

CamScanner से स्कैन किया गया

**प्रभां समुत्सृजेदर्को धूमकेतुस्तथोष्मताम् ।**
**न त्वहं सत्यमुत्स्रष्टुं व्यवसेयं कथं चन ॥**

—महा० आदि० १०३।१६-१८

हो सकता है पृथिवी अपनी गन्ध को छोड़ दे, जल अपने रस का परित्याग कर दे, तेज रूप को और वायु स्पर्श गुण को त्याग दे, सूर्य अपनी प्रभा को और अग्नि अपनी उष्णता को छोड़ दे परन्तु किसी भी दशा में मैं सत्य को छोड़ने का विचार भी नहीं कर सकता।

स्वामी श्रद्धानन्दजी ने एक गुरुकुल स्थापित करने की कामना की थी। अपनी इस कामना को मूर्तरूप देने के लिए उन्हें बहुत से संकटों का सामना करना पड़ा परन्तु अन्त में कामना सफल अवश्य हुई।

प्रजापते ! सच्ची कामनाएँ सब की सफल होती हैं तो हमें भी पूर्ण विश्वास है—

## तत् नः अस्तु

हमारी कामना भी पूर्ण होगी। हे कामनाओं को पूर्ण करने-वाले कामदः पिता ! आप कामनाओं को पूर्ण करनेवाले हैं। हमें भी एक कामना ने आ घेरा है—

**स्तोतुर्मघवन् काममा पृण ।** —अथर्व० २०।१५।५

हे मघवन् ! हे धनवर्षक ! हमारी भी एक कामना है, इसे पूर्ण कर। हमारी कामना है—

## वयं स्याम पतयो रयीणाम्

हम धनैश्वर्यों के स्वामी होवें।

संसार में धन का बड़ा महत्त्व है। धन के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ है। धनहीन व्यक्ति संसार में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। धनिक के सभी मित्र होते हैं। बन्धु-बान्धव भी धन

CamScanner से स्कैन किया गया

की कामना करते हैं। धनवान् के कार्य अपने आप वैसे ही होते रहते हैं, जैसे नदियाँ पर्वत से निकलकर समुद्र में गिर जाती हैं। धनवान् का ही आदर, सत्कार, मान और सम्मान होता है। भर्तृहरिजी ने ठीक ही कहा है—

**यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः,**
**स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।**
**स एव वक्ता स च दर्शनीयः,**
**सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते ॥**

जिसके पास धन है वही कुलीन, पण्डित, बहुश्रुत, गुणवान् सुवक्ता और दर्शन करने योग्य होता है। संसार के सारे गुण स्वर्ण=धन में बसते हैं।

महर्षि मनु ने सम्मान प्राप्ति के पाँच हेतु बताये हैं। उनमें धन को सब से पहले कहा है। देखिए—

**वित्तं बन्धुर्वयः कर्म विद्या भवति पञ्चमी।**
**एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम् ॥**

—मनु० २।१३६

धन, बन्धु, आयु, श्रौत और स्मार्त कर्म तथा विद्या। ये पाँच सम्मान के हेतु हैं। इनमें पूर्व से उत्तर श्रेष्ठ है अर्थात् धन से बन्धु, बन्धु से आयु आदि श्रेष्ठ हैं।

वेद में भी स्थान-स्थान पर धन की महिमा बखान की गई है। एक स्थान पर कहा है—

**यो बिभर्ति दाक्षायणं हिरण्यं स जीवेषु कृणुते दीर्घमायुः।**

—अथर्व० १।३५।२

जो सदा सावधान होकर कुशलतापूर्वक स्वर्ण आदि धन का उपार्जन करता है वह मनुष्यों में अपनी आयु बढ़ाता है।

यह संसार एक विशाल सागर है। जिस प्रकार समुद्र को पार करने के लिए नौका की आवश्यकता होती है उसी प्रकार

CamScanner से स्कैन किया गया

इस संसाररूपी समुद्र को तैरने के लिए भी किसी-न-किसी नौका की आवश्यकता है। वह नौका कौनसी है जिसके द्वारा इस संसार-सागर को पार किया जा सकता है ? वेद कहता है—

**अर्थं ह्यस्य तरणि।** —ऋ० ३।११।३

धन ही इस संसार-सागर से पार लगानेवाली नौका है।

धन के कारण ही मनुष्य की पूजा होती है। स्वामी शङ्कराचार्यजी ने कितना सुन्दर लिखा है—

**यावद् वित्तोपार्जनसक्तः तावन्निजपरिवारो रक्तः।**
**पश्चाज्जर्जरभूते देहे, वार्ता कोऽपि न पृच्छति गेहे ॥**

जब तक मनुष्य धन कमाने में समर्थ होता है तब तक उसका परिवार उससे स्नेह करता है, उसके अधीन रहता है। परन्तु जब वृद्धावस्था आने के कारण या रोगी हो जाने के कारण शरीर निर्बल हो जाता है, धन कमाने के योग्य नहीं रहता तब घर के लोग उससे बात भी नहीं करना चाहते।

एक व्यक्ति के तीन लड़के थे। पिता ने अपने लड़कों का उचित पालन किया। उन्हें हर प्रकार से योग्य बनाया फिर उनके विवाह आदि भी कर दिये। पिता को आशा थी कि जीवन के शेष दिन बड़े आराम से व्यतीत होंगे। पुत्र और पुत्रवधू उसकी सेवा करेंगी परन्तु हुआ बिल्कुल विपरीत। लड़कों ने देखा कि अब पिताजी के पास धन तो है नहीं, अतः इनकी सेवा से क्या लाभ ? न समय पर भोजन मिलता और न उनकी कोई सेवा ही होती। बुढ़ापे के कारण जब खाँसता तो बहुएँ कहतीं, "दिन भर यहाँ पड़ा खाँसता रहता है इसे मौत भी तो नहीं आती।" पिता का जीवन बड़ा कष्टपूर्ण हो गया। इन कष्टों से छुटकारा पाने के लिए उसने अपने एक पुराने मित्र से सलाह ली। मित्र ने उपाय बता दिया। दूसरे दिन मित्र इनके घर आया और लड़कों तथा बहुओं की उपस्थिति में उससे कहने लगा, "आपने अपना

CamScanner से स्कैन किया गया

जो सन्दूक मेरे यहाँ रखा हुआ है उसे मँगा लीजिए। मैंने आपकी अमानत को बहुत दिन तक सँभालकर रक्खा है, अब मुझमें अधिक सामर्थ्य नहीं है।" पिता ने कहा, "मेरी इच्छा तो उसे मँगाने की नहीं थी परन्तु यदि आपकी ऐसी इच्छा है तो मैं मँगा लेता हूँ।"

मित्र से ऐसा कहकर उसने अपने पुत्रों से उस सन्दूक को लाने के लिए कहा। पुत्र हाँपते हुए उस सन्दूक को लाये और मित्र ने चाबी लड़कों के पिता को सौंप दी। अब लड़कों को अपनी भूल का पता लगा। उन्होंने देखा कि अभी तो पिताजी के पास बहुत धन है। अब तो पुनः पिताजी की सेवा आरम्भ हुई। प्रातः नाश्ता मिलने लगा। दोपहर को भी ठीक समय पर भोजन आने लगा और रात को पिताजी के पैर भी दबाये जाने लगे। पिताजी ४-५ वर्ष तक सुख से जिये, फिर परलोक सिधार गये। पिताजी के क्रियाकर्म के पश्चात् पुत्रों ने सन्दूक खोला तो उसमें तीन जूतों के हार और पत्थर भरे हुए मिले। एक प्याला भी था, जिसमें पिताजी को दाल दी जाती थी। एक पत्र भी पड़ा हुआ था जिसमें लिखा था कि मेरी मृत्यु के पश्चात् तीनों एक-एक हार पहन लेना। इस कथा का तात्पर्य यह है कि लोग प्रायः धन के कारण ही सेवा करते हैं।

धन के बिना जब ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और संन्यासियों का काम भी नहीं चलता तो गृहस्थी, जिस पर इन तीनों आश्रमों के पालन-पोषण का भार है, का कार्य कैसे चल सकता है? अतः भक्त भगवान् से प्रार्थना करते हुए कहता है, '**वयं स्याम पतयो रयीणाम्।**' हे प्रजापते! हम धनों के स्वामी हों। ज्ञान-धन, विज्ञान-धन, बल-धन, आचार-धन, बुद्धि-धन, मोक्ष-धन, और भौतिक-धन—सभी प्रकार के धन हमारे पास हों। किसी भी प्रकार के धन की न्यूनता न हो। और धन भी कैसा हो, वेद के

CamScanner से स्कैन किया गया

शब्दों में—

आयुष्यं वर्चस्य ँ् रायस्पोषमौद्भिदम् ।
इद ँ् हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादु माम् ॥
—यजु० ३४।५०

आयु के लिए हितकारी, ज्ञान के लिए उपयोगी, दुःखों से छुड़ानेवाला, ऐश्वर्य की वृद्धि करनेवाला, अन्नादि बढ़ानेवाला, सब कर्मों में सहायक, विजय दिलानेवाला और तेजस्वी स्वर्ण आदि धन मेरे पास आता रहे।

प्रजापते! हमें ऐसे धन से भरपूर कर दे—

अभिवस्त्रा सुवसनान्यर्षाभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः ।
अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्याभ्यश्वान् रथिनो देव सोम ॥
—साम० १४२७

हे प्रभो! तू हमारे लिए सुन्दर वस्त्र, सुन्दर भवन, दुधारी गौएँ, चित्त को प्रसन्न करनेवाले सोने-चाँदी के पात्र और आभूषण आदि तथा रथ और घोड़े प्रदान कर।

हम धन के स्वामी बनें। हम धन का उपार्जन करें। हमें धन की प्राप्ति हो परन्तु हमें उत्तम धन चाहिए। हमारा सत्यानाश करनेवाले धन की हमें आवश्यकता नहीं—

या मा लक्ष्मीः पतयालूरजुष्टाभिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम् ।
अन्यत्रास्मत् सवितस्तामितो धा हिरण्यहस्तो वसु नो रराणः ॥
—अथर्व० ७।११५।२

हे सविता देव! जो धन मुझे गिरानेवाला है। जो धन मुझे चारों ओर से घेरकर ऐसे सुखा देनेवाला है जैसे अमरबेल वृक्ष को सुखा देती है, हे प्रेरक प्रभो! ऐसे धन को मुझसे दूर हटा। मुझे तो उत्तम, श्रेष्ठ धन ही प्रदान कर।

स्वामिन्! आप हमें शक्ति दो कि—

CamScanner से स्कैन किया गया

रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम् ।

—अथर्व० ७।११५।४

हम पुण्यकारक लक्ष्मी का उपभोग करें और जो पाप की कमाई है उससे सदा दूर रहें ।

हम लोग धन प्राप्त करें परन्तु धर्म से, न्याय से, सत्य के मार्ग पर चलते हुए । दूसरों का अधिकार छीनकर, दूसरों का गला दबाकर दूसरों का शोषण करके हम धन न कमाएँ, क्योंकि जो लोग अन्याय से धन कमाते हैं अन्त में उनकी दुर्गति ही होती है—

गुजराँवाला में एक इन्जीनियर रहा करते थे । उनकी पहली पत्नी मर गई और इस संसार में कष्ट उठाने के लिए एक तीन वर्ष का बच्चा छोड़ गई । इन्जीनियर ने दूसरी शादी कर ली । इन्जीनियर महोदय की पैतृक-सम्पत्ति भी थी । पहली पत्नी की सन्तान को पैतृक-सम्पत्ति से वञ्चित रखने के लिए इन्जीनियर महोदय ने पत्नी के कहने पर एक मकान बेच दिया । पहली पत्नी से उत्पन्न पुत्र अभी नाबालिग़ था ।

दूसरी सम्पत्ति बेचने के समय पहली पत्नी का लड़का बालिग़ (वयस्क) हो गया था । इन्जीनियर महोदय ने छल से काम लिया । उसने २५०० रुपया पञ्जाबसिन्ध बैंक गुजराँवाला में लड़के के नाम जमा करा दिया और उसे झाँसा देकर स्टाम्प पर हस्ताक्षर करा लिये । कुछ समय पश्चात् लड़के ने बैंक से अपने रुपये के विषय में पूछताछ की तो उसे आश्चर्य हुआ, क्योंकि रुपये तो उसके पिता ने निकाल लिये थे । वह इस प्रकार कि Fixed Deposit रसीद पर लड़के का नाम लिखा हुआ था और उसके पश्चात् पिता का नाम था परन्तु मध्य में Through आ जाता था । बैंक के मैनेजर ने बताया कि तुम उस रुपये के अधिकारी नहीं थे । वह रुपया तो तुम्हारा पिता ही निकाल सकता था । यदि C/o या S/o होता तो फिर तुम्हारे अतिरिक्त कोई नहीं निकाल



CamScanner से स्कैन किया गया

सकता था।

इस प्रकार अन्याय का धन बटोर कर इन्जीनियर महोदय ने अपने सबसे छोटे लड़के को विलायत में आई० सी० एस० करने के लिए भेजा। लड़के ने पाँच वर्ष में तीस सहस्र रुपया खर्च किया फिर भी परीक्षा में फेल हो गया। पिता ने भारत वापस आने के लिए रुपया भेजा वह भी विलासिता में समाप्त कर दिया। फिर एक होटल में बर्तन साफ करने पर नौकर हो गया। माँ और बहन ने चन्दा डालकर उसे वापस आने का किराया भेजा। भारत आकर बर्मा के एक स्कूल में १५०) मासिक पर अध्यापक हो गया। ठीक है छल, कपट, धोखा, बेईमानी और दूसरों का अधिकार छीनकर प्राप्त हुआ धन कभी भी लाभदायक सिद्ध नहीं होता। हमारे शास्त्रकारों ने घोषणा-पूर्वक कहा—

**अन्यायेनागता लक्ष्मीः खद्योत इव दीप्यते।**
**क्षणं प्रकाश्य वस्तूनि निर्वाणे केवलं तमः॥**

अन्याय से उपार्जित धन जुगनू की भाँति थोड़ी देर चमकता है परन्तु थोड़ी देर प्रकाश कर फिर अन्धेरा हो जाता है।

कविवर रहीम ने भी कहा है—

**रहिमन वित्त अधर्म को जरत न लागे बार।**
**चोरी की होरी रची भई तनिक में छार॥**

हम धन प्राप्त करें परन्तु अपने पुरुषार्थ से, अपना पसीना बहाकर। गाढ़े पसीने के द्वारा कमाया हुआ धन ही चिरस्थायी होता है, इसीलिए वेद में भक्त की प्रार्थना है—

**अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे।**
**यशसं वीरवत्तमम्॥** —ऋ० १।१।३

प्रभु की कृपा से हम प्रतिदिन पुष्टिकारक, कीर्तिदायक और अत्यन्त प्राणप्रद धनैश्वर्य को प्राप्त करें।

CamScanner से स्कैन किया गया

लोग भूल जाते हैं कि लक्ष्मी विष्णु की चेरी है, दासी और पत्नी है। विष्णु को त्यागकर लक्ष्मी कहीं नहीं जा सकती। विष्णु की स्तुति, पूजा और आराधना करो, लक्ष्मी स्वयमेव आ जाएगी। पहले पुरुषार्थ करो फिर प्रभु से याचना करो—

**भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्याभर।**
**भूरिघेदिन्द्र दित्ससि॥** —ऋ० ४।३२।२०

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! तू बहुत देनेवाला है। हमें भी बहुत धन दे। थोड़ा मत दे, बहुत अधिक प्रदान कर। सचमुच तू हमें बहुत देना चाहता है। परन्तु प्रभो! ऐसा धन दे—

**यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु।**
**तन्नः पुनान आ भर॥** —ऋ० ९।१९।१

हे ऐश्वर्यशालिन्! जो अद्भुत, संग्रह करने के योग्य, स्तुत्य, कामना करने योग्य पृथिवी सम्बन्धी धन है उसे तू पवित्र करता हुआ हमें प्राप्त करा जिससे कि "**वयं स्याम पतयो रयीणाम्**" हम धनैश्वर्यों के स्वामी हो जाएँ।

CamScanner से स्कैन किया गया

# तृतीय धाम में विचरण

**स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।**
**यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥**

—यजु० अ० ३२। मं० १०

(सः) वह परमात्मा (नः) हमारा (बन्धुः) बन्धु, मित्र और (जनिता) सकल जगत् का उत्पादक तथा पालक पिता है। (सः) वही (विधाता) कर्मफल-प्रदाता है। (विश्वा) सम्पूर्ण (भुवनानि) लोकों को तथा (धामानि) उनके नाम, स्थान और जन्मों को (वेद) जानता है। (यत्र) उसी परमात्मा में (अमृतम्) मोक्ष को (आनशानाः) प्राप्त होकर (देवाः) मुक्तजीव (तृतीये, धामन्) संसार के सुख-दुःख से रहित, नित्यानन्दयुक्त मोक्ष में (अध्यैर-यन्त) स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं।

## स नः बन्धुः

परमात्मा हमारा बन्धु है। वही हमारा सच्चा सहायक और मित्र है। जब मनुष्य पर संकट आता है तो सांसारिक साथी, रिश्तेदार, भाई, बन्धु, पुत्र और कलत्र=स्त्री सब छोड़कर चल देते हैं। और तो और—

**एक दिन ऐसा होयगा कोऊ काऊ का नाहीं।**
**घर की नारी का कहैं तन की नारी नाहीं ॥**

मृत्यु के समय घर की स्त्री की तो बात ही क्या शरीर की नाड़ी भी साथ छोड़कर चल देती है।

CamScanner से स्कैन किया गया

ऐसे ही भाव को प्रकट करते हुए एक उर्दू के कवि ने कहा है—

**कौन होता है बुरे वक़्त की हालत का शरीक़।**
**मरते दम देखा है कि आँख भी फिर जाती है॥**

परन्तु जब सब छोड़कर चल देते हैं, सब मुख मोड़ लेते हैं, सब दूर हट जाते हैं तब भी वह प्रभु सदा साथ रहता है। श्री आनन्दस्वामीजी गये कैलाश की यात्रा पर। वहाँ से लौटते हुए मार्ग में टाँग टूट गई। एक पालकी किराये पर लेकर उसमें बैठकर चले। रात्रि के समय मज़दूर लोग एक स्थान पर ठहर गये। जब उन्होंने सुना कि निकट ही बर्फ का पर्वत टूट गया है तो रात्रि में स्वामीजी को अकेला छोड़कर चल दिये। स्वामीजी तीन दिन तक अकेले जंगल में पड़े रहे। जब पानी और बिस्कुट समाप्त हो गये तो ठीक उस समय जब स्वामीजी को सहायता की आवश्यकता थी, कुछ मज़दूर उधर आये और स्वामीजी को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया। साथी छोड़ गये, मज़दूर चले गये, उस समय उनका बन्धु प्रभु ही था।

प्रभु हम से इतना बँधा हुआ है कि चाहे हम उसे भूल जाएं परन्तु वह हमें नहीं भूलता। जब माता और पिता भूल जाते हैं, प्रभु तब भी हमारी सहायता कर रहा होता है। अन्य बन्धु तो हम से बाहर होते हैं परन्तु वह तो ठहरा हमारा अद्भुत बन्धु। वह तो सदा हमारे हृदय में बैठा हुआ हमारी रक्षा करता है। हमें सदा उत्तम शिक्षाएँ और प्रेरणायें देता रहता है। जब अज्ञानतावश हम कुमार्ग पर चलने लगते हैं तब वह हमें सुपथ एवं सुमार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। जब हम कोई बुरा कर्म करते हैं तो वह हमें सावधान करता है, कुमार्ग पर चलने से रोकता है। जब हम उत्तम कर्म करते हैं तो हमें उत्साहित करता है, सुप्रेरणा देता है। इस विषय में महर्षि दयानन्द ने लिखा है—

CamScanner से स्कैन किया गया

"जब ग्रात्मा मन ग्रौर मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता वा चोरी ग्रादि बुरी वा परोपकार ग्रादि ग्रच्छी बात के करने का जिस क्षण में ग्रारम्भ करता है, उस समय जीव की इच्छा, ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाता है। उसी क्षण में ग्रात्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका ग्रौर लज्जा तथा ग्रच्छे कामों के करने में ग्रभय, निःशङ्कता ग्रौर ग्रानन्दोत्साह उठता है वह जीवात्मा की ग्रोर से नहीं किन्तु परमात्मा की ग्रोर से है।"

**—सत्यार्थप्रकाश, सप्तम समुल्लास**

बन्धु शब्द में एक ग्रौर भी रहस्य है। प्रकृति के ग्रंश से बने हुए शरीर के भीतर ईश्वर जीव को बाँधता है, ग्रतः वह बन्धु है। संसार में भी बन्धु शब्द का प्रयोग हम उन्हीं व्यक्तियों के लिए करते हैं जो हमें ग्रपने स्नेह-सूत्र में बाँधते हैं।

## जनिता

वह ईश्वर सकल जगदुत्पादक ग्रौर सब का पिता है। वैसे तो जीवात्मा भी ग्रनादि काल से विद्यमान है परन्तु ग्रात्मा के साथ भिन्न-भिन्न शरीरों का संयोग करने के कारण ईश्वर **'जनिता'** उत्पन्न करनेवाला पिता है। प्रभु हमारा पिता है ग्रौर हम उसके पुत्र हैं। पिता तो ऐश्वर्यों का स्वामी हो ग्रौर पुत्र दीन, हीन, कङ्गाल एवं भिखारी हो, यह ग्रच्छा नहीं लगता। इसीलिए तो पूर्व मन्त्र में जीव ने धनैश्वर्यों का स्वामी बनने की प्रार्थना की थी। ग्रौर धन भी कितना चाहिए—

**यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय।**

—ऋ० ८।३२।१८

हे ऐश्वर्यशालिन्! ग्राप के पास जितना धन है मैं भी उतना ही धन प्राप्त करूँ।

CamScanner से स्कैन किया गया

वस्तुतः ईश्वर सब को देता है, सब की खबर लेता है। उसके द्वार से कोई निराश और हताश नहीं लौटता। आस्तिकों की तो बात ही क्या वह तो नास्तिकों को भी देता है।

एक सद् गृहस्थी थे। उनका यह नियम था कि प्रतिदिन किसी अतिथि को भोजन खिलाकर फिर स्वयं भोजन किया करते थे। अथर्ववेद ६।६।३८ में कहा है "अशितावत्यतिथावश्नीयाद्।" अतिथि को खिलाकर भोजन करना चाहिए। वे गृहस्थी इसी नियम का पालन करते थे।

परन्तु एक दिन उन्हें कोई अतिथि नहीं मिला। बहुत खोजने और परिश्रम करने के पश्चात् सायंकाल उन्हें एक अतिथि मिला। गृहस्थी बड़ी श्रद्धा के साथ उन्हें घर लाये। हाथ-मुंह धुलाकर भोजन परोस दिया। अतिथि ने भोजन करना आरम्भ कर दिया। गृहस्थी ने देखा कि अतिथि ने ईश्वर का नाम भी नहीं लिया और भोज़न करना शुरू कर दिया। गृहस्थी ने पूछा, "महाराज! आप भोजन तो करने लगे परन्तु आपने न तो ईश्वर का नाम लिया और न उसका भोजन के लिए धन्यवाद दिया।" अतिथि ने कहा, "मैं तो ईश्वर को मानता ही नहीं।" गृहस्थी ने यह सुना तो भोजन उसके सामने से हटा लिया और उसे धक्के देकर घर से बाहर निकाल दिया।

रात्रि में गृहस्थी को एक विचित्र स्वप्न दिखाई दिया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो प्रभु उस से कह रहे हों कि जिस व्यक्ति को तूने आज अपने घर से बिना भोजन खिलाये धक्के मारकर निकाल दिया था मैं साठ वर्ष से इसे भोजन खिला रहा हूँ परन्तु तू उसे एक दिन भी भोजन न खिला सका।

ऐसा अद्‌भुत पालक है वह पिता। वह नास्तिकों को भी अपने राज्य से नहीं निकालता। वह तो सब के लिए सुख-साधन जुटाता है। इसीलिए तो कहा है—

CamScanner से स्कैन किया गया

पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो,
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥

—गीता० ११।४३

ईश्वर इस चराचर जगत् का पिता है, गुरु से भी बढ़कर गुरु और पूजनीय है। हे अतिशय विभूतिवाले! तीनों लोकों में तेरे समान कोई दूसरा नहीं है, फिर तुझसे बढ़कर कैसे हो सकता है।

बृहत्स्तोत्ररत्नाकर के शब्दों में—

**त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।**
**त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥**

तू ही हमारी माता है और तू ही हमारा पिता, तू ही हमारा बन्धु है और तू ही सच्चा सखा। तू ही हमारी विद्या है और तू ही हमारा धन। हे देवाधिदेव! तू ही हमारा सब कुछ है।

तू न केवल हमारी माता और पिता ही है अपितु, सुख, शान्ति, आनन्द, विद्या और ज्ञान का सागर भी है, अतः भक्त तुझसे ही प्रार्थना करते हैं—

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ ।
अधा ते सुम्नमीमहे ॥ —ऋ० ८।९८।११

हे सब को बसानेवाले! अपरिमित ज्ञान और कर्मवाले! तू ही हमारा पिता है और तू ही हमारी माता है। तू आनन्द का सागर है, अतः हम तुझसे सुख और शान्ति की याचना करते हैं।

## स विधाता

परमात्मा कर्मफल-विधाता है। वह किसी के अपराधों को क्षमा नहीं करता और न किसीके साथ पक्षपात करता है। प्रभु

CamScanner से स्कैन किया गया

के राज्य में पक्षपात नहीं होता। प्रभु के शासन में कर्म का सिद्धान्त बड़ा अटल है, जो जैसा करता है उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है। वेद में कहा है—

न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति॥

—अथर्व० १२।३।४८

कर्मफल में कोई त्रुटि नहीं हो सकती, कर्मफल में किसी की सिफारिश भी नहीं चल सकती, और न मित्रों का पल्ला पकड़कर ही बचा जा सकता है। हमारे इस कर्मफल के पात्र में घटा-बढ़ी नहीं हो सकती। पकानेवाले को पकाया हुआ पदार्थ पुनः आ मिलता है।

जो जैसा करता है वह वैसा ही भरता है। इस विषय की एक घटना यहाँ दी जाती है—

कुछ व्यक्ति एक नौका में बैठकर नदी पार कर रहे थे। पीछे एक और नौका आ रही थी जिसमें दो भाई बैठे हुए थे। अकस्मात् नौका भँवर में पड़कर उलट गई और दोनों भाई नदी में डूबने लगे। आगे जानेवाली नौका में बैठे एक बूढ़े ने नाविक से कहा, "इन दोनों को बचा ले, प्रत्येक के बदले में तुझे पचास रुपये दूंगा। नाविक नदी में कूद पड़ा और एक को निकाल लाया परन्तु दूसरा डूब गया। उस बूढ़े ने कहा, "इसका जीवन शेष था इसलिए तूने इसके बचाने में जल्दी की और उसके बचाने में देर की। नाविक हँसा और कहा, "जो कुछ आपने कहा वह भी ठीक है परन्तु एक कारण और भी है।" वृद्ध ने पूछा, "वह क्या ?" नाविक ने कहा, "मेरी हार्दिक इच्छा इसे बचाने की थी, क्योंकि एक बार उजाड़ जंगल में मैं बीमार हो गया था। तब इसने मेरे ऊपर दया करके मुझे अपने ऊँट पर बैठाया था, इसलिए यह मुझे प्यारा था, परन्तु दूसरे ने बचपन में मुझे कोड़ा

CamScanner से स्कैन किया गया

मारा था, अतः उससे मुझे उतना प्रेम नहीं था, इसलिए उसके बचाने में मैंने देरी की।

एक चोर चोरी करता है परन्तु जेल में नहीं जाना चाहता। ठीक इसी प्रकार जीव भी कर्म करके स्वेच्छा से उसका फल नहीं भोगना चाहता। प्रभु जीव के सुधार के लिए, उसके आत्मकल्याण के लिए उसे दण्ड देता है।

एक रेञ्जियर एक दिन अपने नौकर के साथ घूमने जा रहे थे। उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति भागता हुआ आ रहा है। उसके शरीर पर छुरों के घाव बने हुए थे और उनसे रक्त निकल रहा था। रेञ्जियर ने अपने नौकर को उसकी सहायता के लिए भेजा। नौकर ने उसे पकड़ा तो उसने नौकर की कमर में अपनी भुजाएं डाल दीं। यह कार्य कुछ इस ढंग से हुआ कि वे दोनों भूमि पर गिर पड़े। भूमि पर गिरते ही घायल व्यक्ति के प्राण-पखेरू उड़ गये। नौकर ने अपने को छुड़ाने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु वह उसके भुजपाश से निकल न सका। थोड़ी देर में दो पुलिस के सिपाही उधर आ निकले और नौकर को हत्यारा समझकर उसे पकड़ लिया। रेञ्जियर ने उन्हें बहुत कहा कि यह मेरा नौकर है, यह हत्यारा नहीं है अपितु निर्दोष है परन्तु सिपाहियों ने एक न सुनी और मामला कचहरी में दे दिया। रेञ्जियर जज महोदय से मिले और उन्हें सारी घटना सुनाकर कहा, "यह व्यक्ति निर्दोष है इसे छोड़ दीजिए।" मजिस्ट्रेट ने कहा, "मिसल से तो ऐसा ही प्रतीत होता है कि यह निर्दोष है और आपके कहने से मैं इसे छोड़ भी दूंगा परन्तु इसकी आँखें यह बता रही हैं कि इसने किसी मनुष्य की हत्या की अवश्य है।"

मजिस्ट्रेट ने नौकर को छोड़ दिया। रेञ्जियर ने यह जानने के लिए कि वास्तव में इसने हत्या की है या नहीं, नौकर के साथ घनिष्ठता बढ़ानी आरम्भ की। कुछ समय पश्चात् रेञ्जियर ने

CamScanner से स्कैन किया गया

नौकर को अपने साथ दावत दी और बातों-ही-बातों में पूछा कि क्या तुमने कभी किसी की हत्या की थी। नौकर ने कहा, "एक बार मैंने अपने एक पड़ोसी की हत्या करके उसे नदी में फेंक दिया था। इस बात को कोई नहीं जानता और अब तो यह घटना बहुत पुरानी हो गई है।"

रेञ्जियर महोदय ने ऐसे नौकर को अपने यहाँ रखना उचित नहीं समझा। परन्तु नौकर को कोई सन्देह न हो इसलिए कुछ समय पश्चात् उसका हिसाब देकर रेञ्जियर ने उसे नौकरी से पृथक् कर दिया।

बहुत कुछ सोच-विचार के पश्चात् नौकर ने तांगा चलाना आरम्भ किया। एक दिन एक व्यक्ति आया। तांगा किराया करके अपना सन्दूक उसमें रख दिया और कहा, "मैं अभी आता हूँ।" कई घण्टे हो गये परन्तु वह नहीं लौटा। पुलिस एक हत्या के सम्बन्ध में छान-बीन कर रही थी। उन्होंने तांगेवाले को पकड़ लिया। सन्दूक खोलकर देखा तो उसमें एक लाश रक्खी हुई थी। नौकर पर जो अब तांगेवाला था मुकदमा चला और इसको पुनः उसी जज के समक्ष प्रस्तुत किया गया। मजिस्ट्रेट ने रेञ्जियर को एक पत्र लिखा कि आपका नौकर फिर एक हत्या के अपराध में पकड़ा गया है। मैं जानता हूँ कि इस बार भी वह निर्दोष है परन्तु समझ में नहीं आता कि वह कौनसी शक्ति है जो उसे दण्ड दिलाने के लिए बार-बार मेरे पास भेज रही है। रेञ्जियर ने उत्तर दिया कि आपका यह अनुमान कि इस व्यक्ति ने किसी की हत्या की है बिल्कुल ठीक था। इसने कभी अपने पड़ोसी को मारकर पानी में बहा दिया था, उसी हत्या का दण्ड दिलाने के

CamScanner से स्कैन किया गया

लिए ईश्वर इसे बार-बार आपके पास भेज रहा है।'

मनुष्य लौकिक जजों की आँखों में धूल झोंक सकता है, रिश्वत आदि देकर उनसे बच सकता है परन्तु प्रभु की न्याय-व्यवस्था से कोई बच नहीं सकता, क्योंकि वह सबका विधाता और कर्मफल-प्रदाता है।

ईश्वर हमें कर्मों का फल देता है परन्तु है तो वह हमारा बन्धु और पिता, अतः वह दण्ड भी हमें सन्मार्ग पर लाने के लिए ही देता है। उसके दण्ड में भी प्यार और सुधार की भावना होती है। जैसे एक डाक्टर रोगी को ठीक करने की भावना से उसका आप्रेशन करता है उसी प्रकार प्रभु भी सुधार की भावना से उसे विभिन्न योनियों में भेजता है। यह ठीक है कि वह हमारा बन्धु और पिता है परन्तु लौकिक पिता की भाँति वह पक्षपात नहीं करता। हम तो सभी प्रभु के अमृत पुत्र हैं। यदि वह पक्ष-पात करे तो फिर किसी को दण्ड ही न मिले और सारी न्याय-व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाए।

यदि मनुष्य ईश्वर को सचमुच अपना बन्धु, पिता और विधाता समझ ले तो उसे दुःख और क्लेश नहीं हो सकता फिर तो वह निर्भय और निश्शंक हो जाता है। कैसे ? इसे एक दृष्टान्त से समझिए।

एक समय की बात है एक जहाज़ समुद्र में जा रहा था कि भयंकर तूफ़ान आने लगा और यान के डूबने का भय उत्पन्न हो गया। जितने व्यक्ति उस यान में बैठे थे सभी रोने और चिल्लाने लगे। परन्तु एक व्यक्ति जो ईश्वर को प्यार करता था, उस पर विश्वास रखता था, उसे सच्चा बन्धु और पिता मानता था वह

---

१. यह कथा नहीं है, कोई मन घड़न्त दृष्टान्त भी नहीं है। यह एक सत्य घटना है जो १९२३ में उर्दू के दैनिक 'तेज' में छपी थी। मास और दिन मुझे स्मरण नहीं है।

CamScanner से स्कैन किया गया

बिल्कुल निर्भय था, और उसी प्रकार प्रफुल्लित था जैसा तूफान आने से पूर्व। उसका पुत्र जो यान के डूबने और अपने मरने से बहुत डर रहा था, घबराकर और बहुत दुःखी होकर रोता और चिल्लाता था। पिता ने उसे बहुत समझाया परन्तु उसका रोना और चिल्लाना बन्द नहीं हुआ। तब पिता ने उसे फ़र्श पर गिरा दिया और म्यान से तलवार निकालकर तथा अत्यन्त क्रुद्ध होकर उसकी गर्दन पर रख दी और कहा कि यदि तुमने रोना और चिल्लाना बन्द न किया तो तुम्हारी गर्दन अभी धड़ से पृथक् कर दी जाएगी। पिता के इस कार्य से पुत्र का ध्यान तूफान की ओर से हट गया और उसका भय भी जाता रहा तथा वह खिलखिला कर हँसने लगा। पिता ने और भी क्रुद्ध होकर कहा, "मैं अभी तुम्हारी गर्दन तुम्हारे धड़ से अलग करता हूँ।" परन्तु पुत्र को फिर भी कोई भय नहीं हुआ, वह और अधिक खिलखिला कर हँसने लगा, तब पिता ने पूछा, "क्या तुझे नंगी तलवार से भी भय नहीं लगता?" पुत्र ने उत्तर दिया कि मुझे डर इसलिए नहीं लगता कि मैं जानता हूँ कि यह तलवार मेरे पिता के हाथ में है, अतः मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह तलवार मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी।" तब पिता ने कहा, "इसी प्रकार मुझे भी पूर्ण विश्वास है कि तूफान और मृत्यु मेरे पिता के हाथ में हैं जो मुझसे प्रेम करता है और मेरा दृढ़ निश्चय और अटल विश्वास है कि तूफान और मृत्यु से मुझे कोई हानि नहीं पहुँच सकती।"

सुख और शान्ति के अभिलाषियो! आप भी उस प्रभु को अपना सच्चा सखा, बन्धु, पिता, आचार्य और न्यायाधीश मान लो फिर कैसा दुःख और कैसा शोक! फिर तो आपके हृदय से एक आवाज निकलेगी—

राजी हैं हम उसी में जिस में तेरी रजा है।<br>
यहाँ यूँ भी वाह-वाह है और यूँ भी वाह-वाह है॥

CamScanner से स्कैन किया गया

## धामानि वेद भुवनानि विश्वा

विधाता ग्रौर जगदुत्पादक होने के साथ-साथ परमात्मा प्रत्येक लोक ग्रौर लोकान्तर को तथा उनके नाम, स्थान ग्रौर जन्मों को भी जानता है। यह सृष्टि कैसे उत्पन्न हुई ? सूर्य का निर्माण कैसे हुग्रा ? चन्द्रमा की रचना किन तत्त्वों से हुई ? चन्द्रमा में काला धब्बा क्यों है ? इत्यादि बातों को हम जीव नहीं जानते क्योंकि—

**को ग्रद्धा वेद क इह प्रवोचत् कुत ग्राजाता कुत इयं विसृष्टिः।**
**ग्रर्वाग् देवा ग्रस्य विसर्जनेनाऽथा को वेद यत् ग्राबभूव॥**

—ऋ० १०।१२९।६

कौन ठीक-ठीक जानता है, कौन ठीक-ठीक बता सकता है कि यह विविध प्रकार की सृष्टि किस उपादान कारण ग्रौर किस निमित्त कारण से उत्पन्न हुई है। बड़े-बड़े विद्वान् भी इस सृष्टि के निर्माण के पश्चात् उत्पन्न हुए हैं, इसलिए कौन जानता है कि किस प्रकार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तथा लोक-लोकान्तरों का निर्माण हुग्रा।

'कः' का ग्रर्थ प्रजापति भी होता है। यह ग्रर्थ लेने पर मन्त्र से यह भाव निकलेगा कि यह जगत् किस प्रकार उत्पन्न हुग्रा, इसको ठीक-ठीक तो परमात्मा ही जानता है ग्रौर वही इसके निर्माण ग्रादि का उपदेश कर सकता है।

## यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त

परमात्मा सारे लोकों को जानता है ग्रतः भक्त भी नित्यानन्द-युक्त उस तृतीय धाम में पहुँचना चाहता है। जहाँ विद्वान् लोग ग्रमृत का उपभोग करते हुए स्वच्छन्दतापूर्वक विचरते हैं।

प्रश्न उपस्थित होता है यह तृतीय धाम क्या है ? लीजिए सुनिए—

CamScanner से स्कैन किया गया

जीवात्मा की सबसे निकृष्ट स्थिति वह होती है जब वह प्रकृति में रम रहा होता है, जब वह प्राकृतिक भोगों में ही आनन्द मानता है। भोगों को भोगने के अतिरिक्त उसे और किसी वस्तु की सुध-बुध नहीं होती। वह पशुओं की भाँति 'काम' में फँसा होता है, यह उसकी तामस स्थिति है।

दूसरी स्थिति में वह कुछ जाग्रत् होता है और तामस स्थिति से राजस स्थिति में पहुँचता है। अब वह अपनी कीर्ति का इच्छुक होता है। वह चाहता है कि लोक में उसका यश हो, कीर्ति हो, लोग उसे मानें और उसका आदर-सत्कार करें। प्रकृति से ऊपर उठकर वह जीवों में खेलता है परन्तु उनसे ऊपर नहीं उठ पाता, यह उसकी राजस स्थिति है।

तीसरी अवस्था में वह सात्त्विक स्थिति में पहुँचता है। अब उसका लक्ष्य काम और अर्थ न रहकर धर्म हो जाता है। उसकी प्रत्येक क्रिया पवित्र हो जाती है। संसार को साध्य न समझकर वह उसे साधन समझता है और उसमें फँसता नहीं। वह जल से कमल की भाँति अलिप्त रहता है। अब वह प्रकृति और जीव-लोक से ऊपर उठकर आत्मलोक में पहुँच जाता है। यही उसका तीसरा धाम है।

## अथवा.

सत् प्रकृति प्रथम धाम है। जीवात्मा का यह सबसे निचला निवास-स्थान है। सत्-चित् जीवात्मा स्वयं द्वितीय धाम है, यह उसका मध्यम निवास-स्थान है। सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा तृतीय धाम है। यह सर्वोत्कृष्ट एवं अन्तिम प्राप्ति-स्थान है।

## अथवा

पशु आदि योनियों में अथवा मनुष्य-योनि में ही जब जीव को घोरतम कष्ट प्राप्त होता है तो यह उसका दुःखमय जीवन है।

CamScanner से स्कैन किया गया

इसी का नाम नरक भी है। यह प्रथम धाम है।

जब जीवात्मा को सांसारिक वैभव और ऐश्वर्य के कारण महान् सुख प्राप्त होता है वह उसका सुखमय जीवन है। सुख की अधिकता के कारण उसे स्वर्ग भी कहते हैं। यह द्वितीय धाम है।

जीवात्मा की सांसारिक सुख-दुःख से रहित एक तीसरी स्थिति वह है जिसमें वह प्रभु के आनन्द में विचरण करता है। इसी का नाम आनन्दमय सृष्टि या मोक्षधाम है। यही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। मानव-देह पाकर इसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्न और पुरुषार्थ करना चाहिए।

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई
सम्पर्क: 9029421718
पीडीएफ निर्माता - आचार्य धर्मवीर

CamScanner से स्कैन किया गया

: ८ :

# प्रभो ! सुपथ पर चला

**अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।**
**युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्ति विधेम॥**

—यजु० अ० ४० । मन्त्र १६

(अग्ने) हे सबको आगे ले जानेवाले ज्ञानस्वरूप परमात्मन्! आप कृपा करके (अस्मान्) हम लोगों को (राये) सांसारिक ऐश्वर्य और मोक्ष-प्राप्ति के लिए (सुपथा) उत्तम, धर्मयुक्त आप्त विद्वानों के मार्ग से (नय) चलाइए। (देव) हे सकल सुखदाता परमेश्वर! आप हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (वयुनानि) आचार और विचारों को (विद्वान्) जानते हैं, अतः (अस्मत्) हम से (जुहुराणम्) कुटिलतायुक्त (एनः) पाप को (युयोधि) दूर कीजिए। आपकी इस अपार कृपा और महान् दया के लिए हम (ते) तुझे (भूयिष्ठाम्) बहुत अधिक (नमः उक्तिम्) नम्र स्तुति (विधेम) समर्पित करते हैं।

## अग्ने

जीवन का पथ अत्यन्त भयंकर, कण्टकाकीर्ण और ऊबड़-खाबड़ है। यहाँ पद-पद पर ठोकरें लगती हैं और मनुष्य गिर पड़ता है। मार्ग में दोराहे और चौराहों को देखकर पथभ्रष्ट हो जाता है। प्रभो! आप अग्नि हैं। मनुष्य को अवनति के गड्ढे में गिरने से बचाकर उसे सुमार्ग पर आगे-ही-आगे, उन्नति की ओर ले जाने वाले हैं। काम, क्रोध, लोभादि के वशीभूत हुए मनुष्यों का मार्ग-प्रदर्शन आप ही कर सकते हैं। जो स्वयं दीन और

दुःखी है, जो स्वयं निर्बल और असहाय है, वह दूसरों की रक्षा कैसे कर सकता है ? जो स्वयं अज्ञानी है वह दूसरों को ज्ञानवान् कैसे बना सकता है ? जो स्वयं अन्धकार में भटक रहा है वह दूसरों को सुपथ पर कैसे चला सकता है ? प्रभो ! आप प्रकाशस्वरूप हैं, ज्ञान के अगाध सागर हैं, अतः आप ही हमारे मार्गदर्शक बनें ।

यह संसार एक गहन, गम्भीर एवं विशाल महासागर है। इस संसार में ईर्ष्या, द्वेषरूपी मछलियाँ हैं । काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार रूपी बड़े-बड़े मगर हैं । इसमें ऊँची-ऊँची तरंगें उठती हैं । ज्वार-भाटे भी आते हैं । इस विस्तृत सागर को देख कर मनुष्य का हृदय काँप उठता है । उसके सामने एक समस्या उपस्थित हो जाती है कि मैं इस अगाध समुद्र को किस प्रकार पार करूँ ।

कथं तरेयं भवसिन्धुमेतं
का वा गतिर्मे कतमोऽस्त्युपायः ।
जाने न किञ्चित्कृपयाव मां भोः
संसारदुःखक्षतिमातनुष्व ।।

—विवेकचूडामणि, ४२

मैं इस संसार-सागर को किस प्रकार पार करूँ ? मेरी क्या गति होगी ? इस समुद्र को पार करने का उपाय क्या है ? यह मैं कुछ नहीं जानता ! प्रभो ! कृपया मेरी रक्षा कीजिए और मेरे संसार के क्षय (नाश) का उपाय कीजिए ।

वेद-आदि शास्त्रों में मानव देह की उपमा रथ से दी गई है। अवलोकन कीजिए—

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु ।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ।।

—कठ० ३।३

CamScanner से स्कैन किया गया

बालक नचिकेता को उपदेश देते हुए यमाचार्य कहते हैं, "यह शरीर एक रथ के समान है। आत्मा इस रथ का स्वामी है। बुद्धि इस रथ का सारथि है और मन लगामों के समान है।"

जैसे एक अनाड़ी सारथि रथ को कुमार्ग पर ले जाता है, ठीक इसी प्रकार विषयों में फँसी हुई बुद्धि भी इस शरीर रूपी रथ को कुमार्ग में ले जाती है। प्रभो ! आप इस रथ के सारथि बनें और इसे ठीक मार्ग पर चलाएँ, क्योंकि सच्चे पथप्रदर्शक और प्राणियों को ठीक मार्ग दिखानेवाले आप ही हैं, जैसा कि गीता में भी कहा है—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥

—गीता० १८।६१

आप सब शरीरों में विद्यमान हैं और उन्हें यन्त्रवत् घुमा रहे हैं, अतः मेरे ऊपर भी कृपा कीजिए और मुझे भी ठीक मार्ग पर चलाइए।

वयमु त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये।
धिये पूषन्नयुज्महि ॥ —ऋ० ६।५३।१

हे मार्गाधिपते ! मार्गदर्शक ! पूषन् ! हम ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए, मेधा की वृद्धि के लिए, वेग से ले जाने के लिए आपको अपना मार्गदर्शक नियुक्त करते हैं।

## अस्मान् राये सुपथा नय

मानव इस संसार में क्यों आता है ? उसके जीवन का लक्ष्य क्या है ? मानव-जीवन का उद्देश्य है धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति। इहलौकिक जीवन के सर्वाङ्गीण विकास के लिए धन की महती आवश्यकता है और विशेषकर गृहस्थियों के लिए। इसीलिए तो वेद में अनेक स्थानों पर धन की प्रार्थना की गई।

CamScanner से स्कैन किया गया

जैसाकि एक पूर्व मन्त्र में कहा गया था—

**वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।**

(हे प्रभो ! हम धनैश्वर्यों के स्वामी हों) और—

**अथो अन्नस्य कीलालऽउपहूतो गृहेषु नः ।**

—यजु० ३।४३

हमारे घरों में अन्न के ढेर लगे हुए हों ।

महर्षि मनु ने तो गृहस्थियों को स्वर्ण और चाँदी के बर्तनों में भोजन करने का आदेश दिया है जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि उनके पास पर्याप्त मात्रा में धन-धान्य होना चाहिए ।

धन की उपयोगिता का वर्णन करते हुए संस्कृत-साहित्य के किसी कवि ने तो कमाल ही कर दिया है—

**दुन्दुभिस्तु सुतरामचेतनस्तन्मुखादपि धनं धनं धनम् ।**
**इत्थमेव निनदः प्रवर्तते किं पुनर्यदि जनः सचेतनः ।।**

—सुभाषितरत्नभाण्डागारम्

बजाये जाने पर निर्जीव तबले के मुख से भी 'धनं, धनं' शब्द सुनाई देता है, फिर चेतन मनुष्य का तो कहना ही क्या है ।

पारलौकिक उन्नति के लिए भक्त अब मोक्ष-धाम में जाना चाहता है । उसकी तो अब एक ही प्रार्थना और याचना है—

**यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।**
**कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र मामभृतं कृधीन्द्रायेन्दो परिस्रव ।।**

—ऋ० ९।११३।११

जिस लोक में समस्त प्रकार की ऋद्धियाँ और हर्ष हैं, जहाँ हर्षदायक सम्पदाएँ और आह्लादकारक ऐश्वर्य विराजते हैं, जहाँ जीव की सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं, हे प्रभो ! तू मुझे वहाँ अमर बना दे । हे दयालो ! तू द्रवित होकर आनन्दघन बरसा दे ।

हम ऐश्वर्य तो प्राप्त करें परन्तु अन्याय, दम्भ, पापाचार, ढोंग और पाखण्ड से नहीं, अपितु सत्य-पथ पर, न्याय-मार्ग पर

CamScanner से स्कैन किया गया

चलते हुए, सुमार्ग और धर्म पर चलते हुए ही ऐश्वर्य प्राप्त करें। हम धन कमाएँ परन्तु धर्मयुक्त मार्ग से। हम मोक्ष की ओर अग्रसर हों, परन्तु वहाँ भी धर्म को अपना सहायक बनाकर। हम मार्ग में भटकने लग जाएँ, बहक जाएँ, भूल जाएँ तो भगवन् इतनी कृपा अवश्य करना—

जहाँ भूलें बता जिस जा बहक जाएँ हिदायत कर।
जो हो लग़ज़िश[1] तो हम को थाम ले तू मेहरबाँ[2] होकर॥

एक बात मन्त्र में विशेष ध्यान देने की है। वैदिक प्रार्थनाएँ सामूहिक प्रार्थनाएँ हैं। वे सब के लिए की जाती हैं, अकेले के लिए नहीं। यहाँ भी धनैश्वर्य और मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करता हुआ भक्त कहता है कि हम सबको ऐश्वर्य और मोक्ष की प्राप्ति हो। हम सबको सुपथ से चला। कितनी भव्य भावना है! कैसी उत्कृष्ट प्रार्थना है!

## विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्

जब कोई व्यक्ति उच्च ज्ञान प्राप्त करना चाहता है तो शिक्षक के समक्ष जाकर उसे अपनी पूर्ण योग्यता बतानी पड़ती है। एक बार नारद मुनि महर्षि सनत्कुमार के पास गये और उनसे प्रार्थना की कि मुझे ब्रह्मविद्या पढ़ाइए। सनत्कुमार बोले, "पहले यह बताओ कि तुमने क्या-क्या अध्ययन किया है? उसके आगे मैं तुम्हें पढ़ाऊँगा।" नारदजी बोले—

**ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि, यजुर्वेदं, सामवेदमथर्वणं चतुर्थम्, इतिहासपुराणं पञ्चमं, वेदानां वेदं, पित्र्यं, राशिं, दैवं, निधिं, वाकोवाक्यमेकायनं, देवविद्यां, ब्रह्मविद्यां, भूतविद्यां, क्षत्रविद्यां, नक्षत्रविद्यां, सर्पदेवजनविद्यामेतद्भगवोऽध्येमि।**

—छान्दोग्य० ७।१।२

---

१. लड़खड़ाहट, २. कृपालु।

CamScanner से स्कैन किया गया

भगवन् ! मैंने ऋग्वेद का अध्ययन किया है, यजुर्वेद, सामवेद और चौथे अथर्ववेद को भी पढ़ा है। इतिहास और ब्राह्मणग्रन्थों का भी मैंने स्वाध्याय किया है। व्याकरण, पितृकर्म, गणितशास्त्र, भाग्य-विज्ञान, निधि-विज्ञान, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, देव-विज्ञान, भक्ति-शास्त्र, पञ्चभूत सम्बन्धी विद्या, धनुर्वेद, ज्योतिषशास्त्र, सर्प-विद्या और गन्धर्व-विद्या (नृत्यसंगीत) इतनी विद्याओं का मैंने अध्ययन किया है।

नारद की योग्यता जानकर सनत्कुमारजी ने उन्हें उपदेश दिया।

प्रभो ! यदि आप भी मेरी योग्यता जानकर, मेरी त्रुटियों, दोषों, बुराइयों, कुकर्मों और सुकर्मों को जानकर मेरा मार्ग-प्रदर्शन करेंगे, मेरे रथ के सारथि बनेंगे तो देव ! प्रकाशस्वरूप परमात्मन् ! मैं तो अपनी त्रुटियों और बुराइयों को पूरी तरह जानता भी नहीं और फिर कहा भी उसके समक्ष जाता है जो जानता न हो। आप तो सब के कर्मों को जानते हैं। आपसे तो हमारी कोई भी चेष्टा और गति छिपी हुई नहीं है।

**यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम्।**
**द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा वेद वरुणस्तृतीयः ॥**

—अथर्व० ४।१६।२

जो खड़ा है, जो चलता है, जो धोखा देता है, जो कुटिल चाल चलता है, जो छिपकर चलता है—षड्यन्त्र रचता है, जो दूसरों में भय का संचार करता है, जो दो व्यक्ति एक स्थान पर बैठकर गुप्त मन्त्रणा करते हैं, सर्वप्रकाशक, सर्वश्रेष्ठ, सर्वान्तर्यामी प्रभु उनमें तीसरा होकर उसको जानता है। आगे कहा है—

**सर्वं तद् राजा वरुणो विचष्टे यदन्तरा रोदसी यत् परस्तात्।**
**संख्याता अस्य निमिषतो जनानामक्षानिव श्वघ्नी निमिनोति तानि ॥**

—अथर्व० ४।१।५

CamScanner से स्कैन किया गया

जो कुछ इन दोनों लोकों के मध्य में है और जो कुछ इससे परे है, उस सब को वह राजा वरुण जानता है। उसने तो मनुष्यों के पलकों की झपक तक को गिन रक्खा है। जिस प्रकार ज्वारी अपने पाशों को नाप-तोलकर रखता है उसी प्रकार परमात्मा भी सब लोकों को नाप-तोलकर रखता है।

मनुष्य पाप तब करता है जब वह एकान्त स्थान देखता है, अथवा जब वह समझता है कि यहाँ मुझे कोई नहीं देख रहा है। यदि मनुष्य ईश्वर की सर्वव्यापकता को समझ ले तो फिर वह पाप नहीं कर सकता।

अधिकांश व्यक्ति आस्तिक हैं, ईश्वरवादी हैं फिर भी पाप होते हैं, क्यों? इसलिए कि लोगों ने ईश्वर को एक स्थान पर सीमित कर रक्खा है। कोई ईश्वर को कैलास पर मानता है तो कोई कहता है कि वह क्षीरसागर में शयन करते हैं। ऐसा मानने-वालों पर कटाक्ष करते हुए संस्कृत-साहित्य के किसी कवि ने बहुत सुन्दर कहा है—

**कमले कमला शेते हरः शेते हिमालये।**
**क्षीराब्धौ च हरिः शेते मन्ये मत्कुणशङ्कया॥**

—सुभाषितरत्नभाण्डागारम्

लक्ष्मी कमल के भीतर छिपकर सोती है, महादेव ठण्डे हिमालय पर सोते हैं और विष्णु क्षीरसागर में शयन करते हैं, क्यों? केवल खटमल और मच्छरों के डर से।

जो लोग ईश्वर को चौथे और सातवें आसमान पर मानते हैं वे भी भारी भ्रम में हैं। इस अशुद्ध एवं दूषित कल्पना से भी पाप को प्रोत्साहन मिलता है। कैसे? सुनिए—

एक दिन किसी पादरी को एक डाकू मिल गया। डाकू ने कड़क कर कहा, "जो कुछ है यहाँ रख दे।" पादरी ने उसे उपदेश देना आरम्भ किया और कहा, "ईश्वर से डर!" डाकू ने पूछा,

CamScanner से स्कैन किया गया

"ईश्वर कहाँ रहता है ?" पादरी ने कहा, "चौथे आसमान पर।" डाकू ने कहा, "वहाँ से आने में तो उसे काफ़ी समय लगेगा, इतनी देर में तो मैं भाग जाऊँगा।" यह कहकर उसने पादरी का सारा धन छीन लिया और भाग गया।

यदि ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को समझकर उसे सर्वद्रष्टा, सर्वव्यापक और सर्वनियन्ता स्वीकार कर लिया जाए तो मनुष्य पापों से बच सकता है। प्रभु हमारे जीवन की एक-एक घटना को जानता है। गत मोक्ष से लेकर अब तक कौन-सा व्यक्ति कितनी योनियों में गया है, उसने कितनी माताओं का स्तन-पान किया है, वह कितनों का पिता बना है, कितनों का पुत्र बना है तथा कितनों का भाई रहा है, वह कहाँ-कहाँ भटका है, उसने क्या-क्या पाप और पुण्य किये हैं, कितने शुभ और अशुभ कर्म किये हैं, उसे कितने कर्मों का दण्ड मिल चुका है और कितनों का दण्ड भोगना अभी शेष है। उसकी कितनी वासनाएँ, तृष्णाएँ और एषणाएँ दूर हो गई हैं और कितनी अभी शेष हैं। प्रभो! बस हमें तो एक बात का निश्चय है कि अभी हमारे दुष्कर्म, पापवासनाएँ और असद्भावनाएँ शेष हैं, इसीलिए हम आपसे दूर हैं, अतः हम आपसे एक प्रार्थना करते हैं—

**युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः**

प्रभो ! हमसे कुटिलतायुक्त पाप को दूर कर दीजिए। यह पाप ही आपके दर्शन में बाधक है। इसीलिए इसे परे हटाइए—

उड़ें टेढ़ी बाँकी ये चालाकियाँ सब।
रहे ढाल तलवार इक आपकी अब॥

—स्वामी रामतीर्थ

मन्त्र के इस भाग में '**एनः**' पाप का एक विशेषण दिया हुआ है '**जुहुराणम्**' अर्थात् कुटिल। वस्तुतः पाप बड़ा कुटिल होता है, अतः पाप का यह विशेषण अत्यन्त उपयुक्त है। यह कुटिलता-

CamScanner से स्कैन किया गया

युक्त पाप मनुष्य को किस प्रकार तंग करता है, किस प्रकार उसे गिराता है, सुनिए—

एक विद्यार्थी अपने अध्ययन के लिए एक प्रोग्राम बनाता है कि कल से मैं दो घण्टे प्रतिदिन पढ़ा करूँगा। रात्रि के समय वह पढ़ने बैठता है। मृदुल मन्द-समीर के सुहावने झोंके चलते हैं और वह युवक यह सोचकर निद्रादेवी की गोद में चला जाता है कि अभी तो परीक्षा के बहुत दिन पड़े हैं, मैं कल से अध्ययन आरम्भ करूँगा, परन्तु वह कल जीवन में आते नहीं पाती।

एक युवक ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए जिह्वा-संयम का व्रत लेता है। वह कुछ समय के लिए मिठाई न खाने का व्रत लेता है। आँख और कान के संयम के लिए एक वर्ष तक सिनेमा न देखने की प्रतिज्ञा लेता है परन्तु यह कुटिल पाप उसे अशुभ की ओर प्रवृत्त कर देता है। वह नाना प्रकार की कल्पनाएँ करके फिर उन बुराइयों में फँस जाता है।

यह पाप कभी-कभी तो मनुष्य को इस प्रकार दबाता है कि वह जानते-बूझते हुए पाप कर बैठता है। ऐसी किंवदंती है कि जब श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को समझाया कि तुम युद्ध मत करो, बिना युद्ध के ही परस्पर फैसला कर लो, तब दुर्योधन ने कहा—

**जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः**
**जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।**
**केनापि देवेन हृदिस्थितेन**
**यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि॥**

मैं धर्म को जानता हूँ परन्तु उसमें मेरी प्रवृत्ति नहीं है। मैं अधर्म और उससे प्राप्त होनेवाले फल को भी जानता हूँ परन्तु उससे मैं अपने आप को रोक नहीं सकता। मेरे हृदय में कोई ऐसा संस्कार बैठा हुआ है जो मुझे जिधर ले जाना चाहता है ले जाता है और मैं भी मन्त्रमुग्ध उसी के अनुसार आचरण करता हूँ।

देव ! यह कुटिल पाप मेरा भयंकर शत्रु है। आपकी

CamScanner से स्कैन किया गया

सहायता और मार्ग-प्रदर्शन के बिना मैं इस पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता, अतः आप इस कुटिलतायुक्त पाप को मुझसे पृथक् कर दीजिए।

## भूयिष्ठान्ते नमः उक्तिं विधेम

हे देव! इस कामना की पूर्ति के लिए हम तुझे बारम्बार विनम्र स्तुति समर्पित करते हैं। भगवन्! संसार के सारे पदार्थ तो आपके ही प्रदान किये हैं। अतः मैं आपको भेंट तो कुछ भी कर ही नहीं सकता। वेद के शब्दों में मेरी स्थिति तो यह है—

न हि मे अस्त्यघ्न्या न स्वधितिर्वनन्वति।
अथैतादृग्भरामि ते ॥ —ऋ० ८।१०२।१९

हे प्रभो! न तो मेरे पास गौ है और न लकड़ी काटने के लिए कुल्हाड़ी है, अतः मैं तो अग्निहोत्र भी नहीं कर सकता। मैं तो ऐसे ही, रिक्तहस्त ही तुझे धारण करता हूँ। मैं तो अपने आप को तेरे अर्पण करता हूँ। कवियित्री सुभद्रा कुमारी के शब्दों में—

पूजा और पुजापा प्रभुवर इसी पुजारिन को समझो।
दान-दक्षिणा और निछावर इसी भिखारिन को समझो ॥
मैं उन्मत्त प्रेम की प्यासी, हृदय दिखाने आई हूँ।
जो कुछ है बस यही पास है, इसे चढ़ाने आई हूँ ॥
चरणों पर अर्पित है इसको चाहे तो स्वीकार करो।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है ठुकरा दो या प्यार करो ॥

मैं तो आपकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना करता रहूँगा और आपके गुणों को अपने जीवन में धारण करते हुए अपने जीवन को उच्च और पवित्र बनाता रहूँगा।

नमस्कार का अर्थ 'हरे राम हरे राम' अथवा 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण' चिल्लाते हुए चौबीस और छत्तीस घण्टे का अखण्ड कीर्तन करना और ईश्वर के नाम का बिना समझे-बूझे घोटे लगाना नहीं है। जो लोग दूसरों के दिखावे के लिए कीर्तन करते हैं और ईश्वर का नाम रटते हैं उनके लिए श्रीकृष्णजी ने कहा है—

CamScanner से स्कैन किया गया

**कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।**
**इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥**—गीता ३।६

जो मूढबुद्धि पुरुष कर्मेन्द्रियों को हठ से रोक कर, इन्द्रियों के विषयों का मन से चिन्तन करता है, वह मिथ्याचारी अर्थात् दम्भी है ।

जो लोग अपने जीवन को सुधारते नहीं, ईश्वर के गुणों को अपने जीवन में धारते नहीं उनको डाँटते हुए श्री लोकमान्य तिलकजी ने ठीक ही कहा है—

**अपहाय निजं कर्म कृष्ण कृष्णेति वादिनः ।**
**ते हरेर्द्वेषिणः पापा धर्मार्थं जन्म यद्धरेः ॥**

जो लोग अपने कर्तव्य-कर्म का परित्याग कर केवल कृष्ण-कृष्ण की रट लगाते हैं वे पापी और हरि के द्वेषी हैं, क्योंकि श्रीकृष्ण का जन्म तो धर्म संस्थापन के लिए हुआ था, अकर्मण्यता फैलाने के लिए नहीं ।

राम नाम की रट लगानेवालों को उपदेश देते हुए स्वामी विवेकानन्दजी ने भी ठीक ही कहा है—

Repeat not the name of Rama, act as Rama.

अर्थात् राम-राम मत रटो वरन् राम की भाँति सुन्दर और महान् कर्म करो ।

ईसा महोदय ने भी लगभग ऐसी ही बात कही है—

Every one that says 'Lord Lord' shall not enter into heaven but he that doth my Lord's will.

अर्थात् प्रत्येक वह व्यक्ति जो 'प्रभु-प्रभु' की रट लगाता है, स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकेगा, स्वर्ग में केवल वही जाएगा जो मेरे प्रभु की आज्ञा का पालन करता है ।

भक्त तो नमस्कार के वास्तविक रहस्य को समझकर प्रभु के न्याय, दया एवं पवित्रता आदि गुणों को अपने जीवन में धारण करते हुए, अपने जीवन को पवित्र बनाते हुए प्रभु के समक्ष नतमस्तक होता है ।

CamScanner से स्कैन किया गया